।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

MANTRA BRAMHANAM

OF THE SAMAVEDA

WITH A COMMENTARY AND
BENGALI TRANSLATION BY
SATYA BRATA SAMASRAMI.

सामवेदस्य मन्त्रब्राह्मणम् ।

भाष्यसहितम् ।

बङ्गानुवादयुतञ्च ।

वि, ए, उपाधिधारिणा
श्रीजीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य्येण
प्रकाशितम् ।

Calcutta.

PRINTED AT THE DWEIPAYANA PRESS.

1873.

To be had from Pandit Jibananda Vidyasagara B. A. Sanskrit College of Calcutat.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण्डितकुलतिलक-पूज्यपाद श्रीमत् तर्कवाचस्पति पाद-प्रणीत-प्रकाशित-पुस्तकान्येतानि

१	आशुबोध व्याकरणम् ...	३।
२	धातुरूपादर्शः ...	२
३	शब्दस्तोम-महानिधि [संस्कृत अभिधान]	१०
४	सिद्धान्तकौमुदी—सरलाटीकासहिता	११
५	सिद्धान्तबिन्दुसार [वेदान्त] ...	॥
६	तुलादानादिपद्धति [वङ्गाक्षरैः] ...	४
७	गयाश्राद्धादिपद्धति ...	१
८	शब्दार्थरत्न ...	॥।
९	वाक्यमञ्जरी [वङ्गाक्षरैः] ...	।
१०	छन्दोमञ्जरी तथा वृत्तरत्नाकर—सटीक	॥=
११	वेणीसंहार नाटक—सटीक ...	१
१२	मुद्राराक्षस नाटक—सटीक ...	१॥
१३	रत्नावली ...	॥।
१४	मालविकाग्निमित्र—सटीक ...	१॥
१५	धनञ्जय विजय—सटीक	।
१६	महावीरचरित ...	१॥
१७	साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी—सटीक ...	२
१८	वैयाकरणभूषणसार ...	॥।
१९	लीलावती ...	॥।
२०	वीजगणित ...	१
२१	शिशुपालवध—सटीक ...	६
२२	किरातार्जुनीय—सटीक ...	२॥
२३	कुमारसम्भव—पूर्वखण्ड सटीक ...	१
२४	कुमारसम्भव—उत्तरखण्ड ...	॥
२५	अष्टकम् पाणिनीयम् ...	॥।
२६	वाचस्पत्यम् [संस्कृत-बृहदभिधान] ...	६०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्त्र-ब्राह्मणम्।

॥ अथ प्रथमः प्रपाठकः॥

तत्र

प्रथम-खण्डः।

ओं। देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु ॥१॥ काम वेद ते नाम मदो नामासि समानया

हे 'देव' द्योतमान! 'सवितः'! जगत्-प्रसवितः! त्वम् 'यज्ञं' इदं कर्म्म 'प्रसुव' अनुजानीहि; 'भगाय' कर्म्म-फल-भाजनाय 'यज्ञपतिं' यजमानं माम् 'प्रसुव' अनुजानीहि, अनुष्ठित-कर्म्म-फल-भाजं मां कुरुतेति यावत्। किञ्च, 'दिव्यः'

হে দ্যোতমান জগৎপ্রসবিতা দেবতা! তুমি এই কর্ম্ম অবগত হও এবং এই কর্ম্মের ফলভাগী করণার্থ আমাকে

---

१ — परमेष्ठि-प्रजापतिर्ऋषिः *। यजुः। सविता देवता।

* यावन्न भवति ऋष्यन्तरस्योपन्यासः, तावदेष एव ऋषिर्ज्ञेयः सर्व्वत्र। विनियोगस्तु वृत्तिकारवचनान्मार्गादवगन्तव्यः।

आ.श्री. कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा
ना. क.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

মুং সুরা তে অভবত্। পরমত্র জন্মাগ্নে তপসো নিৰ্মি তোসি স্বাহা ॥২॥ ইমন্ত উপস্থং মধুনা সং সৃজামি

দ্যুলোকস্থঃ 'গন্ধর্ব্বঃ' গাং পৃথিবীং ধারয়তি যঃ সঃ 'কেতপূঃ' কেতং চিত্তং প্রজ্ঞানং তত্ পুনাতি সঃ 'নঃ' অস্মাকম্ 'কেতং' চিত্তম্ 'পুনাতু' নির্ম্মলীকরোতু। কিঞ্চ, 'বাচস্পতিঃ' বাচামধিপতিঃ 'নঃ' অস্মাকম্ 'বাচঃ' গিরঃ 'স্বদতু' আস্বাদয়তু ॥ ১ ॥

হে 'কাম'! 'তে' তব 'নাম' 'বেদ' জানাতি সর্ব্বং জগদিতি শেষঃ; কিম্পুনস্তদিত্যাহ—'মদঃ' মদকরঃ 'নাম' প্রসিদ্ধঃ 'অসি' ভবসি; 'তে' ত্বদর্থা ত্বদুৎপত্ত্যর্থা ইয়ং কন্যা 'সুরা'

কর্ম্ম-কর্ত্তা বলিয়া অবগত হও। চিত্ত-পবিত্র-কারী পৃথিবীর ধারয়িতা দেবতা, আমাদিগের চিত্তক্ষেত্র পবিত্র করুন। বাক্যের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা, আমাদিগের বাক্যকে সুমধুর করুন ॥১

হে কাম দেবতা! তোমার নাম সকলই বিদিত আছে, তুমি মাদক বলিয়া প্রসিদ্ধ; তোমার উৎপত্তির আকর —সুরা-স্বরূপা এই কন্যাকে আত্ম-নিয়োগার্থ প্রাপ্ত হও (অর্থাৎ এই কন্যাতে আবির্ভূত হও)। হে কামাগ্নে! এই স্ত্রীজাতিতেই তোমার শ্রদ্ধেয় জন্ম, তুমি পুরুষার্থ-সিদ্ধির জন্যই সৃষ্ট হইয়াছ ॥২॥

২ – প্রস্তারপঙ্ক্তিশ্ছন্দঃ। কামো দেবতা।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रजापते र्मुखमेतद् द्वितीयं तेन पुंसोभिभवासि सर्वा-नवशान्वशिन्यसि राज्ञी स्वाहा ॥३॥ अग्निं क्रव्याद-मकृण्वन्गुहानाः स्त्रीणामुपस्थमृषयः पुराणाः । तेना-

सुराभूता 'अभवत्' 'अमुं' कन्यकां 'समानय' स्वात्मानं प्रापय, इहोत्पद्यतामिति भावः। हे 'अग्ने' कामाग्ने! 'अत्र' स्त्री-जातिष्वेव तत्र 'परं जन्म' उत्कृष्टा जनिः, त्वं 'तपसः' पुरुषार्थस्य सिद्धार्थं निर्म्मितः सृष्टः 'असि' भवसि। 'स्वाहा'-एष शब्दः प्रसिद्धार्थः ॥ २ ॥

हे 'कन्यके'! 'इम'' 'ते' तव 'उपस्थ'' आनन्देन्द्रियं 'मधुना' 'संसृजामि' संयोजयामि ; 'एतत्' 'प्रजापतेः' 'द्वितीयम्'' अपरं 'मुखम्' ; 'तेन' उपस्थ-प्रभावेण 'सर्व्वान्' 'अवशान् अपि' 'पुंसः' 'अभिभवासि' वशीकरोषि, 'वशिनी' कान्ति-मती 'राज्ञी' च स्वामिनी सर्व्वकामानाम् 'असि' भवसि ॥३॥

হে কন্যে! এই ত্বদীয় আনন্দেন্দ্রিয় মধু-যিক্ত করি, ইহা প্রজাপতির একটি মুখ (অর্থাৎ প্রজোৎপত্তির দ্বার) ; এই ইন্দ্রিয়-প্রভাবেই অ-বশ পুরুষ সকলকেও বশীভূত করিয়া থাক এবং কান্তিমতী স্বরূপে সর্ব্বকামের অধিপতি হইয়াছ ॥ ৩

१ – मध्ये ज्योतिर्जगतीच्छन्दः। उपस्थरूपः कामी देवता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यमक्रण्वँ स्त्रैष्टङ्गं त्वाष्ट्रं त्वयि तद्दधातु स्वाहा ॥४॥
या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत याश्च देव्यो अन्तान
भितो ततन्थ । तास्त्वा देव्यो जरसा संव्ययन्त्वायुष्मती

'गुह्यानाः' तत्त्वदर्शिनः 'पुराणाः' पुरातनाः 'ऋषयः' 'स्त्रीणां' स्त्री-जातीनाम् 'उपस्थं' 'क्रव्यादम्' मांस-भक्षकम् 'अग्निम्' इति 'अकृण्वन्' स्वीकृतवन्तः । किञ्च, 'तेन' संयुतं 'त्रैष्टङ्गं' त्रिष्टङ्गं पुरुषशिश्नं तेन निर्हृतं 'त्वाष्ट्रं' त्वष्टा विश्वकर्मा जगत्स्रष्टा तद्दैवताकं शुक्रम् 'आज्यम्' इति 'अकृण्वन्' निर्णयं कृतवन्तः । हे कन्ये! 'तत्' शुक्रं 'त्वयि' 'दधातु' स्थापयतु कामो देवता पतिर्वेति शेषः ॥ ४ ॥

'याः' 'देव्यः' पणिन्यः व्यवसायिन्य'स्त्रिय' इदं परिधेयं वस्त्रं 'अकृन्तन्' कर्त्तितवत्यः एतद्वस्त्र-निर्माणार्थं सूत्रं निर्मितवत्य इत्यर्थः, 'याः' 'अवयन्', उतवत्यः तन्तुसन्तानं कृतवत्यः,

তত্ত্বদর্শী, পুরাতন, ঋষিগণ স্ত্রীজাতির আনন্দেন্দ্রিয়কে মাংস-ভক্ষক অগ্নি বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন এবং বিশ্বকর্ম্মা (সর্ব্ব-স্রষ্টা) দেবতার ইচ্ছায় তৎসংযোগে পুরুষেন্দ্রিয় হইতে প্রাদুর্ভূত শুক্রকে হোমীয় ঘৃত বলিয়া নির্ণয় করিয়াছেন। হে কন্যে! তোমাতে তাহা স্থাপিত হউক ॥ ৪ ॥

४ – उपरिष्टाज्ज्योतिरियं त्रिष्टुप् । उपस्थरूपः कामी देवता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दं परिधत्स्व वासः ॥५॥ परि धत्तधत्त वाससैनाᳪ शता-युषीᳪ कृणुत दीर्घमायुः। शतं च जीव शरदः सुवर्चीव सूनि चार्यै विभजासि जीवन् ॥६॥ सोमो ददद्गन्धर्वाय

'याः' 'अतन्वत' तनु विस्तारे विस्तारितवत्यः, 'याः च' अन्तान् पट-सन्तान् 'अभितः' उभयपार्श्वयोः 'अततन्थ' ग्रथितवत्यः, 'ताः देव्यः' हे कन्ये ! 'त्वां' 'जरसा' जरान्तं यावत् 'संव्ययन्तु' परिधापयन्तु। हे 'आयुष्मति !' दीर्घायुषि ! 'इदम्' प्रकृतं 'वासः' वसनम् 'परिधत्स्व' परिधानं कुरु ॥५॥

हे परिधापयितारः ! ऋत्विजादयः ! 'शतायुषीम्' शतवर्षजीविनीम् 'एनां' कन्यकाम् 'वाससा' वस्त्रेण 'परि' सर्वतः 'धत्त धत्त' धारयतैव वेष्टनं कुरुतैव; किञ्च एतदीयम् 'आयुः'

যে দেবীরা এই বসনের সূত্র সকল প্রস্তুত করিয়াছেন, যে দেবীরা ইহা বয়ন করিয়াছেন, যে দেবীরা ইহাকে এই আকারে বিস্তৃত করিয়াছেন, এবং যে দেবীরা ইহার উভয় পার্শ্বের ছিলা সকল গ্রথন করিয়াছেন হে কন্যে ! সেই দেবীরা তোমাকে জরাবস্থা পর্য্যন্ত সোৎসাহে বস্ত্র পরিধান করাইতে থাকুন ; হে আয়ুষ্মতি ! এই বস্ত্র পরিধান কর ॥৫

হে বস্ত্র-পরিধাপয়িতৃগণ ! তোমরা শতবর্ষজীবিনী এই কন্যাকে বসনে পরিবেষ্টিত কর এবং আশীর্ব্বাদন দ্বারা ইহার

५ – जगतीच्छन्दः । वस्त्रकारादेवता । वस्त्रपरिधापने विनियोगः ।

६ — त्रिष्टुप्छन्दः । परिधापयितारो देवताः । उत्तरीय परिधापने विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गन्धर्वो ददद्ग्नये। रयिञ्च पुत्रां श्चादा दग्निर्मह्य मथो इमाम् ॥७॥ प्र वो पति या नः पन्थाः कल्पता८

दीर्घं 'कृणुत' कुरुत। एवम् परिधापयितारोऽभिधाय अधुना तामेव साक्षादाशास्ते—हे 'आर्ये!' आर्यदेशोद्भवे! माननीये! वा, 'सुवर्चाः' तेजस्विनी सती 'शरदःशतं' शत-शरद्दतु-परिमितं कालं 'जीव' 'च' अपिच 'जीवन्' जीवन्ती सती 'वसूनि' ऐश्वर्याणि 'विभृजासि' भजस्व ॥६॥

'इमा' कन्यां 'सोमः' सूयतइति सोमः स्रष्टृदेवता 'गन्धर्वाय' गां धारयति यः तस्मै पालकाय 'ददत्' अदात् समर्पयत; सच 'गन्धर्वः' अग्नये ददत् अग्निसमीपमधुना समर्पयत्; 'अग्नि साक्षिरूपेण स्थितः 'मह्यं' परिणेत्रे 'अदात्;' 'अथो' अनन्तरं 'रयिं' धनं 'पुत्रान् च' अदादित्याशास्महे ॥७॥

পরমায়ু পরিবর্দ্ধিত কর। হে আর্য্যদেশোদ্ভবে! কন্যে! তুমি তেজস্বিনী হইয়া শত শরৎ (অর্থাৎ শতবর্ষ) জীবিত থাক এবং জীবিত থাকিয়া ঐশ্বর্য্যসকল ভোগ কর ॥৬

স্রষ্টা এই কন্যাকে পাতার হস্তে সমর্পণ করেন, পাতা এই অগ্নির নিকটে উপনীত করিয়াছেন, অগ্নি সাক্ষীরূপে উপস্থিত থাকিয়া ইহা আমাকে প্রদান করিলেন, ভরসা করি ধন পুত্রাদিও এই সমভিব্যারেই প্রদত্ত হইল ॥৭

७ – अनुष्टुप्छन्दः। सोमादयो देवता:।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिवा अरिष्टा पतिलोकं गमेयम् ॥८॥ अग्निरेतु प्रथमो देवताभ्यः सो स्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्यु-पाशात्। तदयं राजा वरुणोनु मन्यतां यथेयं स्त्री पौत्र मघन्नरोदात् स्वाहा ॥९॥ इमा मग्नि

'नः' अस्माकम् 'पतिः' पाता देवः 'मे' मदर्थं 'पन्थाः' पन्थानम् 'प्र कल्पताम्' प्र करोतु; 'या' येन पथा, कीदृशेन ? 'शिवा' शिवेन कल्याणमयेन 'अरिष्टा' अरिष्टेन विघ्नशून्येन 'पतिलोकम्' पतिकूलं 'गमेयम्' गच्छेयम् अहमिति शेषः ॥८॥

'देवताभ्यः' देवतानां 'प्रथमः' मुख्यः 'अग्निः' 'एतु' आगच्छतु आगत्य च 'सः' 'अस्यै' अस्याः भाविनीं 'प्रजां' सन्तति-ततिं 'मृत्युपाशात्' अकाल-मरण-भयात् 'मुञ्चतु'; 'अयं' 'राजा' राजमानः वरुणः 'तत्' तथा अनुम न्यतां, यथा" 'इयं स्त्री' 'पौत्रम्' पुत्रसम्बन्धि 'अघम्' पाप-मूलकं शोकं प्राप्य 'न रोदात्' रोदनं न कुर्य्यात्; नैव प्राप्नुयादिति यावत् ॥९॥

অমাদিগের পাতা, আমাদের জন্য সেই পথ কল্পিত করুন যে কল্যাণময় বিঘ্নশূন্য পথে পতি-কূল-কার্য্য-নির্ব্বাহ করিতে পারি ॥৮

দেব-শ্রেষ্ঠ অগ্নি আগমন করুন; তিনি এই কন্যার ভবিষ্যৎ সন্ততিগুলিকে মৃত্যুভয় হইতে মুক্ত করুন; এই রাজমান রজনি দেবতা সেইরূপ অনুমতি করুন যাহাতে এই স্ত্রী পাপমূলক পুত্রশোক প্রাপ্ত হইয়া ক্রন্দন না করেন্ ॥৯

८—त्रिपाद् जगतीच्छन्दः। पतिर्देवता। पदप्रवर्त्तने विनियोगः।

९—अतिजगतीच्छन्दः। अग्निर्देवता। आजाहोमे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

स्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै जरदष्टिं कृणोतु। अशू-न्योपस्था जीवता मस्तु माता पौत्र मानन्दमभिविबुध्यता मियꣳ स्वाहा॥१०॥द्यौस्ते पृष्ठꣳ रक्षतु वायुरूरू अश्विनौ च। स्तनन्धयस्ते पुत्रांत् सविताभि रक्षत्वा

'गार्हपत्यः' 'अग्निः' 'इमा' कन्यां 'त्रायता' पालयतु 'अस्यै' एतदर्थम् 'जरदष्टि' जरान्वितां दीर्घायुषीम् प्रजां सन्तति-ततिं 'कृणोतु' विदधातु, किञ्च 'इयम्' 'जीवता' जीवत्पुत्राणां माता 'सती' 'अशून्योपस्था' अशून्यागारा अविधवा 'अस्तु' अपिच 'पौत्रम्' आनन्दं सुपुत्रसम्बन्धिन मानन्दं 'विबुध्यताम्' विशेषेण जानीयात् ॥१०॥

हे 'कन्ये ! 'ते' तव 'पृष्ठ' पृष्ठदेशं 'द्यौः' द्यु-लोको 'रक्षतु'; 'ऊरू' ऊरुदेशौ 'वायुः' 'च' अपिच 'अश्विनौ' दिवा-रात्री रक्षतु ; 'ते' तव 'स्तनन्धयः' स्तनन्धयान् 'पुत्रान् हृदय-रूपान् 'सविता' 'अभिरक्षतु' ; 'आ वाससः परिधानात्'

গার্হপত্য, এই কন্যাকে সতত রক্ষা করুন, ইহার জন্য ভাবি-জরাক্রান্ত (অর্থাৎ দীর্ঘজীবী) প্রজা বিধান করুন ; এই কন্যা জীবিত পুত্রগণের মাতা হইয়া পতির সহিত বাস করুন এবং সৎপুত্রজনিত আনন্দ উপভোগ করুন ॥১০

হে কন্যে ! দ্যুলোক তোমার পৃষ্ঠদেশ রক্ষা করুন, বায়ু এবং দিবস রজনি উরুদ্বয় রক্ষা করুন, তোমার স্তন্য-পায়ী

१० – अतिजगतीच्छन्दः । अग्निर्देवता । आज्यहोमे विनियोगः ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाससः परिधानाद् वृहस्पति र्विश्वेदेवा अभिरक्षन्तु पश्चात् स्वाहा॥११॥ मा ते गृहेषु निशि घोष उत्था दन्य च त्वद्रुदत्यः संविशन्तु॥ मात्वꣳ रुदत्युर आवधिष्ठा जीवपत्नी पतिलोके विराज पश्यन्ती प्रजाꣳ सुमनस्यमानाꣳ स्वाहा॥१२॥ अप्रजस्त्वं पौत्रमर्त्यं पाप्मान

वास-परिधानं यावत् प्रच्छन्नदेशं 'वृहस्पतिः' अभिरक्षतु; 'पश्चात्' ततोऽधस्तनस्थानानि पादाग्रादीनि, उर्द्धभागउपरितनस्थानानि ग्रीवादीनि च 'विश्वेदेवाः' 'अभिरक्षन्तु' ॥११॥

हे 'कन्ये! 'ते' तव 'गृहेषु' 'निशि' रात्रौ 'घोषः' आर्त्तशब्दः 'मा उत्थात्' न उत्तिष्ठतु; किन्तु 'त्वत्' त्वत्तः 'अन्यत्र' शत्रुगृहादौ 'रुदत्यः' स्त्रियः 'प्रविशन्तु,' 'त्वं' 'रुदत्' रुदती

হৃদয় স্বরূপ পুত্রদিগকে সবিতা রক্ষা করুন, পরিধেয় বস্ত্রে যাবৎ আবৃত থাকে তৎসমস্ত অঙ্গ বৃহস্পতি রক্ষা করুন, এতদ্ব্যতিরিক্ত (পাদাগ্রপ্রভৃতি ও গ্রীবা-প্রভৃতি) বিশ্বেদেবা দেবতারা রক্ষা করুন।১১

হে কন্যে! তোমার গৃহে কদাপি নিশাভাগে আর্ত্তনাদ উত্থিত না হউক! তোমার শত্রু-গৃহাদিতে স্ত্রীগণ ক্রন্দন করিতে করিতে প্রবিষ্ট হউক! রোদন করিতে করিতে অন্তঃ-

११—शक्करीच्छन्दः। विश्वेदेवा देवताः। आज्यहोमे विनियोगः।

१२—अतिजगतीच्छन्दः। अग्न्यादयो देवताः। आज्यहोमे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुत वा अघम्॥ शीर्ष्णः स्रजमिवोन्मुच्य द्विष-द्भ्यः प्रति मुञ्चामि पाशं स्वाहा ॥१३॥परैतु मृत्युर-मृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु॥ परं मृत्यो

सती 'पुरः' अन्तःपुरे 'मा' 'आवधिष्ठाः' न कदाचिदपि परि-जनान् घातयेः ; किन्तु 'जीवपत्नी' जीवत्पतिका सती 'सुमन-स्यमानां' हृष्टचित्ता 'प्रजां' 'पश्यन्ती' वीक्षमाणा 'पतिलोके' पतिगृहे 'विराज' शोभस्व ॥१२॥

हे कन्ये ! 'अप्रजस्यम्' वन्ध्यात्वं 'पौत्रमर्त्यम्' पुत्र-सम्बन्धि-मरणं 'पाशम्' मृत्योः पाशरूपम् 'पाप्मानम्' 'उत वा' अन्यदपि 'अघम्' अरिष्टं त्वयि यद् स्थितं तत् सर्वं 'शीर्ष्णः' मस्तकात् 'स्रजम् इव' मालामिव त्वत्तः 'उन्मुच्य' अवतार्य्य द्विष-द्भ्यः द्वेष्टृभ्यः 'प्रति मुञ्चामि' प्रतिक्षिपामि ॥१३॥

পুর বাসী-দিগকে তোমায় পীড়িত করিতে না হয় ! স-ধবা থাকিয়া হৃষ্টচিত্তে পুত্রাদি লইয়া আমোদ প্রমোদ করত পতি-গৃহে সুখে বাস কর ॥১২

হে কন্যে ! বন্ধ্যাত্ব, পুত্র-শোক প্রভৃতি মৃত্যুর পাশ স্বরূপ যে সকল পাপ ও অরিষ্ট তোমাতে আছে, তৎসমস্তই তোমার মস্তক মইতে মালা-উন্মোচনের ন্যায় উন্মুক্ত করিয়া শত্রুবর্গের প্রতি নিঃক্ষিপ্ত করিতেছি ॥১৩

१३ – उपरिष्टाद्बृहतीच्छन्दः । अग्न्यादयो देवताः । आज्यहोमे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनु परेहि पन्थां यत्र नो अन्य इतरो देवयानात्॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषोमोत वीरान् स्वाहा ॥१४॥

'मृत्युः' 'परैतु' पराङ्मुखो गच्छतु 'मे' मम 'अमृतम्' अमरणम् 'आगात्' आगच्छतु नाहं म्रिये! इति भावः, 'वैवस्वतः' 'नः' 'अस्माकम् 'अभयं' 'कृणोतु' करोतु । 'मृत्यो!' 'यत्र' 'नः' अस्माकम् 'अन्यः' सदृशम् मर्त्यभूमि-कृत-वासः जीवः अस्ति—यः 'देवयानात्' देवमार्गात् 'अन्यः', तम् 'परं' परलोकीयं 'पन्थां' पन्थानम् 'अनु' संलक्ष्य 'परेहि' पराङ्मुखो गच्छ । 'चक्षुष्मते' पश्यतः 'शृण्वते' दर्शतः 'ते' तव सन्निधौ 'ब्रवीमि' प्रार्थयामि—'नः' अस्माकं 'प्रजां' परिवारं' 'उत' अपिच (विशेषेण) 'वीरान्' पुत्रान् 'मा' रीरिषः' मा हिंसीः ॥१४॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य

प्रथमः खण्डः ॥१॥

—०—

মৃত্যু পরাঙ্মুখ হইয়া গমন করুন, অমর ভাব আমার নিকটে আসিয়া উপস্থিত হউক. বৈবস্বত আমাদিগের অভয় বিধান করুন। হে মৃত্যো! যে স্থলে আমাদিগের ন্যায় মর্ত্ত্য জীব সকল আছে—যাহা দেবগণের গমনীয় নহে, সেই (প্রেতলোকের) পথ লক্ষ্য করত পরাঙ্মুখ হইয়া গমন কর। উৎকৃষ্ট দর্শনবান্—উৎকৃষ্ট শ্রুতিমান্ তোমার নিকটে প্রার্থনা করি—আমার পরিবার বর্গকে বিশেষত পুত্রদিগকে নষ্ট করিও না ॥১৪

१४—मन्त्र,त्रिष्टुप्छन्दः । वैवस्वतो देवता । आज्यहोमे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वितीय-खण्डः—

इम मश्मान मारोह्मा श्मेव त्वꣳ स्थिरा भव ॥ द्विष न्त मप वाधस्व मा च त्वं द्विषता मधः ॥१॥ इयं नार्यु-पब्रूते ग्नौ लाजानावपन्ती । दीर्घायु रस्तु मे पतिः

हे कन्ये ! 'इमम्' प्रत्यक्षम् 'अश्मानम्' शिलाखण्डम् 'आरोह्याः' आक्रम। तथाच 'त्वम्''अश्मा इव'पाषाणइव 'स्थिरा' अचला 'भव' ; अस्मिन्नेव पति-कुले जीवनं यापयेत्यर्थः । किञ्च कन्ये ! 'द्विषन्तम्' शत्रुकुलम् 'अपवाधस्व' पीड़य, 'च' 'अपिच' 'त्वं' 'द्विषतां' तेषाम् 'अधः' अधस्तात् अवरभावेन 'मा' अभूः ; त्वदीयागमनेनात्र कुले मङ्गलं—शत्रु-कुले अमङ्गलञ्च भवत्विति त्याशयः ॥ १ ॥

'इयं नारी' 'लाजान्' भ्रष्टव्रीहीन् 'आवपन्ती' प्रक्षिपन्ती सती 'उप' अस्मत्-समीपे 'ब्रूते' कथयति ; किमित्याह—'मे' मम 'पतिः', 'दीर्घायुः' दीर्घजीवी 'अस्तु' 'शतं वर्षाणि जीवतु' इति ; किञ्च 'मम' ज्ञातयः 'एधन्ताम्' परिवर्द्धन्ताम् ॥ २ ॥

কন্যে ! এই শিলাখণ্ডে আরোহণ কর, তুমি এই প্রস্তরবৎ দৃঢ় রূপে অবিচলভাবে পতি-গৃহে বাস কর। কন্যে ! শত্রু-কুল নষ্ট কর এবং শত্রুদিগের নিকটে কখন অপদস্থ হইও না। অর্থাৎ তোমার আগমনে রিপুগণ নিস্তেজ হউক ॥১

এই নারী লাজাগুলি বিক্ষিপ্ত করত ক্রমে আমাদের নিকটস্থ হইয়া বলিতেছেন—যে, "আমার পতি দীর্ঘজীবী

१ – अनुष्टुव् छन्दः । अश्मा देवता । अश्माक्रमणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शतं वर्षाणि जीवन्त्वे धन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥२॥ अर्यमणं नु देवं कन्या अग्नि मयक्षत ॥ स इमान्देवो अर्य्यमा प्रेतो मुञ्चातु मा मुत स्वाहा ॥३॥ पूषणं नु देवं कन्या अग्नि मयक्षत ॥ स इमां देवः पूषा प्रेतो

'उत' अपिच, इयं 'कन्या' 'अर्य्यमणम्' अर्य्यमाख्यम् 'अग्निम्' 'देवं' 'अयक्षत' पूजितवती ; 'सः' पूजितोऽग्निः 'इमां' कन्यकाम् 'इतः' पितृकुलात् 'माम्' उद्दिश्य 'प्र मुञ्चातु' प्रकर्षेण स्थिरतया मुञ्चतु मह्यं ददातु इत्यर्थः ॥ ३ ॥

'उत' अपिच इयं 'कन्या' 'पूषणं' पूष-नामकम् 'अग्निम्' 'देवं' 'नु' निश्चयम् 'अयक्षत' पूजितवती ; 'सः' पूजितोऽग्निः 'इमां' कन्यकाम् 'इतः' पितृकुलात् 'माम्' 'प्रमुञ्चातु' प्रकर्षेण स्थिरतया मुञ्चतु ॥ ४ ॥

হউন, শতবর্ষ পরমায়ু লাভ করুন এবং আমার দেবর প্রভৃতি জ্ঞাতিরা পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুন” ॥২

এবং এই কন্যা অর্য্যমা নামক অগ্নিদেবতাকে নিশ্চয় অর্চ্চনা করিয়াছিল ; সেই অর্চ্চিত অগ্নি, এই কন্যাকে, এই পিতৃকুল হইতে বিভিন্ন করিয়া আমাকে স্থিররূপে সমর্পন করিয়াছেন ॥৩

এবং এই কন্যা পূষা নামক অগ্নিদেবতাকে নিশ্চয় অর্চ্চনা

२ – उपरिष्टाज्जगतीच्छन्दः । अग्निर्देवता । लाज* होमे विनियोगः ।

* लाजा भृष्टव्रीहयः ।

३—उपरिष्टाद् बृहतीच्छन्दः । अर्य्यमा देवता । लाजहोमे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुञ्चातु मा मुत स्वाहा ॥४॥ कन्यला पितृभ्यः पतिलोकं पतीय मप दीक्षा मयष्ट॥ कन्या उत त्वया वयं धारा-उदन्या इवाति गाहेमहि द्विषः ॥५॥ एकमिषे विष्णु-स्त्वानयतु ॥ द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु ॥ त्रीणि व्रताय

'कन्यला' कन्या 'पितृभ्यः' पितृ-भ्रातृ-प्रभृतिभ्यः 'अप' तान् परित्यज्य 'पतिलोकं' पतिगृहम् आगत्य 'पतीयं' पति-सम्बन्धिनीं 'दीक्षाम्' 'अयष्ट' इष्टवती । 'उत' अपिच 'कन्या' 'त्वया' सह एकत्रीभूताः 'उदन्या धाराः' उदकधाराः 'इव' बलवन्तो वेगवन्तो परस्पर-भेद-शून्यास्तादात्म्य-भावाश्च वयं 'द्विषः' द्वेष्टॄन् 'अति गाहेमहि' अतिक्रान्त्य विलोड़यामः उद्दे-जयामः ॥ ५ ॥

हे कन्ये ! 'विष्णुः' व्यापको देवः 'त्वाम्' 'एकं' पदं 'इषे' अन्नलाभाय 'नयतु' प्रापयतु । 'विष्णुः' 'त्वां' 'द्वे' पदे 'ऊर्ज्जे'

করিয়াছিল ; সেই অর্চ্চিত অগ্নি এই কন্যাকে, এই পিতৃকুল হইতে বিভিন্ন করিয়া আমাকে স্থিররূপে সমর্পন করিয়া-ছেন ॥৪

কন্যা, পিতা মাতা ভ্রাতা প্রভৃতিকে ত্যাগ করিয়া পতি-গৃহে আগমন করত পতি-সম্বন্ধী উপদেশ গ্রহণ করিতেছে, এবং কন্যে ! আমরা তোমার সহিত একত্র হইয়া জলধারা-সমূহের ন্যায় বলবান্, বেগবান্ ও পরস্পর অভিন্নভাবে স্থিত হইয়া দ্বেষ্টৃগণকে উদ্বিগ্ন করি ॥৫

४—उपरिष्टाद् बृहतीच्छन्दः । पूषा देवता । लाजहोमे विनियोगः ।

५—त्रिष्टुप्छन्दः । कन्या देवता । लाजहोमे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विष्णुस्त्वा यतु ॥ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु॥ पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥ षड्रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु॥ सप्त सप्तभ्यो होत्राभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु॥६॥ सखा सप्तपदी भव सख्यं ते गमेयꣳ सख्यं ते मायोषाः सख्यं ते मायोष्टाः ॥७॥ सुमङ्गली रियं वधू रिमाꣳ

बललाभाय 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'त्रीणि' पदानि 'व्रताय' पञ्च-महायज्ञान्तर्गत-बलि-कर्मणे 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'चत्वारि' पदानि 'मायोभवाय' सौख्ये 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'पञ्च' पदानि 'रायस्पोषाय' धनस्य पोषणाय 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'सप्त' पदानि 'सप्तभ्यः होत्राभ्यः' यज्ञीय-सप्तर्त्विक्प्राप्तये 'नयतु' ॥ ६ ॥

'सप्तपदी' सप्तपदाक्रान्ता त्वं कन्या 'सखा' मम सहचारिणी 'भव'; अहञ्च 'ते' तव 'सख्यं' 'गमेयम्' उपभुञ्जेयम्।

হে কন্যে! এই সর্ব্বব্যাপী দেবতা অন্নলাভের জন্য এক পদ অতিক্রমণ করাইতেছেন। বললাভের জন্য দ্বিতীয়। নিত্য কার্য্য পঞ্চ মহাযজ্ঞাদি সিদ্ধির জন্য তৃতীয়। সৌখ্যের জন্য চতুর্থ। পশুলাভের জন্য পঞ্চম। ধনরক্ষার জন্য ষষ্ঠ। সপ্ত ঋত্বিক্ লাভের জন্য অর্থাৎ সম্পত্যাদি হইলে কোন প্রশস্ত কাম্য যাগাদি কার্য্য করিবার জন্য ঋত্বিক্ আবশ্যক হইয়া থাকে, সেই অবস্থা সিদ্ধির জন্য, সপ্তম পদ অতিক্রমণ করাইতেছেন ॥৬

६—विराट्छन्दः। विष्णुर्देवता। पदाक्रमणे विनियोगः।

७—मामकी पङ्क्तिश्छन्दः। आत्मास्यमात्मा देवता। आत्मासने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समेत पश्यत ॥ सौभाग्य मस्यै दत्वा याथास्तं विपरे-तन ॥८॥ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ॥

'ते' तव मया सह 'सख्य'' 'योषाः' स्त्रियः विदूषिकाः समस्ताः 'मा' विच्छिन्दन्तु इति शेषः । अपितु 'मायोष्टयाः' अस्मत्-सुखहितैषिण्यः स्त्रियः 'ते' तव तत् सख्यं मया सह सखित्वं वर्द्धयन्त्विति शेषः ॥ ७ ॥

हे ईक्षकाः ! यूयं 'समेत' एकत्रीभूत्वा आगच्छत, ऐत्य च 'इयं' परिणीता 'वधूः' 'सुमङ्गलीः' कल्याणी इति मत्वा 'इमां' 'पश्यत !' किञ्च 'अस्यै' 'सौभाग्य'' दत्वा (आशीर्भिरितियावत्) 'अस्तं' गृहं 'विपरेतन' याथाः प्रत्यावृत्तं गच्छत ॥ ८ ॥

'विश्वेदेवाः' दृश्यमानाः दीप्यमानाः समस्ताः पदार्थ-जाताः 'नौ' आवयोः 'हृदयानि' 'समञ्जन्तु' शोधयन्तु । 'आपः'

এই একত্র সপ্তপদগমনা কন্যা, তুমি চিরদিনের জন্য আমার সহচারিণী হও ! আমি ত্বদীয় সখ্য ভোগ করি ! তোমার সহিত সুদৃঢ় সংস্থাপিত এই সখ্য (ঘরভাঙানি) বিচ্ছেদকারিণী স্ত্রীগণে বিচ্ছিন্ন করিতে না পারে ! বরং অস্মদাদির হিতৈষিণা ভদ্রা স্ত্রীরা এই অভিনব সঞ্জাত সখ্য সদুপদেশ প্রদানাদি দ্বারা ক্রমে পরিবর্দ্ধিত করিতে থাকুন ॥৭

হে পরিদর্শকগণ ! তোমরা একত্র হইয়া এই অগ্নিসমীপে আগমন কর, অনন্তর এই পরিণীতা বধূকে কল্যাণকারিণা বিবেচনায় দর্শন কর এবং ইহাকে আশীর্ব্বাদ-বলে সৌভাগ্য প্রদান করত নিজ নিজ নিকেতনে প্রতি গমন কর ॥৮

---

८ — अनुष्टुप्छन्दः । आशासमाना देवता । दर्शक-प्रतिमन्त्रणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संमातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥९॥ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टि र्यथासः ॥ भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः ॥१०॥ अघोरचक्षु रपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः

जलदेवताः 'सम्' अञ्जन्तु-इति कर्षणीयः। 'मातरिश्वा' वायुः 'सम्' अञ्जन्तु। 'धाता' प्रजापतिः 'सम्' अञ्जन्तु। किञ्च 'उदेष्ट्री' देवी 'नौ' आवयोः हृदयानि 'संदधातु' एकीकुर्व्वन्तु ॥९॥

हे कन्ये! 'पुरन्धिः' पुर-रक्षकरूपः 'भगः' 'अर्य्यमा' 'सविता' च नामभेदेन विभिन्ना एते 'देवाः' 'त्वा' त्वां 'गार्हपत्याय' गार्हस्थ्य-कार्य्य-निर्व्वाहाय 'मह्यम्' 'अदुः'। ततश्च 'मया पत्या' 'जरदष्टिः' जरान्त यावत् 'यथा असः' यथा भवसि तथा 'सौभगत्वाय' सौख्याय 'ते' तव 'हस्तं' पाणिम् 'गृभ्णामि' गृह्णामि ॥१०॥

এই সমস্ত দেদীপ্যমান পদার্থসকল আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, জলদেবতা আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, অন্তরীক্ষচারী বায়ুদেবতা আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, প্রজাপতি (আকাশ) আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন। সদুপদেশকারিণী ভদ্র মহিলাগণ আমাদের উভয়ের হৃদয়-দ্বয়ের ঐক্য সম্পাদন করুন ॥৯

হে কন্যে! অর্য্যমা, ভগ, সবিতা প্রভৃতি নাম ভেদে বিভিন্ন পুর-রক্ষক এই সূর্য্য দেবতা এই উদ্বাহ কার্য্যে সাক্ষী রূপে

अनुष्टुप्छन्दः। विश्वेदेवाख्या देवताः। मूर्द्धाभिषेचने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूर्ज्जीवसूर्द्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥११॥ आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वर्यमा ॥ अदुर्मङ्गलीः

हे कन्ये ! त्वम् 'अघोरचक्षुः' अक्रूरदृष्टिः 'अपतिघ्नी' अविधवा, 'पशुभ्यः शिवा' गो-वत्सादि-पालन-कारिणी, 'सुमनाः' सहृदया, 'सुवर्चाः' तेजस्विनी, 'वीरसूः' पुत्रप्रसूतिः, 'जीवसूः' जीवत्पुत्रा 'देवकामा' पञ्चयज्ञानुकूला 'स्योना' सुखकरी किं बहुना—'नः' अस्माकं सर्व्वथैव 'शं' कल्याणकरी 'एधि' भव। किञ्च अन्यस्मिन्नपि द्विपदे 'च' अपिच 'चतुष्पदे' प्राणिजातौ 'शं' कल्याणकरी 'भव' ॥११॥

हे कन्ये ! 'प्रजापतिः' 'नः' अस्माकं 'प्रजां' पुत्रपौत्रादिकम् 'आ' आभिमुख्येन 'जनयन्तु'। 'अर्य्यमाः' सः तान् 'समनक्तु'

অবস্থিত থাকিয়া তোমাকে গার্হস্থ্য কার্য্য সম্পাদানার্থ আমায় সমর্পন করিয়াছেন, আমিও পালনকারী হইয়া জরাবস্থা পর্য্যন্ত যতদিন তুমি জীবিতা থাকিবে তাবৎ কালের জন্য সুখ-ভোগাশয়ে তোমার হস্ত গ্রহণ করিতেছি ॥১০

হে কন্যে ! তুমি মন্দেক্ষণা ও পতিঘাতিনী না হইয়া-গো-বৎসাদির পালনকারিণী, সহৃদয়া, তেজস্বিনী, জীবৎ-সন্ততি, পঞ্চযজ্ঞান্তর্গত বলি কার্য্য-পরায়ণা, সুখকরী—অধিক কি, সর্ব্বপ্রকারে আমাদের বংশের কল্যান-সাধিনী হও এবং অস্মৎসম্বন্ধী অন্যান্য দ্বিপদ, চতুষ্পদ প্রাণীদের পক্ষেও কল্যাণরূপিণী হও ॥১১

---

१० – त्रिष्टुप्छन्दः । भगादयो देवताः । पाणिग्रहणे विनियोगः ।

११ – त्रिष्टुप्छन्दः । कन्या देवता । आश्वासने विनियोगः ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पतिलोक माविश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥१२॥ इमां त्व मिंद्र मीढ्वः सुपुत्राᳪ सुभगांकृधि ॥ दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृध ॥१३॥ संम्राज्ञी श्वशुरे

रूपगुणादिभिर्व्यञ्जयन्तु । 'मङ्गली:' मङ्गलाकारिण्यो देवता: त्वां मह्यम् 'श्रदु:' दत्तवन्त:, अतस्त्वं 'पतिलोकम्' 'आविश' । एवं सर्व्वथैव 'न:' अस्माकं 'शं' कल्याणी 'च' अपिच अन्यस्मिन्नपि 'द्वि-पदे' 'चतुष्पदे' प्राणिजातौ 'शं' कल्याणी भव ॥ १२ ॥

हे 'इन्द्र!' ऐश्वर्य्यमान् देव 'मीढ्व:' द्युलोकस्य सेक्ता तर्पयिता 'त्वम्' 'इमां' कन्यां 'सुपुत्रां' सत्पुत्रवतीं 'सुभगां' सौभाग्यशा-लिनीं 'कृधि' कुरु । किञ्च 'अस्यां' कन्यायां 'दश पुत्रान्' 'आधेहि' आधानं कुरु अपिच अस्या: 'पतिम्' भर्त्तारं तै: सह सङ्कलनया 'एकादशं' 'कुरु' ॥१३॥

হে কন্যে ! প্রজাপতি আমাদের পুত্র পৌত্রাদি প্রদান করুন, অর্য্যমা তাহাদিগকে রূপগুণাদিতে প্রসিদ্ধ করুন। মঙ্গল-কারিণী দেবীরা তোমাকে আমায় সমর্পন করিয়াছেন অতএব তুমি পতিগৃহে প্রবেশ কতিেছ, সর্ব্বপ্রকারে আমাদের কল্যাণ-কারিণী হও এবং অস্মৎসম্বন্ধী অন্যান্য দ্বিপদ, চত্ত-ষ্পদ প্রাণিগণের পক্ষেও কল্যাণরূপিণী হও ॥১২

হে ঐশ্বর্য্যশালিন্ ! দেব ! তুমি এই কন্যাকে সৎপুত্র-জননি, সৌভাগ্যশালিনী কর এবং কন্যার দশটি গর্ভ পালন কর, ঐ দেশের সহিত পতিকে সঙ্কলন করিলে ইহার একাদশ জনা রক্ষক হইতে পারিবে। ॥১৩

१२—जगतीच्छन्द: । प्रजापतिर्देवता । आशासने विनियोग: ।

१३—अनुष्टुपछन्द: । इन्द्रो देवता । आशी:प्रार्थने विनियोग: ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भव संम्राज्ञी श्वश्र्वां भव ॥ ननान्दरि संम्राज्ञी भव संम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥१४॥ मम व्रते ते हृदयं दधातु मम चित्त मनुचित्तन्ते अस्तु ॥ मम वाच मेकमना जुषस्व बृहस्पति स्त्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥१५ ॥

कन्ये ! त्वं 'श्वशुरे' श्वशुर-मनोरञ्जने 'संम्राज्ञी प्रधाना' 'भव'। 'श्वश्र्वां' 'सम्राज्ञी' 'भव'। 'ननान्दरि' 'सम्राज्ञी' 'भव'। 'देवृषु' देवरेषु 'अधि' अधिकृत्य 'सम्राज्ञी' भवेति अनुकर्षणीय: ॥१४॥

कन्ये ! 'ते' तव 'हृदयं' 'ममव्रते' मदीय-कर्मणि 'दधातु' धेहि धारय। 'ते' 'चित्तं' 'मम' 'अनुचित्तम्' 'अस्तु'। त्वम् 'एकमना:' सती मम' वाचम्' जुषस्व' सेवस्व । 'बृहस्पति:' जगत्पतिर्देव: त्वां 'मह्यं' 'नियुनक्तु' मां प्रसादयितु' मनोरञ्जिनीं करोतु ॥१५॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथम-प्रपाठकस्य द्वितीय:खण्ड: ॥२॥

হে কন্যে ! তুমি শ্বশুর, শশ্রূ, ননন্দা, দেবর প্রভৃতি তাবৎ পরিজনের উপরেই আধিপত্য করিতে সক্ষমা হও ॥১৪

হে কন্যে ! তোমার হৃদয় আমার কার্য্যে নিযুক্ত কর, তোমার চিত্ত আমার চিত্তের অনুগামী হউক, তুমি একমনা হইয়া আমার আজ্ঞা প্রতিপালন কর। এই বৃহৎ জগতের পালয়িতা দেবতা তোমাকে আমার মনোরঞ্জনে নিযুক্ত করিতেছেন ! ॥১৫

१४—अनुष्टुप्छन्द: । कन्या देवता । सम्राज्ञीकरणे विनियोग: ।

१५ – त्रिष्टुप्छन्द: । प्रार्थ्यमान देवता । एकीभाव-प्रार्थने विनियोग: ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ: तृतीय खण्ड:—

लेखा सन्धिषु पक्ष्मस्वावर्त्तेषु च यानि ते॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्व्वाणि शमयाम्यहम्॥ १ ॥ केशेषु यच्च पापकं मोक्षिते रुदिते च यत्॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्व्वाणि शमयाम्यहम्॥२॥ शीलेषु यच्च पापकं भाषिते

हे कन्ये ! 'ते' तव 'लेखा-सन्धिषु' लेखानां रेखानां सन्धयो यत्र तादृशेषु मूर्द्ध-प्रदेशेषु, किञ्च 'पक्ष्मसु' चक्षुर्लोमसु 'च' अपिच 'आवर्त्तेषु' नाभिरन्ध्रादिषु 'यानि' अपचिह्नानि (सन्तीति शेषः)—अहं पाणिग्रहः 'तानि सर्व्वाणि' 'पूर्णाहुत्या' अनया शेषाहुत्या 'समयामि' उपशमितानि करोमि ॥ १ ॥

हे कन्ये ! 'यच्च' 'पापकं' पापं अशुभकारं 'ते' तव 'केशेषु (अस्तीति शेषः) 'च' अपिच 'ईक्षिते' दर्शन-क्रियायां 'रुदिते' चलिते गमन क्रियायां 'यत्' अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥२॥

হে কন্যে ! তোমার শরীরস্থ রন্ধ্রগত রেখা সমস্তের সন্ধি সকলে, চক্ষুরিন্দ্রিয়ের পরিরক্ষক পক্ষ্মসকলে, এবং নাভি কূপাদি প্রদেশে যে সকল অমঙ্গল চিহ্ন আছে—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥ ১

হে কন্যে ! তোমার কেশ সমস্তে যে পাপ আছে এবং তোমার ঈক্ষণে, চলনে, যাহা কিছু পাপ আছে— আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥২

१—लेखेत्यादीनां षसाम्—अनुष्टुप् छन्दः । अभिधीयमाना देवता । पाणि-ग्रहस्याज्यहोमे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हसिते च यत् ॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥३॥ आरोकेषु च दन्तेषु हस्तयोः पादयोश्च यत्॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम् ॥४॥ ऊर्वोरुपस्थे जङ्घयोः सन्धानेषु च यानि ते ॥ तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥५॥यानि कानि च घोरा-

हे कन्ये ! 'ते' तव 'शीलेषु' व्यवहारेषु 'यत्' 'पापकं' यच्च 'भाषिते' कथन-क्रियायां 'च' अपिच 'हसिते' हसन-क्रियायां पापकम् अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥ ३ ॥

हे कन्ये ! 'ते' तव 'आरोकेषु' दन्तान्तरेषु (मेड़े इति प्रसिद्धेषु) 'च' अपिच 'दन्तेषु', 'हस्तयोः', 'पादयोः' 'यच्च' पापकम् अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥ ४ ॥

हे कन्ये ! 'ते' तव 'ऊर्वोः' ऊरु-द्वयोः 'उपस्थे' गोपनीये इन्द्रिये 'जङ्घयोः' 'च' अपिच 'सन्धानेषु' अन्यान्य-प्रदेशेषु 'यत्' पापकं अस्ति—'अहं' इत्यादि ॥ ५ ॥

কন্যে! তোমার ব্যবহারে যে পাপ আছে, এবং তোমার কথনে, হসনে, যে পাপ প্রকাশ পায়—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৩

হে কন্যে ? তোমার দন্তের মেড়েগুলিতে এবং দন্তসকলে, হস্তদ্বয়ে, ও পাদদ্বয়ে যে পাপ আছে— আমি এই শেষ অহুতিদ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৪

হে কন্যে ! তোমার উরূদ্বয়ে, উপস্থেন্দ্রিয়ে, জঙ্ঘাদ্বয়ে এবং অন্যান্য সন্ধি প্রদেশে যে পাপ আছে—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎসমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৫

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णि सर्वाङ्गेषु तवाभवन् । पूर्णाहुतिभि राज्यस्य सर्वाणि तान्यशीशमम् ॥६॥ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्व मिदं जगत् ॥ ध्रुवासः पर्वता इमे ध्रुवा स्त्री पतिकुले इयम् ॥ ७ ॥ अन्नपाशेन मणिना प्राण-सूत्रेण

'च' अपिच हे कन्ये ! 'तव' सर्वाङ्गेषु' समस्त-शरीरांशेषु 'यानि कानि' 'घोराणि' पापानि 'अभवन्'—'अहं' 'तानि सर्व्वाणि' 'आजास्य' घृतस्य 'आहुतिभिः' 'अशीशमम्' शमितवानिव ॥ ६ ॥

हे प्रार्थ्यमान-देव ! यथा इयं 'द्यौः' 'ध्रुवा' स्थिरा, इयं 'पृथिवी' 'ध्रुवा', 'इदं' दृश्यमानं विश्वम् सर्व्वं जगत् चराचरं समस्तं 'ध्रुवम्', 'इमे' दृश्यमानाः पर्व्वताः गिरयश्च 'ध्रुवासः' ध्रुवाः स्थिराः, 'इयं' 'स्त्री' 'पतिकुले' अत्र पतिगृहे, तथैव 'ध्रुवा' भवन्त्विति शेषः ॥ ७ ॥

এবং হে কন্যে ! তোমার সর্ব্বাঙ্গে যেসকল ঘোরতর পাপ হইয়াছে—আমি এই ঘৃতের পূর্ণাহুতি প্রদানে তৎসমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৬

হে প্রার্থ্যমান দেব ! যেমন এই দ্যুলোক চিরস্থায়ী, এই পৃথিবী চিরস্থায়িনী, এই পরিদৃশ্যমান সমস্ত চরাচর চিরস্থায়ী, এই অচলরাজিও চিরস্থায়ী—এই স্ত্রীও, এই পতিগৃহে সেইরূপ চিরস্থায়িনী হউক ॥৭

७—अनुष्टुप् छन्दः । अभिधीयमाना देवता । अनुमन्त्रणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ণ্মিনা॥ বধ্নামি সত্যগ্রন্থিনা মনশ্চ হৃদয়ঞ্চ তে॥৮॥ যদেতদ্ধৃদয়ং তব তদস্তু হৃদয়ং মম॥ যদিদং হৃদয়ং মম তদস্তু হৃদয়ং তব॥৯॥ অন্নং প্রাণস্য পড়্বিং

হে বধু ! 'তে' তব 'মনঃ' বিত্তং 'চ' অপিচ 'হৃদয়ং'ভাবং 'বধ্নামি' বন্ধনং করোমি স্ববশং নয়ামীত্যর্থঃ। কথম্ ? ইত্যাহ— 'মণিনা' মণিতুল্যেন, রত্ন-সদৃশেন 'প্রাণ-সূত্রেণ' অপিচ 'সত্য-গ্রন্থিনা' সত্যরূপ-গ্রন্থিনা। অয়ং ভাবঃ—তুভ্যং মণিময়ং যদিদং অন্নম্ দদামি তব হৃদয়স্য মনসশ্চ বন্ধনায় তত্ পাশরূপং ভবতি, যদিদং রত্নতুল্যং মদীয়ং প্রাণসত্ত্বং তত্ সমস্তমেব তুভ্যং মুতসৃজে, তত্দৃষ্টঞ্চৈতত্ তত্পাশ-বন্ধনায়োপযোগি সূত্রং ভবতি, তত্র চ গ্রন্থিঃ সত্য-বচনং প্রতিজ্ঞা-কথনমিতি ।। ৮ ॥

হে বধু ! 'যত্ এতত্' অনুভূতং 'তব' সম্বন্ধি 'হৃদয়ং' 'তত্' 'মম' সম্বন্ধি 'অস্তু' ভবতু—কিঞ্চ, 'মম' 'যত্' 'হৃদয়ং' 'তত্' 'তব' 'অস্তু' আবয়োরৈক-হৃদয়ং ভবতু ইত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥

হে বধূ ! তোমার মন ও হৃদয় মণিতুল্য অন্নদানরূপ পাশে এবং রত্ন সদৃশ প্রাণরূপ সূত্রে ও সত্যস্বরূপ গ্রন্থি দ্বারা বন্ধন করিতেছি ॥৮

হে বধূ ! এই যে ত্বদীয় হৃদয়—ইহা আমার হউক অর্থাৎ তুমি মর্ম্মবেদনা পাইলে সেই যাতনা আমার হউক এবং আমার এই হৃদয় তোমার হউক অর্থাৎ আমার মর্ম্মবেদনা তোমার মর্ম্মাঘাত-কর হউক। এইরূপ তোমার সুখে আমার সুখ এবং আমার সুখে তোমার সুখ হউক ॥৯

৮—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। অন্ন দেবতা। অন্ন-প্রাশনে বিনিযোগঃ।
৯—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। প্রার্থ্যমানা দেবতা। হৃদয়ৈক্যে বিনিয়োগঃ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्र स्तेन बध्नामि त्वासौ ॥ १० ॥ सुकिंशुकं शल्मलिं विश्वरूपं सुवर्णवर्णं सुकृतं सुचक्रम् । आरोह सूर्ये अमृतस्य नाभिं स्योनं पत्ये वहन्तु कृणुष्व ॥११॥

हे वधु ! 'अन्न' अदनीयं वस्तुजातं 'प्राणस्य' वायोः 'पड्विंशः' बन्धनं यतः, अतः 'तेन' अन्नेन 'त्वा' त्वां 'बध्नामि' बन्धनं करोमि ॥ १० ॥

हे 'सूर्य्ये !' यथा सूर्य्या तेजोरूपा तद्वत्तेजस्वति ! त्वं 'सुचक्रं' सुन्दर-चक्रोपेतम् इमं रथम् 'आरोह' सुखेनारोहणं कुरु । कीदृशं रथमित्याह—'किंसुकं' पलाश-कुसुममिव रक्तवर्णं, 'शल्मलिं' शाल्मलि-कुसुममिव आरादिविशिष्ट 'विश्वरूपं' चित्रितं, 'सुवर्णवर्णं' रक्तपीताभं, 'सुकृतं' सुनिर्मितं । इमे रथाश्वाः 'अमृतस्य' कल्याणस्य 'नाभिम्' उत्पत्तिस्थानं त्वां 'वहन्तु' । त्वञ्च 'पत्ये' भर्त्रे 'स्योनं' सुखं 'कृणुस्व' कुरु ॥ ११ ॥

হে বধূ ! এই যে সমস্ত অদনীয় বস্তু—ইহাই প্রাণের রক্ষণোপায় বন্ধন স্বরূপ হইয়া থাকে, অতএব এই অন্নদানে তোমাকে আবদ্ধ করিতেছি ॥১০

হে সূর্য্যতুল্য তেজস্বতি ! তুমি এই—পলাশ কুসুমের ন্যায় রক্তবর্ণ, শিমুল গুচ্ছের চিত্রে চিত্রিত, সুবর্ণ বর্ণ, বিবিধ চিত্রে সুশোভিত, সুন্দর চক্র-সমন্বিত, উৎকৃষ্ট কারুবর-বিনির্ম্মিত রথে আরোহণ কর। এই রথের অশ্বগণ কল্যাণের আকর তোমাকে ভালরূপে বহন করুক এবং তুমি সর্ব্বদা পতি যাহাতে সুখী হন তাহাই করিবা ॥১১

१०—द्विपाद् गायत्रीच्छन्दः । अन्न देवता । अन्नस्तौ विनियोगः ।
११—त्रिष्टप्छन्दः । कन्या देवता । रथारोहणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती सुगेभि र्दुर्ग मतीता मपद्रान्त्वरातयः॥१२॥ इह गावः प्रजायध्व- मिहाश्वा इह पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो पि पूषा निषीद तु॥१३॥ इह धृति रिह स्वधृति रिह रन्ति रि-

'ये' 'परिपन्थिनः' दस्यवः 'आसीदन्ति' पथीति शेषः, ते इमौ 'दम्पती' जायापती रथारूढ़ौ इति 'मा विदन्' न हि वि-दिता भवेयुः । किञ्च 'सुगेभिः' सुगमै र्मार्गैः 'दुर्गम्' दुर्गमं पन्थानम् 'अतीताम्' व्यतीताम्। अन्येपि 'अरातयः' शत्रवः 'अप-द्रान्तु' अपगता यथा स्युस्तथा पलायन्तु ॥ १२ ॥

'इह' वधूवर सम्बन्धिनि गृहे 'गावः' 'प्रजायध्वम्' बहुला भवन्तु। 'इह' 'अश्वाः' प्रजायध्वम् । इह 'पूरुषाः' पुत्रा-दयो वंशाः प्रजायध्वम्। 'उ' अपिच 'सहस्र-दक्षिणोऽपि' यस्य देवस्य प्रसादात् गो-सहस्र-दक्षिणा अपि क्रतवः सम्पद्यन्ते सोऽसौ 'पूषा' आदित्यो देवः 'इह' 'निषीदन्तु, प्रसीदन्तु॥१३॥

এই দম্পতীতে রথারূঢ় হইলেন পথি মধ্যে বিঘ্নকারী যে সমস্ত দস্যুদল আছে, তাহারা যেন জানিতে না পারে! দুর্গম পথ সকল যেন সুগমরূপে অতীত হয়! শত্রুরা সকলেই যেন দূর হইয়া যায়! ॥১২

এই বধূ ও বরসম্বন্ধী গৃহে গোধন পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুক এবং এই গৃহে অশ্বসম্পত্তি পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুক। এই গৃহে

१२—अनुष्टुप् छन्दः । आशास्यमाना देवता । चतुष्पथायामन्त्रणे ।

१३—अनुष्टुप् छन्दः । आशास्यमाना देवता । गृह-प्रवेशे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह रमस्व। मयि धृति मयि स्वधृति मयि रमो मयि रमस्व ॥१४॥

हे वधू 'इह' अस्मिन् गृहे तव 'धृतिः' धैर्य्यम् अस्तु। 'इह' तव 'स्वधृतिः' स्वैरात्मीयैः धृति धारणम् एकत्र मेलनम् अस्तु। इह तव 'रन्तिः' रमणम् अस्तु। 'इह' 'रमस्व' आमोदेन तिष्ठ। किन्तु 'मयि' भर्त्तरि तव धृत्यादिकं विशेषेणास्तु इत्याह—धृतिरित्यादि ॥ १४ ॥

পুত্রাদি বংশবৃদ্ধি হউক। অপর যে দেবতার প্রসাদে সহস্র দক্ষিণার উপযুক্ত যজ্ঞ সকল হইতে পারে সেই পূষা (সূর্য্য) দেবতা এই গৃহে সর্ব্বদা প্রসন্ন থাকুন ॥১৩

হে বধু! এই গৃহে তোমার স্থির মতি হউক, এই গৃহে তুমি সানন্দে কাল যাপন কর। এবং আমাতে তোমার স্থির মতি হউক, আমার আত্মীয় গণের সহিত তোমার মিলন হউক, আমাতে তোমার আশক্তি হউক, আমার সহিত তুমি সানন্দে কাল যাপন কর ॥১৪

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य तृतीयः खण्डः ॥ ३ ॥

—:०:—

१४—बृहतीच्छन्दः। कन्या देवता। होमे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

অথ চতুর্থঃ খণ্ডঃ ।

অগ্নে প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথকাম উপধাবামি যাস্যাঃ পাপী লক্ষ্মীস্তামস্যা অপজহি॥ ১॥ বায়ো প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথকাম উপধাবামি যাস্যাঃ পতিঘ্নী তনূস্তামস্যা অপজহি ॥ ২॥ চন্দ্র প্রায়শ্চিত্তে

'প্রায়শ্চিত্তে' প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান! 'অগ্নে!' 'ত্ব' দেবানাম্ অস্মদাদীনাং 'প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি' ভবসি, অতঃ 'নাথকামঃ' নাথঃ অধিনায়কঃ মে ভূয়াদিতি কামনাবান্ 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বাম্' 'উপধাবামি' অভ্যর্চ্চামি। ত্বং হি 'অস্যাঃ' 'পাপী লক্ষ্মী' অশুভসম্বন্ধিনী শোভা 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' বধ্বঃ 'তাম্' দুষ্ট শোভাম্ 'অপজহি' অপগতাং কুরু ॥ ১

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান! 'বায়ো!' 'ত্ব' 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাং প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি' ভবসি, অতঃ 'নাথকাম': 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বা' 'উপধাবামি'; 'অস্যাং' 'পতিঘ্নী

হে প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান অগ্নে! তুমি দেদীপ্যমান আমাদিগের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি (অর্থাৎ আমার কেহ নাথ [মুরুব্বী] হউক এরূপ অভিলাষী) ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর অমঙ্গল শোভা যাহা থাকে তাহা দূর করিয়া দাও ॥ ১

হে প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান বায়ো! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে পতিবিয়োগ-কারণ দোষ যাহা থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥২

---

১ —অগ্নয়েত্য ইমে পঞ্চ মন্ত্রা নিগদাঃ (যজুর্বিশেষঃ)। অগ্ন্যাদি দৈবতাকাঃ। চতুর্থীতি প্রসিদ্ধ হোম কর্ম্মণি বিনিযুক্তাঃ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বানাথকামউপ-ধাবামি যাস্যা অপুত্র্যা তনূস্তামস্যা অপজহি॥৩॥ সূর্য্য প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথ কামউপধাবামি যাস্যা অপশব্যা তনূস্তা মস্যা অপ-

পতি-হনন-কারিণী 'তনূঃ' 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' 'তাং' তদ্-দূষণ-বিশিষ্টাং তনূম্ 'অপজহি' দূষণ-বিনির্মুক্তাং কুরু ইত্যর্থঃ॥২

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান 'চন্দ্র !' 'ত্বং' 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাং 'প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি', অতঃ 'নাথ-কামঃ' 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বম্' 'উপাধাবামি', 'অস্যাঃ' 'অ-পুত্র্যা' পুত্রায় হিতা পুত্র্যা তদ্‌বিপরীতা বন্ধ্যাত্বাদি-দূষণ-দূষিতা 'তনূঃ' 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' 'তাম্' 'অপজহি' ॥৩

'প্রায়শ্চিত্তি' কার্য্যে আরাধ্যমান 'সূর্য্য !' 'ত্বং' 'দেবানাম্'

প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান হে চন্দ্র ! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে বন্ধ্যা হইবার কারণ যে কোন দোষ থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৩

প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান হে সূর্য্য ! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথ-কাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে অ-পশব্য* দোষ যাহা থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৪

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जहि ॥ ४ ॥ अग्नि वायु चन्द्र सूर्य्याः प्रायश्चित्तयो यूयं देवानां प्रायश्चित्तयस्थ ब्राह्मणोवो नाथकाम उपधवामि यास्याः पापी लक्ष्मी र्या पतिघ्नी यापुत्रा या पशव्या ता अस्या अपहत ॥५॥ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्ट

अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तिः' दोषस्य उपशमिता 'असि', अतः 'नाथ-कामः' 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'त्वाम्' 'उपधावामि'; 'अस्याः' 'अ-पशव्या' पशवे हिता पशव्या तद्विपरीता पशु-नाश-दूषण-दूषिता 'तनूः' 'या' स्यात्, 'अस्याः' 'ताम्' 'अपजहि' ॥४

हे अग्नि-वायु-चन्द्र-सूर्य्याः ! 'यूयं' 'देवानाम्' अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तयः' दोषस्य उपशमितारः 'स्थः' अतः 'नाथ-कामः' 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'वः' युष्मान् 'उपधावामि'; 'अस्याः' 'पापी लक्ष्मी' 'या' तनूः, 'पतिघ्नी' 'या' तनूः, अपुत्रा' 'या' तनूः, अ-पशव्या' 'या' 'तनूः, 'अस्याः' 'ताः' तद्विधाः समस्ताः तन्वः 'अपहत' दूरं कुरुत दूषण-दूषिताः तन्वः दूरीकृत्य निर्दुष्टाः कुरुतेत्यर्थः ॥ ५

হে অগ্নি, বায়ু, চন্দ্র ও সূর্য্য ! তোমরা আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথ-কাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাদিগকে অর্চ্চনা করিতেছি, তোমরা এই বধূর শরীরে অমঙ্গল শোভা, পতি বিয়োগ-কারণ দোষ, বন্ধ্যা দোষ, অপশব্য দোষ প্রভৃতি যে কোন দোষ থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৫

* যে দোষে গো-মহিষ্যাদি গৃহপশুর হানি হয় ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपाणि पिंशतु ॥ आसिंचतु प्रजापति र्धाता गर्भन्दधातु ते॥६॥ गर्भन्धेहि सिनीवालि गर्भन्धेहि सरस्वति। गर्भन्ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ ७ ॥

हे वधु ! 'विष्णुः' व्यापको देवः 'ते' तव 'योनिं' गर्भस्थानं 'कल्पयतु' गर्भग्रहणोपयुक्तां करोतु। 'त्वष्टा' स्रष्टा सएव देवः 'रूपाणि' गर्भाकारान् 'पिंशतु' प्रकाशयतु। तमेव गर्भं गर्भस्थानं योनिं वा सएव 'प्रजापतिः' प्रजानां पालको देवः 'आ सिञ्चतु' सिञ्चनं करोतु जीवनीनामशक्तिविशेषः। 'धाता' धारयिता सएव देवः तं 'दधातु' धारयतु ॥ ६

हे 'सिनीवालि' चन्द्र-शक्ति ! अस्यां 'गर्भं' 'धेहि' धारय पोषय वा। हे 'सरस्वति' अस्मद्वाणि ! अस्यां 'गर्भं धेहि' अस्मत्कथनादेवास्यां गर्भमस्तु इतिभावः। हे वधु ! 'अश्विनौ देवौ' द्यावापृथिवी ! ते तव 'गर्भम्' 'आधत्ताम्' धारयताम् कीदृशौ तावित्याह—'पुष्करस्रजौ' पुष्करमम्बरमेव स्रगिव स्रग् ययोः तौ अम्बरेण व्यापितावित्यर्थः ॥ ७

হে বধু! বিষ্ণু (ব্যাপক দেব) তোমার যোনি প্রদেশকে গর্ভ গ্রহণোপযুক্ত করুন। স্রষ্টৃরূপী সেই দেব তাহাতে গর্ভাকার প্রকাশ করুন। প্রজাগণের পালক সেই দেবতা জীবনী শক্তিতে সেই গর্ভ সিঞ্চন করুন। ধারয়িতা রূপী সেই দেব তাহাকে ধারণ করুন, যাহাতে গর্ভ নষ্ট না হয়!॥৬

হে চন্দ্রমার অমৃতময় শক্তে! এই বধূতে গর্ভ ধারণ কর। হে অস্মদ্ বাক্যামৃত! এই বধূতে গর্ভ ধারণ কর। হে বধু!

For Private And Personal Use Only

पुमा꣡ꣳसौ मित्रावरुणौ पुमा꣡ꣳसावश्विना वुभौ ॥ पु
मानग्निश्च वायुश्च पुमान गर्भ स्तवोदरे ॥ ८ ॥ पुमा-

हे वधु! यथा 'मित्रावरुणौ' अहोरात्री कालौ 'पुमांसौ' प्रजननशक्तिमन्तौ, तत्रैवैतत्समस्तस्य जायमानत्वात्; 'उभौ' द्यावापृथिवी 'अश्विनौ' अश्वाविव वेगगामिनी 'पुमांसौ' पूर्ववत्; 'अग्निः' पार्थिवो देवः 'च' अपिच 'वायुश्च' अन्तरीक्षस्थो देवश्च 'पुमान्'—'तव उदरे' अपि एवमेव 'पुमान् गर्भः' भवतु ॥ ८

हे वधु! यथा 'अग्निः' पार्थिवो देवः 'पुमान्', यथा 'इन्द्रः' अन्तरीक्षस्थो देवो 'पुमान्', यथा 'वृहस्पतिः' वृहतां विपुलानां राशिचक्राणां पतिः पालकः सूर्यः द्युस्थोदेवः 'पुमान्'—एवमेव त्वमपि 'पुमांसं' प्रजनन-शक्तिमन्तं पुत्रं 'विन्दस्व' लभस्व। किञ्च तं लब्धपुत्रम् 'अनु' अन्योऽपि 'पुमान्' पुमांसः पुत्राः 'जायताम्' तवोदरे इति शेषः ॥ ९

এই অম্বর-মাল্য-ধারী দ্যব্যাপৃথিবী তোমার গর্ভ ধারণ করুন ॥৭

হে বধু! এই অহোরাত্রকালেই সমস্ত প্রজা উৎপন্ন হইতেছে অতএব ইহা যেরূপ পুরুষ (প্রজনন ক্রিয়াক্ষম) এই অশ্বের ন্যায় বেগগামী এই দ্যাবাপৃথিবী যেরূপ পুরুষ এবং এই পৃথিবীর দেবতা অগ্নি ও অন্তরীক্ষের দেবতা বায়ু যেরূপ পুরুষ—তোমার উদরেও সেইরূপ পুরুষ অর্থাৎ প্রজননক্ষম গর্ভ উৎপন্ন হউক ॥৮

হে বধু! এই পৃথিবীর দেবতা যেরূপ পুরুষ, অন্তরীক্ষের

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नग्निः पुमानिन्द्रः पुमान्देवो बृहस्पतिः॥ पुमांसं पुत्रं विन्दस्व तं पुमाननु जायताम्॥ ८॥

দেবতা ইন্দ্র (আকাশ) যেরূপ পুরুষ, এই অতিবিপুল রাশি-চক্রের পালন কর্ত্তা সূর্য্য যেরূপ পুরুষ—তুমিও সেইরূপ পুরুষ সন্তান লাভ কর। অপিচ সেই সন্তানের পরে তোমার উদরে আরও প্রজননশালী সন্তানগণ উৎপন্ন হউক॥৯

इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य चतुर्थः खण्डः॥ ४॥

॥ अथ पञ्चमः खण्डः॥

अयमूर्ज्जावतो वृक्ष ऊर्ज्जीव फलिनी भव॥ पर्णं वनस्पते नुत्वा नुत्वा सूयतां रयिः॥१॥ येनादितेः सीमानं

'अयम्' 'उर्ज्जावतः' उडुम्बरः वृक्षः 'उर्ज्जी' बहुतेजःसम्पन्नः 'इव' अयमिव त्वमपि 'फलिनी' बहुतरफलशालिनी बहुपुत्रवती भव। हे 'वनस्पते'! 'पर्णं' स्वकीयच्छदनं 'नुत्वा नुत्वा' भूयः प्रेरयित्वा तथासंख्यो वेतिभावः 'रयिः' धनं 'सूयताम्' प्रसूयताम् अस्यै इत्यर्थः॥ १

এই বহু-ফল-শালী তেজস্বী উড়ুম্বর বৃক্ষের ন্যায় তুমি পুত্ররূপ বহু-ফল-শালিনী হও। হে উড়ুম্বর বৃক্ষ! তোমার পত্র পত্র গণনা করিয়া তৎপরিমিত ধন ইহার জন্য প্রসব কর॥১

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नयति प्रजापति र्महते सौभगाय॥ तेनाऽहमस्यैसीमानं नयामि प्रजामस्यै जरदष्टिं कृणोमि ॥२॥ राकामहꣳ सुहवाꣳ सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु

'प्रजापतिः' जगत्स्रष्टा देवः 'येन' हेतुना प्रजोत्पत्ति कामिमास्य 'देवानाम्' अस्मदादीनाम् मातृभूतस्य अण्डस्य 'सीमानं' अवधिम् नयति नीतवान्—(द्विधाकरणेनेति यावत्) 'तेन' एव हेतुना 'अहम्' भर्त्ता अपि 'अस्यै' अस्याः 'सीमानं' 'नयामि' उन्नयनं उन्नतिशीलं करोमि। किञ्च प्रजापतेस्तथा नयने किं निमित्तम्? उच्यते—'महते सौभगत्वाय' अतिविपुल-सौभाग्याय तस्याण्डस्यति शेषः, जगत्-प्रकाशायेति यावत्—तथैवाहमपि 'अस्यै' अस्याः 'जरदष्टि' जरावस्था पर्य्यन्त-जीविनीं 'प्रजाम्' 'कृणोमि' करोमि ; एतयैव क्रिययेति भावः अस्या एतदेव महत् सौभाग्यम्, एतदर्थमेव सीमन्तोन्नयनम् ॥ २

প্রজাপতি যে হেতুতে (প্রজোৎপত্তি কামনায়) চরাচর সমস্তের মাতা স্বরূপ অখণ্ড অণ্ডের দ্বিধাভাগ করত সীমার উন্নতি করিয়াছেন—আমিও (ভর্ত্তা) সেই হেতুতেই এই বধূর সীমন্তের উন্নতি করিতেছি। তাঁহার সেই সীমার উন্নয়ন ক্রিয়াতে সেই অণ্ডের বিপুল সৌভাগ্য প্রকাশ পাইয়াছে অর্থাৎ তাহাতেই এই সমস্ত আবির্ভূত হইয়াছে—আমিও এই সীমন্তোন্নয়ন ক্রিয়ার প্রভাবে ইহাকে মহৎ সৌভাগ্যবতী করিতেছি =ইহার প্রজা জরাবস্থ হইয়া বিনষ্ট হইবে, তাহাদের অকাল-মৃত্যু হইবে না সুতরাং ইহাকে শোকাতুরা হইতে হইবে না ॥২

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपागहि सहस्र पोषं सुभगे रराणा ॥ ३ ॥ किं पत्मना ॥ सीव्यत्वपः सूच्या छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् ॥ ४ ॥ यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभि र्ददासि दाशुषे वसूनि ॥ ताभि र्नो अद्य सुमना

'अहं' भर्त्ता सुष्टुती 'सुस्तुतया' 'सुहवां' शोभनाह्वानां 'राकां' अमावास्यां तिथि-कालं 'हुवे' आह्वयामि। 'सुभगा' सौभाग्यवती सा देवी 'नः' अस्माकं एतत् आह्वानं 'शृणोतु;' किञ्च 'त्मना' आत्मना स्वयमेव 'बोधतु' बुध्यतु। अपिच सैवदेवी 'अपः' भविष्यमाणान् कर्मरूपान् पुत्रादीन् 'अच्छिद्यमानया' अभज्यमानया 'सूच्या' वेधनयन्त्रेण 'सीव्यतु'। अपरञ्च 'शतदायमुक्थ्यम्' शतदायुषु बहु-दानक्षमेषु मुख्यम् एवं 'वीरं' पुत्रं 'ददातु' ॥ ३

हे 'सुभगे' सौभाग्यवति! 'ते' तव 'या' 'सुपेशसः' सुरूपाः 'सुमतयः' 'याभिः' सुरूप-सुमतिभिः 'दाशुषे' यजमानाय 'वसूनि' धनानि 'ददासि', 'ताभिः' मतिभिः साकं 'सुमनाः' प्रसन्नचित्तस्त्वं 'नः' अस्मभ्यम् 'सहस्रपोषं' बहु-प्रतिपालकं पुत्रं 'रराणा' ददाना सती 'अद्य' 'उपागहि' समागच्छ ॥ ४

সুন্দর স্তবে আহ্বানের উপযুক্ত অমাবশ্যা তিথিরূপ দেবতাকে আমি (ভর্ত্তা) আহ্বান করিতেছি। সৌভাগ্যবতী সেই দেবী আমাদের এই আহ্বান শ্রবণ করুন এবং আহ্বানের অভিপ্রায় আপনা হইতেই বুঝিয়া লউন। অপরঞ্চ ভবিষ্যমাণ পুত্রাদিকে যাহা ভাঙ্গিবার নহে এরূপ সূচি দ্বারা সীবন (সেলাই) করুন এবং বদান্যাগ্র-গণ্য প্রপুত্র দান করুন॥৩

For Private And Personal Use Only

श्यसि प्रजां पशुंत्सौभाग्यं मह्यं दीर्घायुष्ट्वं पत्युः ॥५॥
या तिरश्ची निपद्यते अहं विधरणी इति। तां त्वा

भर्त्ता पृच्छेत्—हे वधु ! अत स्थाल्यां 'प्रजां' 'पशून्', 'मह्यं सौभागम्' 'पत्युः' मम 'दीर्घायुष्ट्वं' 'पश्यसि' किम् ?' ॥ ५ ॥

'ता' देवता अत्र शुभे कर्मणि "तिरश्ची" न वाञ्छितफल-विघ्नकर्त्री "निपद्यते" भवति, "अहं" भर्त्ता सा देवता "विधरणी" शुभदायिनी 'इति' मत्वेति शेषः 'तां" "त्वा" त्वां "संराधनीं' कार्य्यसाधिनीं देवीं "अहं" भर्त्ता "घृतस्यधारा" आहुत्या 'यजे' अर्च्चयामि ॥ तथाचार्च्चन-मन्त्रः——"संराधन्यै" कार्य्यसाधिन्यै "देव्यै" इष्टफलदात्र्यै—''देव्यै' स्वाहेति मन्त्र-शेषः ॥ ६ ॥

হে সৌভাগ্যবতি ! রাকে ! তোমার যে সুন্দর মতি সমস্ত আছে, যে মতি সমস্তে যজমানদিগকে বিবিধ ধনদান করিয়া থাক, সেই সমস্ত মতির সহিত প্রসন্ন মনে আমাদিগকে বহুপোষী পুত্র প্রদানাশয়ে অদ্য আগমন কর ॥ ৪

ভর্ত্তা জিজ্ঞাসা করিবেন—

হে বধূ ! এই স্থালীতে পুত্র পৌত্রাদি প্রজা, গো-মহিষীপ্রভৃতি গৃহপশু, মদীয় সৌভাগ্য, তোমার পতির অর্থাৎ আমার দীর্ঘায়ূ দেখিতে পাইতেছ কি ? ৫

যে দেবতা এই শুভ কর্ম্মে বাঞ্ছিত ফলের বিঘ্নকারিণী হইতেছেন, আমি (ভর্ত্তা) তাঁহাকে শুভ-ফল-দায়িনী বিবেচনা করিয়া, কার্য্যসাধিনী সেই দেবতাকে ঘৃতের ধারা প্রদান পুরঃসর অর্চ্চনা করিতেছি ॥ যথা মন্ত্র—"কার্য্যসাধিনী, ইষ্টফলদায়িনী, দেবীকে এই ঘৃতাহুতি প্রদান করি" ॥ ৬

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घृतस्य धारया यजे सञ्राधनीमहं ॥ सञ्राधन्यै देव्यै देष्ट्रे ॥ ६ ॥ विपश्चित्पुच्छम भरत्तद्धातापुनराहरत् ॥ परेहि त्वं विपश्चित् पुमानयं जनिष्यतेऽसौ नाम ॥७॥ इय माज्ञा इदमन्न मिद माय्, रिदममृतम् ॥ ८ ॥ मेधां ते मित्रावरुणौ मेधामग्निर्दधातु ते ॥ मेधां ते अ-

एवं हि श्रुतम्—"विपश्चित्" देवः 'पुच्छ' पुत्रस्य प्रतिष्ठा-स्थानम् 'अभरत्' अहरत् 'तत्' तदेव प्रतिष्ठा स्थानम् 'धाता' देवः 'पुनराहरत्' आहरणं करोति। 'हि' यतः, अतः हे 'विपश्चित्' देव! 'त्वं' 'परेहि' आगच्छ प्रसन्नोभव, 'अयं' पुरुषः 'असौ नाम' एतन्नामकं पुत्रं 'जनिष्यते' उत्पा-दयतु ॥ ७ ॥

हे बालक! 'इयम्' 'आज्ञा' प्रज्ञा प्रज्ञावर्द्धकत्वात् प्रज्ञारूप-मेव 'इदम्' 'अन्नम्' 'आयुः' आयुस्थानत्वात्, 'इदम्' 'अमृतम्' प्राणाधारत्वात्, ॥ ८ ॥

हे 'कुमार!' 'ते' तव 'मेधां' पठित-श्रुत-धारणविषयां शक्तिं

এইরূপ শ্রুত আছে—যে, বিপশ্চিৎ দেবতা পুত্রের স্থান আহরণ করেন, বিধাতা তাহাই ধারণ করেন। অতএব বিপশ্চিৎ দেবতা তুমি প্রসন্ন হও এই পুরুষ আপনাকে দেখা-ইয়া) এই নামক পুত্রের উৎপাদক হউক।৭

হে বালক! এই প্রজ্ঞাবর্দ্ধক সুতরাং প্রজ্ঞাস্বরূপ অন্ন, আয়ু-র্বৃদ্ধিকারক অতএব আয়ুঃস্বরূপ ও ইহা অমৃতস্বরূপ।৮

७—विपश्चिद्देवता। यजुः। गर्भाधानाङ्गकर्मणि विनियोगः।

८- बालक देवता। यजुः। अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां बालकस्य ब्रीहियवसुवर्णप्राशने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ ९ ॥ यत्तेसुषीमे हृदयꣳ हितमन्तः प्रजापतौ ॥ वेदाहं मन्ये तद् ब्रह्म-माहं पौत्रमघं नि गाम्॥१०॥यत्पृथिव्या अनामृतं दिवि

'मित्रावरुणौ' अहोरात्ररूपौ देवौ 'आधत्ताम्' स्थापयताम्। यथा 'ते' 'मेधाम्' 'अग्निः' देवः 'दधातु' स्थापयतु। तथा 'ते' 'मेधां' 'पुष्करस्रजौ' अम्बरमाला-धारिणौ 'अश्विनौ' सूर्याचन्द्रमसौ 'देवौ' प्रदीप्तौ "आधत्ताम् स्थापयताम् ॥ ९ ॥

हे चन्द्र ! 'यत्' 'ते' तव 'प्रजापतौ' प्रजापालके 'सुसीमे' ज्योत्स्नारूप-शीतल-द्रव्ये 'अन्तः' प्रविष्टतया "हृदयं" सारभागः 'नि' 'हितं' स्थापितमस्ति, 'अहं' 'तत्' 'वेद' जानामि, 'ब्रह्म' सर्व्वव्यापकम् इति 'मन्ये', ततश्चास्ति वालकान्तरेपि, अतः सम्भावये—' पौत्रं' पुत्रसम्बन्धि ' अघं' पापफलं शोका-दिकं 'मा गाम्' नाप्नुयाम् ॥ १० ॥

হে বালক! এই আহোরাত্র দেবতারা তোমাতে মেধা স্থা-পন করুন, এই অগ্নি দেবতা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন, অম্বরমালাধারী এই প্রদীপ্ত চন্দ্র সূর্য্য দেবতারা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন। ৯

হে চন্দ্র ! প্রজাগণের পোষক ত্বদীয় শীতল জ্যোৎস্নার অন্তর্গত যে সার পদার্থ আছে, আমি তাহাকে সর্ব্বব্যাপী বলিয়া জানি, সুতরাং মদীয় বালকান্তরেও অবশ্য আছে ; অতএব ভরসা করি—আমি পুত্র সম্বন্ধি পাপ-ফল (শোকাদি) প্রাপ্ত হইব না ! ।১০

९—मित्रावरुणादयो देवताः । अनुष्टुप् छन्दः । सर्पिःप्राशने विनियोगः ।

१०—एषां चतुर्णां चन्द्रोदेवता । अनुष्टुप् छन्दः । शिशोः प्रसवदिन-तृतीयस्यां ज्योत्स्नायां चन्द्रदर्शने विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्द्रमसि श्रितं। वेदाम्हतस्याहं नाम माहं पौत्रमघ-ॡ्रिषम्॥११॥ इन्द्राग्नी शर्म यच्छतं प्रजापती। यथा यन्न-प्रमीयेत पुत्रो जनित्र्य अधि॥१२॥ यद्दस्य

'यत्' 'अमृतं' 'पृथिव्याः,' 'न' 'दिवि' द्युलोके 'चन्द्रमसि' त्वयि 'श्रितम्' आश्रितम्, 'तत्' 'अमृतस्य' गुणम् 'अहं' 'वेद' जानामि ; अतः सम्भावये—'पौत्रम्' पुत्र-सम्बन्धि 'अघम्' पाप-फलं शोकादिकं 'मा रिषम्' नाप्नुयाम्॥११॥

'मे' मम 'प्रजायै' पुत्राय 'इन्द्राग्नी' देवते 'शर्म' कल्याणं 'यच्छतम्' ददताम्, 'प्रजापती' प्रजापतिः प्रजानां पालको देवः तथा कुरुतात् 'यथा' असौ 'पुत्रः' 'जनित्र्याः' जनन्या, 'अधि' उत्सङ्गे (जीवितायां मातरीति भावः)'न प्रमीयेत' न म्रियात्॥१२॥

যে অমৃত পৃথিবীতে নাই=দ্যুলোকে চন্দ্রমাকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে, সেই অমৃতের গুণ আমি অবগত আছি ; অতএব ভরসাকরি আমি পুত্র সম্বন্ধি পাপফল) শোকাদি প্রাপ্ত হইব না!। ১১

ইন্দ্রাগ্নী দেবতারা আমার এই পুত্রকে কল্যাণ প্রদান করুন, প্রজাগণের পালক দেবতাও সেইরূপ করুন—যাহাতে জননীর ক্রোড়ে (অর্থাৎ জননী জীবিতা থাকিতে) এই পুত্রের মৃত্যু না হয়॥১২

For Private And Personal Use Only

न्द्रमसि कृष्णं पृथिव्या हृदयꣳ श्रितं। तदहं विद्वाꣳ स्तत्पश्यन् माहं पौत्र मघꣳ रुदम्॥ १३॥ कोऽसि कत-मोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि॥ आहस्पत्यं मासं प्रविशासौ॥१४॥

'चन्द्रमसि' त्वयि 'पृथिव्याः' 'हृदयं' छायारूपम् 'कृष्णं' कृष्णवर्णं लाञ्छनं 'श्रितम्' 'आश्रितम्' 'अहं' 'विद्वान्' पदार्थवित् 'तत्' लाञ्छनं 'पश्यन्' तत्वतो जानन् आशासे—'पौत्रम्' पुत्रसम्बन्धि 'अघ' पापफलं शोकादिकम् उपभुज्य 'मा रुदम्' न रुदामित्यर्थः॥ १३॥

हे बालक! त्वं 'कोऽसि' किन्नामधेयोऽसि? 'कतमोऽसि' अकालमरणधर्मासि? आहोस्वित् पूर्णायुर्भागसि? न जानासि चेच्छृणु—"एषोऽसि" एतन्नामकः भवसि किन्तु "अमृतोऽसि" अमरणधर्मा भवसि। अतः 'असौ' एतन्नामकः त्वं 'आहस्पत्यं' अहस्पतेः सूर्य्यस्य इदं संक्रान्ति-कृतं सौरं 'मासं' कालं "प्रविश" उपभुङ्क्ष्व॥ १४॥

হে চন্দ্র! তোমাতে আশ্রিত পৃথিবীর ছায়াস্বরূপ যে কৃষ্ণবর্ণ লাঞ্ছন তাহার প্রকৃত তত্ত্ব আমি অবগত আছি; ভরসা করি—তোমাকে পুত্র সম্বন্ধি পাপ-ফল শোকাদি ভোগ করত ক্রন্দন করিতে হইবে না॥ ১৩

হে বালক! তোমার কি নাম? তুমি কে? (অর্থাৎ অকাল-মৃত্যুর পথিক অথবা দীর্ঘায়ু)। যদি অবগত নহ, তবে শ্রবণ কর—তোমার এই নাম, তুমি পূর্ণায়ু হইবে; দিবাকরের কৃত (সৌর) এই মাসক্রমে কালাতিপাত কর॥ ১৪

१४—आदित्य देवता। यजुः। नाम करने विनियोगः।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

স ত্বাহ্নে পরিদদাত্বহস্ত্বা রাত্র্যৈ পরিদদাতু রাত্রি-স্ত্বাহোরাত্রাভ্যাং পরিদদাত্বহোরাত্রৌ ত্বার্দ্ধমাসেভ্যঃ পরিদত্তা মর্দ্ধমাসাস্ত্বা মাসেভ্যঃ পরিদদতু মাসা-স্ত্বর্ত্তুভ্যঃ পরিদদত্বৃতবস্ত্বা সংবৎসরায় পরিদদতু সং বৎসরস্ত্বায়ুষে জরায়ৈ পরিদদাত্বসৌ॥ ১৫ ॥ অহ্না

'সঃ' অহস্পতিঃ দেবঃ 'ত্বা' ত্বাং 'অহ্নে' দিবসায় 'আ-য়ুষে' আয়ুর্বর্দ্ধনার্থং 'পরিদদাতু'; 'অহঃ' সচ স্বকালীন সংবর্দ্ধয় 'ত্বা' ত্বাং 'রাত্র্যৈ' সংবর্দ্ধনায় 'পরিদদাতু'; 'রাত্রিঃ' 'ত্বা' ত্বাং 'অহোরাত্রাভ্যাং' 'পরিদদাতু'; 'অহোরাত্রৌ' 'ত্বা' ত্বাং 'অর্দ্ধ-মাসেভ্যঃ' পক্ষেভ্যঃ 'পরিদত্তাম্'; 'অর্দ্ধমাসাঃ' পক্ষসঙ্ঘাঃ 'ত্বা' ত্বাং 'মাসেভ্যঃ' 'পরিদদতু'; 'মাসাঃ' 'ত্বা' ত্বাং 'ঋতুভ্যঃ' 'পরি-দদতু'; 'ঋতবঃ' 'ত্বা' ত্বাং 'সংবৎসরায়' 'পরিদদতু'; 'সংবৎ-সরঃ' 'ত্বা' ত্বাং 'জরায়ৈ' আজরাজীবনায় 'পরিদদাতু'; 'অসৌ' ত্বঞ্চ এতন্নাম্না প্রসিদ্ধো ভব ॥ ১৫ ॥

হে বালক! এই দিবাপতি তোমার পরমায়ু বৃদ্ধির জন্য তোমাকে দিবাকালের করে সমর্পণ করুন; দিবা ঐ রূপে রাত্রির করে সমর্পণ করুন; অহোরাত্র উভয়ে এক-ত্রিত হইয়া মাসার্দ্ধের অর্থাৎ পক্ষ কালের হস্তে সমর্পণ করুন; মাসার্দ্ধগণ মাসসংঘের হস্তে সমর্পণ করুন; মাস সকল ঋতু-গণের হস্তে সমর্পণ করুন; ঋতুগণ সংবৎসর কালের হস্তে সমর্পণ করুন এইরূপে এক সংবৎসর দ্বিতীয় সংবৎসরের হস্তে দ্বিতীয় তৃতীয়ের হস্তে, তৃতীয় চতুর্থের হস্তে, এইরূপ ক্রমে জরা

১৫—আদিত্য দেবতা। নিগদঃ। নামকরণে বিনিয়োগঃ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दङ्गात् स(ं)म्भवसि हृदया दधिजायसे ॥ प्राणं ते प्राणेन सन्दधामि जीव मे याव दायुषम् ॥ १६ ।
अङ्गादङ्गात् सम्भवसि हृदया दधिजायसे ॥ वेदो वै पुत्र

हे पुत्र ! त्वं 'मे' मम 'अङ्गात् अङ्गात्' मदीय-समस्तावयवात् संभवसि' संभूतो भूतः ; किञ्च 'हृदयात्' मदीयात् 'अधिजायसे' उत्पन्नः ; अतः 'ते' तव 'प्राणं' 'प्राणेन' मदीयेन आत्म-प्राणविसर्जनेनापि -'संदधामि' पोषयामि — पुत्र ! 'यावदायुषं यावत् आयुषः अवधिः श्रुत्युक्तः तावत्, शतवर्षं 'जीव' ॥ १६ ॥

हे 'पुत्र !' यः त्वं 'अङ्गात् अङ्गात्' मदीयात् प्रत्यवयवात् 'सम्भवसि' समुत्पन्नोऽसि, 'हृदयात्' मदीयात् 'अधिजायसे' अतः त्वं 'वै' निश्चयं 'वेदः' वेदपाठी 'नाम' प्रसिद्धः 'असि' भवसि लोके (मम वैदिकत्व-प्रसिद्धेरिति भावः) ; 'सः' त्वं 'शरदः शतं' शतसंख्याकं शरत् कालं 'जीव' ॥ १७ ॥

কাল পর্য্যন্ত ইহারা তোমাকে পরিবর্দ্ধন করুন এবং তুমি এই নামে প্রসিদ্ধ হও ॥ ১৫

হে পুত্র ! তুমি আমার প্রত্যেক অঙ্গ হইতে সংশ্রুত হইয়াছ অর্থাৎ আমার হস্ত হইতে তোমার হস্ত হইয়াছে, আমার পাদ হইতে পাদ, মুখ হইতে মুখ, নাসিকা হইতে নাসিকা ইত্যাদি ক্রমে আমার অঙ্গ সমস্ত হইতেই ত্বদীয় সমস্ত অঙ্গ হইয়াছে। তুমি আমার আত্মা স্বরূপ হৃদয়ের ধন। অতএব আমার স্বীয় প্রাণ বিসর্জ্জনেও ত্বদীয় প্রাণ পোষণীয়—পুত্র ! যাবৎকাল মনুষ্যের আয়ু হইতে পারে (অর্থাৎ শত বর্ষ) তাবৎ জীবিত হও ॥ ১৬

१६—अस्य, परस्य, तत्परस्य च —प्रजापतिः देवता । अनुष्टुप्छन्दः। मूर्द्ध्राघ्राणे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नामासि स जीव शरदः शतम्॥ १७॥ अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव॥ आत्मासि पुत्र मा मृथाः स जीव शरदः शतम्॥ १८॥ पशूनां त्वा हिङ्कारेणाभिजिघ्राम्यसौ॥ १९॥

हे 'पुत्र!' 'अश्मा भव' प्रस्तरवत् दृढ़ीभव, 'परशुर्भव' परशुवत् स्वयमच्छेद्यः शत्रूणां छेदकश्च भव, 'हिरण्यं' सुवर्णमिव 'अस्तृतं' यत्नेन रक्षणीयं 'भव'; त्वम् 'आत्मासि' 'मा मृथाः' मृत्युं न गच्छ, अपितु 'सः' त्वं 'शरदः शतं' कालं 'जीव' ॥ १८

हे पुत्र! 'असौ' अहं 'त्वा' त्वां 'पशूनाम्' गवादीनाम् इव 'हिंकारेण' अव्यक्त-शब्द-पूर्वकं 'अभिजिघ्रामि' त्वदीयं मस्तकमिति यावत् ॥ १९ ॥

হে পুত্র! যে হেতুক মদীয় প্রত্যেক অঙ্গ হইতে ত্বদীয় প্রত্যেক অঙ্গ গঠিত হইয়াছে এবং তুমি আমার হৃদয় হইতে উৎপন্ন হইয়াছ অতএব তুমি প্রসিদ্ধ বেদাধ্যায়ী হইবা, অতএব প্রার্থনা করি—তুমি শত শরৎ* আয়ু লাভ কর ॥ ১৭

হে পুত্র! প্রস্তরের ন্যায় দৃঢকায় হও, পরশুর ন্যায় স্বয়ং অচ্ছেদ্য ও শত্রুর ছেদক হও, সুবর্ণের ন্যায় যত্নে রক্ষণীয় (অর্থাৎ গুণবান্) হও, তুমি আমার আত্মা হইতেছ—অকালে মৃত হইও না প্রত্যুত শত শরৎ জীবিত থাক ॥ ১৮

হে পুত্র! এই আমি গোপ্রভৃতি পশুগণের ন্যায় অস্ফুট শব্দ পুরঃসর ত্বদীয় মস্তক আঘ্রাণ করি ॥ ১৯

इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

१७—प्रजापतिः देवता । यजुः । शिरआघ्राणे विनियोगः ।

* সেকালে শরৎকালই বৎসরের প্রথম ঋতু বলিয়া স্বীকৃত হইত।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ षष्ठः खण्डः ॥

आय मगात् सविता चुरेण ॥ १ ॥ उष्णेन वाय उदकेनैधि ॥ २ ॥ आपउन्दन्तु जीवसे ॥३॥ विष्णोर्दंष्ट्रोसि ॥ ४ ॥ ओषधे त्रायस्वैनम् ॥ ५ ॥ स्वधिते मैनं

हे कुमार! "सविता" सवितृस्वरूपः 'अयं' नापितः 'क्षुरेण' वपनास्त्रेण सह क्षुरंगृहीत्वेति यावत् 'आ अगात्' आभिमुख्येन सयत्नः आगतः ॥ १॥

हे 'वायो' देव! अत्रैव समये 'उष्णेन' 'उदकेन' सह 'एधि' एहि ॥ २ ॥

'आपः' जलदेवता कुमारस्यास्य 'जीवसे' निरुपद्रव-जीवनाय इमम् 'उन्दन्तु' क्लेदयन्तु ॥ ३ ॥

हे क्षुर! त्वं 'विष्णोः' देवस्य 'दंष्ट्रोसि' दन्तो भवसि ॥ ४ ॥

हे 'ओषधे!' लाजारूप! भक्ष्यद्रव्य! 'एनं' वालकं 'त्रायस्व' निर्भयं कुरु ॥ ५ ॥

হে কুমার! সবিতৃ-স্বরূপ এই নাপিত ক্ষুর লইয়া আসিয়া উপস্থিত হইয়াছে ॥ ১

হে বায়ুরূপী নাপিত! উষ্ণোদক গ্রহণ পুরঃসর আগমন কর ॥ ২

হে জলদেব! এই কুমারের নিরুপদ্রব জীবিতার্থ এই মস্তক সিক্ত কর ॥ ৩

হে ক্ষুরদেবতা! তুমি বিষ্ণুদেবতার দ্রংষ্টা স্বরূপ হইতেছ ॥ ৪

१—६ एषां षण्णां प्रजापतिः देवता । निगदाः । चूड़ाकरणाङ्गकार्य्ये विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ह्निꣳसोः॥६॥ येन पूषा बृहस्पते र्वायोरिन्द्रस्य चावपत्॥ तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे ॥७॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुष मग-

हे 'स्वधिते !' 'एनं' कुमारं 'मा हिंसीः' हिंसां मा कुरु अस्य रक्तपातो यथा न स्यादिति भावः ॥ ६ ॥

'येन' अस्त्रेण 'पूषा' देवः 'बृहस्पतेः' देवस्य किञ्च 'वायोः' देवस्य 'च' अपिच 'इन्द्रस्य' देवस्य 'अवपत्' वपनं केशस्य कृतवान्, 'तेन' एव 'ब्रह्मणा' ब्रह्मभूतेन अस्त्रेण 'ते' तव 'जीवातवे' अरोग-जीवनाय 'दीर्घायुष्ट्वाय' बहुतरायुषे, 'वर्चसे' तेजो विवृद्धार्थञ्च वपामि केशानिति शेषः ॥ ७ ॥

त्रीणि बाल-युव-स्थविरत्वानि आयूंषि त्र्यायुषं। 'जमदग्नेः' 'यत्' 'त्र्यायुषं'—'काश्यपस्य' यत् 'त्र्यायुषं'—'अगस्त्यस्य' यत् 'त्र्यायुषं' 'देवानां' यत् 'त्र्यायुषं' 'तत्' 'त्र्यायुषं 'ते' 'अस्तु' भवतु ॥ ८ ॥

হে অন্ন! (লাজা, খৈ) এই বালকের ভয় অপনোদন কর ॥ ৫

হে সবিতঃ! এই কুমারের মস্তকে যেন রক্তপাত না হয়! ॥ ৬

পূষা দেবতা যে অস্ত্রে বৃহস্পতির, যে অস্ত্রে বায়ুর, যে অস্ত্রে ইন্দ্রের কেশ বপন করিয়াছেন—ব্রহ্মস্বরূপ সেই অস্ত্রে তোমার কেশ বপন করিতেছি—এই কার্য্যফলে তুমি দীর্ঘায়ু, নীরোগ ও তেজস্বী হইবা ॥ ৭

७—प्रजापतिः देवता। उष्णिक् छन्दः। केश-वपने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्र्यम्बकं त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं तत्ते अस्तु त्र्यायुषम्॥८॥
अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा॥ ९ ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्याधिपते ! 'अग्ने!' 'अहम्' 'इदं' 'व्रतं' ब्रह्मचर्य्यं 'चरिष्यामि' आचरिष्यामि, 'तत्' तस्मात् 'ते' तुभ्यं 'प्रब्रवीमि' आवेदयामि त्वत्प्रसादेन 'तत्' 'शकेयं' चरितुमिति यावत् किञ्च 'तेन' तत्फलेन 'ऋध्यासं' समृद्धियुक्तो भवेयम्—इत्यञ्च 'अनृतात्' अलीकावस्थातो निर्गतः 'सत्यं' ब्रह्म तत्प्राप्तये धृत मेतद् व्रतम् 'उपैमि' उपगच्छामि प्राप्नोमि ॥ ९ ॥

জমদগ্নির যে অবস্থাত্রয়*—কশ্যপের যে অবস্থাত্রয়—অগস্ত্যের যে অবস্থাত্রয়—দেবগণের যে অবস্থাত্রয়, তাহা তুমি লাভ কর ॥ ৮

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে অগ্নে ! আমি এই ব্রহ্মচর্য্য ব্রত আচরণ করিব, সেই জন্য প্রার্থনা করি—তৎপ্রসাদে যেন উহা নির্ব্বাহ করিতে পারি ! এবং ঐ ব্রত ফলে যেন ব্রহ্মবর্চ্চস লাভ করিতে পারি !—এই সমস্ত অভিপ্রায়ে বিদ্যমান অবস্থা হইতে নির্গত হইয়া সত্যস্বরূপ প্রাপ্তির জন্য এই ব্রত অবলম্বন করিতেছি ॥ ৯

८—प्रजापतिः देवता । यजुः । आशीःकरणे विनियोगः ।

९—अग्नि र्देवता । निगदः । उपनयन-होमे विनियोगः ।

* বাল্য, যুবা, বৃদ্ধ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यो समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥१० ॥
सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेन र्ध्यो समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥ ११ ॥
चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यो समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥१२ ॥
व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'वायो' ! अहमित्यादि पूर्ववत् ॥ १० ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'सूर्य्य !' अहमित्यादि पूर्ववत् ॥ ११ ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'चन्द्र !' अहमित्यादि पुर्ववत् ॥ १२ ॥

हे 'व्रतानाम्' उपनयनादीनां कार्य्याणां 'व्रतपते !' इन्द्र ! अहमित्यादि पुर्ववत् ॥ १३ ॥

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে বায়ো ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১০

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে সূর্য্য ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১১

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে চন্দ্র ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১২

१०—वायु र्देवता। निगदः। उपनयन-होमे विनियोगः।

११—सूर्य्यो देवता। निगदः। उपनयन-होमे विनियोगः।

१२—चन्द्रो देवता। निगदः। उपनयन-होमे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तच्छकेयं तेनर्ध्यां समिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥ १३ ॥ आगन्त्रा समगन्महि प्रसुमर्त्तं युयोतन॥ अरिष्टाः सञ्चरेमहि स्वस्ति चरतादयम् ॥१४॥ अग्निष्टे हस्त मग्रहीदयमा हस्तमग्रहीन्मित्र स्त्वमसि

हे अग्न! 'आगन्त्रा' ब्रह्मचर्य्ये आगमनशीलेन अनेन वटुना सह वयम् आचार्य्यादयः त्वां 'समगन्महि' उपास्महे । त्वं हि एनं वालकं 'सुमर्त्तं' शोभनमनुष्यं 'युयोतन' ब्रह्मचर्य्ये नियुक्तं कुरु । 'अरिष्टाः' विघ्नाः अस्य वयमेव 'सञ्चरेमहि' उपभुञ्जामः 'अयं' वालकः "स्वस्ति" सुखं 'चरतात्' भुञ्जतात् ॥१४॥

हे वालक! 'ते' तव 'हस्तम्' इदम् मया गृहीतम् 'अग्निः' देवः 'अग्रहीत्' गृहीतवान्, शरणं दत्तवानित्यर्थः मद्ग्रहणेन तस्यैव ग्रहणं सिद्ध मिति चाशयः, यथा सविता देवः 'हस्तम्' 'अग्रहीत्'; तथैव अर्य्यमा देवस्य "हस्तम्" 'अग्रहीत्' । वालक! ब्रह्मचर्य्या वस्थः 'त्वं' 'कर्मणा' अहिंसादि-

সমস্ত ব্রতের শ্রেষ্ঠ-উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে ইন্দ্র! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১৩

হে অগ্নে! ব্রহ্মচর্য্য ব্রতে প্রবৃত্ত এই বালকের সহিত আমরা (আচার্য্য প্রভৃতি) তোমার উপাসনা করিতেছি, তুমি এই বালককে এই ব্রত নির্ব্বাহে উপযুক্ত কর; এই বালকের বিঘ্ন সকল আমরাই ভোগ করিতে স্বীকৃত আছি, এ বালক সুখে কালযাপন করুক ॥ ১৪ ॥

१३—इन्द्रो देवता: । निगदः उपनयन-होमे विनियोगः ।

१४—अग्नि र्देवता । अनुष्टुप् छन्दः । आचर्य्य पठने विनियोगः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्ण्णाग्नि राचार्य्यस्तव ॥ १५ ॥ ब्रह्मचर्य्य मागा मुपमानयस्व ॥ १६ ॥ को नामास्यसौ नामास्मि ॥१७

देवस्य ते सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ता-

व्यवहारेण 'मित्रः' सर्व्वेषां मित्रभूतः 'असि' 'अग्निः', देवः अयम् 'तव' 'आचार्य्यः' वेदोपदेशकः इति जानीहि, मामग्नि-तुल्यमव गच्छेति वा भावः ॥ १५ ॥

हे गुरो ! अहम् इदानीम् 'ब्रह्मचर्य्यम्' व्रतम् 'आगाम्' स्वीकृतवान्, अथ 'मा' माम् 'उपनयस्व' आत्म-समीपं प्रापय ॥१६ ॥

हे कुमार ! 'कः नाम' किन्नामधेयः त्वम् 'असि' भवसि ?

হে বালক ! এই আমি তোমার হস্ত গ্রহণ করিলাম (অর্থাৎ শরণ দান দিলাম) ; আমার এই হস্ত গ্রহণেই তোমার অগ্নি দেবতা-কর্ত্তৃক হস্ত গ্রহণ সিদ্ধ হইল এবং ইহাতেই সবিতৃ-দেব-কর্ত্তৃকও হস্ত গ্রহণ সম্পন্ন হইল ও অর্য্যমা দেবতা-কর্ত্তৃকও হস্ত গৃহীত হইল। হে বালক ! এই ব্রহ্মচর্য্য অবস্থাতে সমস্ত জীবের প্রতি অহিংসা ভাব ধারণ করিবা, সকল জীবই তোমার মিত্র জানিবা এবং আমাকে (আচার্য্যকে) অগ্নি তুল্য সম্মানাস্পদ জ্ঞান করিবা। (অথবা এই অগ্নিকেই আচার্য্য বলিয়া জানিবা)।১৫

হে গুরো ! আমি সম্প্রতি ব্রহ্মচর্য্য ব্রত গ্রহণ করিলাম, অতঃপর আপনি আমাকে উপনয়ন (আত্ম সমীপে নয়ন) করুন।১৬

হে কুমার ! তুমি কিন্নামধেয় ? অর্থাৎ তোমার নাম কি ?—হে গুরো ! আমার এই নাম।১৭

१५—अग्नि र्देवता। यजुः। हस्तं ग्रहणे विनियोगः।

१६—अग्निर्देवता। यजुः। ब्रह्मचारि-प्रार्थने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

भ्यां हस्तं गृह्णाम्यसौ ॥ १८ ॥ सूर्य्यस्यावृत मन्वावर्त्त-
स्वासौ ॥१९॥ प्राणानां ग्रन्थि रसि मा विस्रसोऽन्तक इदं
ते परिददाम्यमुम् ॥२०॥ अहुर इदं ते परिददाम्यमुम् ॥२१

हे गुरो ! अहं 'असौ नाम' एतन्नामकः 'भक्ति' भवामि ॥ १७ ॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'ते' तव 'हस्तं' 'सवितुर्देवस्य' 'प्रसवे' अनुज्ञाते सति 'अश्विनोः' देवयोः 'बाहुभ्यां' 'पूष्णः' पूष-देवस्य 'हस्ताभ्यां' 'अहं' 'गृह्णामि' ॥ १८ ॥

असौ' हे देवशर्मन् ! त्वं 'सूर्य्यस्य' 'आवृतम्' प्रदक्षिणम् 'आ' आभिमुख्येन 'वर्त्तस्व' कुरु ॥ १९ ॥

हे 'नाभे' ! त्वं 'प्राणानां' प्राणवाय्वादि-वाहि-नाड़ीनां 'ग्रन्थिः' मिलनस्थानं 'असि' ; हे 'अन्तक !' 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमीति भावः ॥ २० ॥

हे 'अहुरे !' वायो ! 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमि ॥ २१ ॥

হে দেব শর্ম্মন্ ! আমি সবিতা দেবতার অভিপ্রায়ানুসারে অশ্বি নামক দেব দ্বয়ের সাহায্যে, পূষা দেবতার হস্ত দ্বারা তোমার হস্ত গ্রহণ করিতেছি ।১৮

হে দেব শর্ম্মন্ ! ভালরূপে সূর্য্যকে প্রদক্ষিণ কর ।১৯

হে নাভে ! তুমি প্রাণ বায়ু প্রভৃতি বায়ু সমস্তের গ্রন্থি

१७—अग्नि र्दैवता । यजुः । प्रश्न-प्रतिवचने विनियोगः ।

१८—अग्नि र्दैवता । यजुः । पाणि-स्वीकरणे विनियोगः ।

१९—सूर्य्यो देवता । यजुः । सूर्य्य-प्रदक्षिणे विनियोगः ।

२०—यमो देवता । यजुः । नाभि-स्पर्शने विनियोगः ।

२१—वायुर्द्देवता । यजुः । नाभ्यालभ्यने विनियोगः ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृशन इदं ते परिददाम्यमुम्॥२२॥ प्रजापतये त्वा परिददाम्यसौ॥ २३॥ देवाय त्वा सवित्रे परिददाम्यसौ॥ २४॥ ब्रह्मचार्य्यस्यसौ॥ २५॥ समिधमाधेह्य-

हे 'कृशन!' कृशानो! 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमि॥ २२॥

'असौ' देवशर्म्मन्! 'त्वा' त्वां 'प्रजापतये' देवाय 'परि ददामि' सर्व्वतः शरणापन्नं करोमि॥ २३॥

'असौ' देवशर्म्मन्! 'त्वा' त्वां 'सवित्रे' 'देवाय' 'परि ददामि' सर्व्वतः शरणापन्नं करोमि॥ २४॥

'असौ' देवशर्म्मन्! 'ब्रह्मचारी' 'असि' भवसि—इति मनसि स्वीकुरु इति प्रैषणम्॥ २५॥

স্বরূপ, মিলন স্থান হইতেছ—হে অন্তকারিন্! এই বালক-শরীর তোমার করে সর্ব্বপ্রকারে সমর্পণ করিতেছি, রক্ষাকর।২০

হে বায়ো! এই বালককে সর্ব্বপ্রকারে তোমার শরণাপন্ন করিতেছি।২১

হে কৃশানো! এই বালককে সর্ব্ব প্রকারে তোমার শরণাপন্ন করিতেছি।২২

হে দেবশর্ম্মন্! তোমাকে সর্ব্ব প্রকারে প্রজাপতি দেবতার শরণাপন্ন করিতেছি।২৩

হে দেবশর্ম্মন্! তোমাকে সর্ব্ব প্রকারে সবিতা দেবতার শরণাপন্ন করিতেছি।২৪

হে দেবশর্ম্মন্! তুমি ব্রহ্মচারী হইতেছ—ইহা তুমি অবগত হও।২৫

---

२२ — अग्नि र्देवता। यजुः। हृदय-स्पर्शने विनियोगः।
२३ — प्रजापति र्देवता। यजुः। दक्षिणांस-स्पर्शने विनियोगः।
२४ — सविता देवता। यजुः। वामांस-स्पर्शने विनियोगः।
२५ — अग्नि र्देवता। यजुः। ब्रह्मचर्य्य-कथने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोऽशान कर्म कुरु मा दिवा स्वाप्सीः ॥ २६ ॥ इयं दुरु-क्तात्परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात् ॥ प्राणापानाभ्यां बलमाहरन्ती स्वसा देवी सुभगा मे-खलेयम् ॥२७॥ ऋतस्य गोप्त्री तपसः परस्वी घ्नती रक्षः

हे आयुष्मन् ! 'समिधम्' समित् काष्ठम् 'आधेहि' आधानं कुरु अग्नाविति शेषः, प्रत्यह मिति विवेकः । 'अपः' 'अशान' आचमनीदकं प्रतिकर्म्म प्राशय । 'कर्म्म' गुरु-सेवा 'कुरु' नित्य मिति भावः । 'दिवा' अहनि 'मा स्वाप्सीः' शयनं मा कार्षीः ॥ २६ ॥

'इयं' 'मेखला' 'दुरुक्तात्' व्रात्य-नाम-दुरपवाद वचनात् 'परिबाधमाना' अपसारयन्ती 'वर्णं' ब्राह्मणाख्यं 'पवित्रं' द्विजत्वेन विशुद्धं 'पुनती' कृतवती सती 'मे' ममान्तिके 'आ अगात्' आगतवती ; 'इयं' मेखला 'प्राणापानाभ्यां' शरीरस्थ-वायुभ्यां 'बलम्' 'आहरन्ती' सम्पादयन्ती सती 'सुभगा' कल्याणी 'स्वसा देवी' भगिनी इव भवति ॥ २७ ॥

হে আয়ুষ্মন্ ! প্রতি দিন তুমি অগ্নিতে সমিৎ প্রক্ষেপ করিবা অর্থাৎ নিত্য হোম করিবা। সতত আচমন করিবা অর্থাৎ শুচি থাকিবা। গুরুর সেবায় রত থাকিবা। কদাপি দিবসে নিদ্রিত হইবা না।২৬

ব্রাত্য রূপ দুরপবাদের বাধক রূপী এই মেখলা বিপ্র-

२६—अग्नि र्देवता । यजुः । उपदेश-कर्म्मणि विनियोगः ।

२७—अग्नि र्देवता । उष्णिक् छन्दः । मेखला परिधापने विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहमाना अरातीः॥ सा मासमन्त मभि पर्य्येहि भद्रे धर्त्तारस्ते मेखले मा रिषाम॥ २८॥ तत्सवितुर्वरे-

हे 'मेखले!' त्वं 'ऋतस्य' ब्रह्मचर्य्य-लक्षणस्य सत्यस्य धर्म्मणः 'गोप्त्री' रक्षयित्री असि। 'तपसः' वेदाध्ययनस्य 'परस्त्री' सर्व्वस्वभूता असि। 'रक्षः' रक्षसः विघ्नकारिणः 'घ्नती' विनाशयित्री असि। 'अरातीः' अरातीन् शत्रून् सहमाना अभि-भवन्ती। 'सा' त्वं 'समन्त' समन्तात् 'मा' माम् 'अभि' लक्ष्य 'पर्य्येहि' आगच्छ। हे 'भद्रे! कल्याणि! 'ते' तव 'धर्त्तारः' धारणकारिणः वयं 'मा रिषाम' केनापि मा हिंसिष्म॥२८

'सवितुः' जगत्-प्रसवितुः 'देवस्य' सर्व्वत्र द्योतमानस्य 'तत्' 'भर्गः' तेजः 'धीमहि' ध्यायामः चिन्तयामः। कस्य देवस्य?

কুলোদ্ভব বালকদিগকে দ্বিজরূপে পবিত্র করিতে সকলের নিকটে আগমন করিয়া থাকেন। এই মেখলা প্রাণাপান নামক শরীরস্থ বায়ু দ্বারা বল আহরণ করত কল্যাণী ভগিনীর ন্যায় উপকারিণী হইয়া থাকেন।২৭

হে মেখলে! তুমি ব্রহ্মচর্য্য রূপ সত্য ধর্ম্মের রক্ষয়িত্রী হইতেছ, বেদাধ্যয়ন রূপ তপস্যার প্রধান উপকরণ হইতেছ, বিঘ্নকারিগণের বিনাশ কারিণী হইতেছ। শত্রু বর্গের অভিভব কারিণী হইতেছ। তুমি সর্ব্ব প্রকারে আমার মঙ্গল লক্ষ্য করত আগমন কর। হে কল্যাণি! তোমার ধারণকারী আমি যেন কোন রূপ ক্লেশ না পাই।২৮

সেই জগৎ-প্রসবিতা, সর্ব্বত্র দ্যোতমান বস্তুর (গুরু

२८—मेखला देवता। उष्णिक् छन्दः। मेखला-परिधापने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

যো নো ধিয়ো যো নঃ প্রচোদয়াৎ ॥২৯ ভূর্ভুবস্বরোঁ ॥ ৩০ ॥ সুশ্রবঃ সুশ্রবসং মা কুরু যথা ত্বং সুশ্রবঃ সুশ্রবা দেবেষ্বেব মহং সুশ্রবঃ সুশ্রবা

ইত্যাহ—'যঃ' দেবঃ 'নঃ' অস্মাকং 'ধিয়ঃ' বুদ্ধীঃ 'প্রচোদয়াৎ' প্রকৃষ্টং যথা স্যাৎ তথা চোদয়তি প্রেরয়তি ॥২৯॥

'ভূঃ' ভূলোকঃ। 'ভুবঃ' অন্তরীক্ষলোকঃ। 'স্বঃ' দ্যুলোকঃ। এষু ত্রিষু লোকেষ্বেব 'ওঁ' আত্মা ব্যাপকঃ ॥৩০॥

হে 'সুশ্রবঃ' সুষ্ঠু শ্রবো যশঃ যস্য তথাবিধ! দণ্ড! 'মা' 'মাং' সুশ্রবসং 'কুরু'। হে 'সুশ্রবঃ! ত্বং যথা 'দেবেষু' দীপ্যমানেষু পদার্থসমূহেষু 'সুশ্রবাঃ' সুবিখ্যাতঃ, হে 'সুশ্রবঃ!' 'ব্রাহ্মণেষু' মধ্যে 'অহম্' অপি 'এবং' 'সুশ্রবাঃ' 'ভূয়াসম্' ॥ ৩১

কর্তৃক উপদিষ্ট) তেজের চিন্তা করি। যে দ্যোতমান আমাদের বুদ্ধি বৃত্তিকে উৎকৃষ্ট পথে প্রেরণ করেন।২৯

এই ভূলোক। এই ভুব (অন্তরীক্ষ) লোক। এই স্বঃ (স্বর্গ অথবা দ্যু) লোক।—এই লোকত্রয়েতেই ওঁ (আত্মা) সর্ব্বব্যাপক রূপে ভাসমান রহিয়াছেন।৩০

হে প্রথিত-কীর্ত্তে দণ্ড! আমাকে প্রথিত-কীর্ত্তি কর। হে প্রথিত-কীর্ত্তে! দীপ্যমান পদার্থ সমস্তের মধ্যে তুমি যেরূপ সুবিখ্যাত, হে সুবিখ্যাত! আমিহ যেন ব্রাহ্মণগণের মধ্যে সেইরূপ সুবিখ্যাত হই।৩১

২৯—অগ্নি র্দেবতা। গায়ত্রীচ্ছন্দঃ। উপদেশ কর্ম্মণি বিনিয়োগঃ।

৩০—অগ্নি র্দেবতা। যজুঃ। উপদেশ কর্ম্মণি বিনিয়োগঃ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्राह्मणेषु भूयासम् ॥ ३१ ॥ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे ॥ यथात्वमग्ने समिधा समिध्यस्वेव मह्ममायुषा मेधया वर्च्चसा प्रजया पशुभि र्ब्रह्मवर्चसेन धनेनान्नाद्येन समेधिषीय स्वाहा ॥ ३२ ॥ पुनर्मामै-त्विन्द्रियं पुनरायुः पुनर्भगः ॥ पुनर्द्रविण मैतु मा पुन

'बृहते' महते 'जातवेदसे' जातप्रज्ञाय 'अग्नये' 'समिधम्' 'आहार्षम्' आहृतवान् । हे 'अग्ने' ! 'त्वं' 'यथा' 'समिधा' अनया 'समिध्यसि' 'एवं' 'अहम्' 'आयुषा' 'मेधया' 'वर्च्चसा' तेजसा, 'प्रजया' पुत्रादिलक्षणेन, 'पशुभिः' गवादिभिः 'ब्रह्म वर्च्चसेन', 'धनेन', 'अन्नाद्येन' अन्न-प्रभृति-भोग्य-वस्तु-समस्तेन 'सम्' सम्यक् 'एधिषीय' वृद्धियुक्तः स्याम् ॥३२॥

रेतःस्कन्दनादि-दोषेण यत् 'इन्द्रियम्' अपचितम् 'तत्' 'पुनः' 'माम्' 'एतु' सम्यक् आगच्छतु । तथाच यत् 'आयुः' क्षीणम्, तत् 'पुनः' एतु । किञ्च तेनैव कर्म्मणा यः 'भगः' ऐश्वर्य्य

জাত-প্রজ্ঞ, অতি প্রবৃদ্ধ, অগ্নির উদ্দেশে সমিৎ আহরণ করা হইয়াছে। হে অগ্নে! তুমি যেরূপ এই সমিৎ প্রদানে সমৃদ্ধ হইয়াছ আমিও সেইরূপ আয়ু, মেধা, বর্চ্চ, তেজ, প্রজা, পশু, ব্রহ্মবর্চ্চস, ধন, অন্নপ্রভৃতি সর্ব্বপ্রকারে বৃদ্ধিযুক্ত হই।৩

রেতঃ-স্কন্দনাদি দোষে যে ইন্দ্রিয় অপচিত হইয়াছে, তাহা আমার প্রত্যাবৃত্ত হউক। আমার যাবৎ আয়ু ক্ষীণ হইয়াছে, তৎ সমস্ত প্রত্যাবৃত্ত হউক। যাহা কিছু মানাদি নষ্ট হইয়াছে, তাহা প্রত্যাবৃত্ত হউক। যে সমস্ত দ্রব্যাদি অপব্যয়িত হইয়াছে, তাহা প্রত্যাবৃত্ত হউক। অধিক কি,

३१ – दण्डी देवता । पङ्क्तिश्छन्दः । दण्ड ग्रहणे विनियोगः ।
[illegible] देवता । [illegible] । [illegible]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्राह्मणा मैतु मा ॥३३॥ पुनर्मनः पुनरात्मा म आगात् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आगात् ॥ वैश्वानरो अदब्धः स्तनूपा अन्त स्तिष्ठतु मे मनोऽमृतस्य केतुः स्वाहा ॥ ३४ ॥

मानादिलक्षणं नष्टं, स च 'पुनः' ऐतु। अपि हि तथा दुराचारि प्रवृत्ते यत् 'द्रविणम्' व्ययितं, तच्च 'पुनः' 'मा' माम् 'ऐतु' आगच्छतु। किमधिकेन यदि कथमपि 'ब्राह्मणम्' ब्राह्मण्य मपि क्षयितं स्यात्, तदपि 'मा' माम् 'पुनः' 'ऐतु' आगच्छतु ॥ ३३ ॥

'मे' मम: 'मनः' 'पुनः' आगात्' असत्पथात् प्रत्यागतं स्वस्थ भूतम्। 'चक्षुः' अपि 'पुनः' आगात्। 'मे' मम 'श्रोत्रम्' अपि 'पुनः' आगात्। शरीरस्थाना मिन्द्रियादीनां 'अदब्धः' अहिंसिता, 'तनूपाः' शरीर-रक्षकः, 'वैश्वानरः' आभ्यन्तरिकोऽग्निः 'अन्तः' यथास्थानं तिष्ठतु। 'मे' मम 'मनः' 'अमृतस्य' आत्मनः 'केतुः' प्रज्ञारूपः स्यात् ॥ ३४ ॥

ঐ অপকার্য্যে যদি কোন প্রকারে আমার ব্রাহ্মণ্যও ক্ষয়িত হইয়াথাকে তাহাও আমার নিকটে পুনরাগমন করুক।৩৩

আমার মন অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া স্বস্থ ভাব অবলম্বন করুক, চক্ষুরিন্দ্রিয়ও অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হউক, শ্রবণেন্দ্রিয়ও অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হউক। শরীরস্থ ইন্দ্রিয় সমস্তের সহায়কারী, শরীর-রক্ষক, বৈশ্বানর অগ্নিও যথাস্থানে স্থিত হউন। আমার মন, অমৃত পুরুষ সেই পরমাত্মার পতাকা স্বরূপ হউক অর্থাৎ প্রজ্ঞারূপে পরিণত হউক।৩৪

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य षष्ठः खण्डः समाप्तः ॥

३३, ३४—अग्निर्देवता। निगदौ। इन्द्रियापचारे प्रायश्चित्त-कर्म्मणि समित् प्रक्षेपे।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ सप्तमः खण्डः ॥

ये अप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मरूको मनोहाः ॥ खलो विरुजस्तनूदूष्टिरिन्द्रियहा अति तान्सृजामि ॥१॥ यदपां घोरं यदपां क्रूरं यदपामशान्त मतितत्सृजामि ॥२॥ यो रोचन स्तमिह गृह्णामि तेनाहं

'अप्सु अन्तः' इह जलमध्ये 'गोह्यः' १ 'उपगोह्यः' मरूकः, ३ 'मनोहाः' ४ 'खलः' ५ 'विरुजः' ६ 'तनूदृष्टिः' ७ 'इन्द्रियहाः, ८ इति 'ये' अष्टविधाः 'अग्नयः' शरीर-नष्ट-कारिण स्तेजसः 'प्रविष्टाः' स्थिताः, 'तान्' अग्नीन् 'अतिसृजामि' अतिशयेन वर्जयामि ॥ १ ॥

किञ्च 'अपाम्' उदक-जातीनां 'यत्' 'घोरं', 'अपां' 'यत्' 'क्रूरं', 'अपां' 'यत्' 'अशान्तम्'—एतत् त्रिविधम् अहितकरं गुणं 'तत्' तदपि 'अति सृजामि' अतिशयेन वर्जतायि ॥ २ ॥

'यः' अग्निः 'रोचनः' शरीर-दीप्तिकरः 'इह' जले 'तम्'

এই জলের মধ্যে যে গোহ্য১ উপগোহ্য২, মরূক৩, মনোহা৪, খল৫, বিরূজ৬, তনূদৃষ্টি৭, ইন্দ্রিয়হা৮—নামক শরীর-হানি-কারক অষ্ট প্রকার অগ্নি থাকে ; তৎ সমস্তকে আমি বিদূরিত করিতেছি ।১———এবং জলের ঘোর নামক যে দোষ, ক্রূর নামক যে দোষ, অশান্ত নামক যে দোষ তাহাও বিদূরিত করিতেছি ।২

१,-२—अनयोः अग्निर्देवता । त्रिगद्ी । समावर्त्तन-जलाभिमन्त्रणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मामभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥ यशसे तेजसे ब्रह्मवर्चसाय बलायेन्द्रियाय वीर्यायान्नाद्याय रायस्पोषाय त्विष्या अपचित्यै ॥ ४ ॥ येन स्त्रिय मकृणुतं येनापा वृशतᳲ सुरां ॥ येना ऽक्षानभ्यषिञ्चतं येनेमां पृथिवीं महीं । यद्वान्तदश्विना यशस्तेनामा मभिषिञ्चतम् ॥५॥ उद्यन्

एत्र 'गृह्णामि' अनन्तरञ्च 'अहम्' ब्रह्मचारी 'तेन' एव जलेन 'माम्' आत्मानं अभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

किमर्थं -मित्याचष्टे— 'यशसे', 'तेजसे', ब्रह्मवर्चसाय, 'बलाय', 'इन्द्रियाय', 'वीर्य्याय', 'अन्नाद्याय' अन्नादि-लाभाय, रायस्पोषाय' धनस्य पोषणाय, 'त्विषे' कान्त्यै, 'अपचित्यै' सम्मान-प्राप्तये च (पूर्व्वेण सम्बन्धः) ॥ ४ ॥

हे 'अश्विनौ' अश्वाविव वेगगमनशालिनौ ! 'येन' कर्म्मणा 'स्त्रियं' स्त्रीजातिं 'अकृणुतम्' भोग्यत्वेन निरूपितवन्तौ— 'येन' कर्म्मणा 'अपाम्' 'सुराम्' 'वृशतम्' गमयितवन्तौ, अपः सुरात्वेन भोग्यान् कृतवन्तौ—'येन' कर्म्मणा 'अक्षान्' देवनान् भोग्यान् कृतवन्तौ—किमधिकेन, 'येन' 'इमां' 'महीं' महतीं

যে অগ্নি, শরীরের দীপ্তিকারী—তাহাই এই জলে গ্রহণ করিতেছি এবং আমি (ব্রহ্মচারী) সেই নির্দোষ জলে আপনাকে সিঞ্চন করিতেছি ।৩——ইহা দ্বারা আমার যশ, তেজ, ব্রহ্মবর্চ্চস, বল, ইন্দ্রিয়-সামর্থ্য, বীর্য্য, অন্নাদি, ধন-সঞ্চয়, কান্তি ও সম্মান লাভ হইবে ।৪

অশ্বের ন্যায় বেগ-গমনশীল হে সূর্য্য ও চন্দ্র ! তোমরা

३,-४ – अनयोः अग्निर्देवता । यजुः । समावर्त्तनाभिषेके विनियोगः ।

५—अश्विनौ देवते । षड़ष्टका-महापङ्क्तिश्छन्दः । समावर्त्तनाभिषेके विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्राजभृष्टिभि रिन्द्रो मरुद्भिरस्यात् प्रातर्यावभिर-स्यात्॥ दशसनिरसि दशसनि' मा कुरा त्वा वि-शाम्या माविश॥ ६ ॥ उद्यन् भ्राजभृष्टिभि रिन्द्रो

सुविपुलां 'पृथिवीं' समस्तामेव 'अभि अभिष्वतम्' तर्पितवन्तौ। 'वां' युवयोः तादृशं 'यत्' कर्म्म 'तत्' 'यशः' इत्याचक्षते। 'तेन' 'यशसा' 'माम्' 'अभिषिक्षतम्' मां यशस्विनं कुरुतम्-इति प्रार्थये ॥ ५ ॥

'इन्द्रः' (इदि परमैश्वर्य्ये तेजोरूप-परमैश्वर्य्य-योगादिन्द्र आदित्य उच्यते) आदित्यः 'उद्यन्' उदीयमानः त्वं 'भ्राजभृ-ष्टिभिः' दीप्तदृष्टिभिः 'मरुद्भिः' देवैः सह 'अस्यात्' किञ्च 'प्रातर्यावभिः' प्रातरागमनशीलैः अन्यान्यैश्च देवैः सह 'अस्यात्'। त्वं 'दशसनिः' दशानां सनिः सम्भजनीयः 'असि' भवसि, 'मा' मामपि तथैव 'दशसनिं' दशजनानां भजनीयं कुरु; अहम् 'आविशामि' उपगच्छामि अर्थित्वेन त्वामिति शेषः, त्वञ्च 'मा' माम् 'आविश' फलदातृत्वेनेति भावः ॥ ६ ॥

যে প্রকারে স্ত্রীজাতিকে পুরুষজাতির ভোগ্য বলিয়া স্থির করিয়া দিয়াছ, যে প্রকারে জলকেও সুরারূপে ভোগ্য করিয়াছ, পাশক (পাশা) গুলিকে যে প্রকারে ভোগ্য করিয়াছ, অধিক কি—এই সুবিপুল সমস্ত মহীমণ্ডলই যে প্রকারে পরিতৃপ্ত করিতেছ—তোমাদের সেই ক্রিয়াকে যশ বলা যায়, আমাকে সেইরূপ যশ প্রদান করিয়া যশস্বী কর। ৫

হে আদিত্য! তুমি দীপ্ত-দৃষ্টি মরুদ্‌গণের সহিত এবং

৬—৮ ঋচাং सूर्य्यो देवता। निगदः। सूर्य्योपस्थाने विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

মরুদ্ভি রস্থাত্ সান্তপনেভি রস্থাত্ শতসনি রসি শতসনিং কুর্বী ত্বাবিশাম্যা মাবিশ ॥ ৭ ॥ উদ্যন্ ভ্রাজভৃষ্টিভি রিন্দ্রো মরুদ্ভি রস্থা প্রাতর্যাবভি রস্থাত্॥ সহস্রসনি রসি সহস্রসনিং মা কুর্বী ত্বা বিশাম্যা মাবিশ ॥ ৮ ॥ চক্ষুরসি চক্ষু-ষ্টমস্যব

ইন্দ্র ইত্যাদি পূর্ব্ববত্। ত্বং 'শতসনিঃ' শতানাং সনিঃ সম্ভজনীয়ঃ 'অসি' ভবসি, 'মা' মামপি তথৈব "শতসনিং" শতজনানাং ভজনীয়ং কুরু। অহমিত্যাদি পূর্ব্ববত্ ॥ ৭ ॥

পুনরিন্দ্র ইত্যাদি পূর্ব্ববত্। 'সহস্রসনিঃ' সহস্রাণাং বহূনাম্ অনন্তানাং বা সনিঃ সম্ভজনীয়ঃ 'অসি' 'মা' মামপি তথৈব 'সহস্রসনিং' বহুনাং ভজনীয়ং কুরু। অহমিত্যাদি পূর্ব্ববত্ ॥ ৮ ॥

প্রাতরাশ-ভোজী অন্যান্য দেবগণেরও সহিত উদিত হইয়া দেদীপ্যমান রহিয়াছ । তুমি যেরূপ দশজনের পূজনীয়, আমাকেও সেইরূপ দশজনের পূজনীয় কর। আমি যাচক রূপে তোমার নিকটে উপস্থিত হইয়াছি, তুমি দাতৃরূপে আমার নিকটে উপস্থিত হও। ৬

হে আদিত্য! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ। তুমি যেরূপ শত শত জনের পূজনীয় আমাকেও সেইরূপ শত শত জনের পূজনীয় কর। আমি যাচক ইত্যাদি।৭

হে আদিত্য! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ। তুমি যেরূপ সহস্র জনের পূজনীয়, আমাকে ও সেইরূপ সহস্র সহস্র জনের পূজনীয় কর আমি যাচক ইত্যাদি। ৮

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private And Personal Use Only

मे पाप्मानं जहि सोम स्त्वा राजाऽवतु नमस्ते स्तु मा-माहिꣳसीः ॥ ९ ॥ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मद वाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथादित्य व्रते वयन्तवानागसो

हे सूर्य्य! त्वं "चक्षुः" जगतां चक्षुभूतः 'असि' भवसि, किञ्च 'चक्षुश्च' यत् चक्षुधर्म्मं तदपि त्वमेवासि । 'मे' मम 'पाप्मानम्, 'अवजहि' नाशय । 'सोमः' चन्द्रः देवः 'राजा' ब्राह्मणानाम् ओषधीनाञ्च 'अवतु' आप्यायनं करोतु । 'ते' तुभ्यं 'नमः' 'अस्तु' । 'मा' मां 'मा हिंसीः' नष्टं मा कुरु ॥ ९ ॥

हे 'वरुण' ! 'अस्मत्' अस्माकं 'उत्तमं' उत्तमाङ्गे कण्ठादौ स्थितं 'पाशम्' 'उत्श्रथाय' उर्द्ध्वत एव शिथिलीकुरु ; 'मध्य-मं" मध्यमाङ्गे कण्ठादौ च स्थितं पाशम् 'वि' श्रथाय विशेषेण शिथिली कुरु ; 'अधमम्' अधमाङ्गे पादादौ च स्थितम्

হে সূর্য্য ! তুমি জগতের চক্ষুস্বরূপ হইতেছ এবং চক্ষুর যে শক্তি তাহাও তুমিই। আমার পাপ নষ্ট কর। প্রদীপ্ত এই চন্দ্রমা তোমাকে স্বীয় শীত কিরণদানে পরিতৃপ্ত করুন। তোমাকে নমস্কার। কেহ যেন আমাকে নষ্ট করিতে না পারে ! । ৯

হে বরুণ দেবতা ! আমার উত্তমাঙ্গে কণ্ঠাদিতে অবস্থিত পাশ, শিথিল করিয়া উপর হইতেই খসাইয়া দাও ; মধ্যমাঙ্গে কটি দেশাদিতে অবস্থিত পাশ শিথিল করত বিযুক্ত কর; অধমাঙ্গে পাদাদিতে অবস্থিত পাশও শিথিল করিয়া নীচভাগ

---

९ — सूर्य्यो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । सूर्य्योपस्थाने विनियोगः ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदितये स्याम ॥ १० ॥ श्रीरसि मयि रमस्व ॥ ११ ॥ नेत्र्यौ स्थो नयतं माम् ॥ १२॥ गन्धर्व्वी-सुपाव उपमा-

'अव' अथाय नीचत एव शिथिलीकुरु ॥ किञ्च हे 'आदितय" अदितेः अखण्डस्यांश ! 'अथ' अनन्तरं पाशमुक्ताः सन्तः 'वयं' 'तव' 'व्रते' कर्म्मणि 'अनागसः' निरपराधिनः यथा 'स्याम' तथा कुरु । किमर्थमित्याह—'अदितये' अखण्ड-फल-लाभाय ॥ १० ॥

हे माले ! त्वं 'श्रीः' शोभा 'असि' अतः त्वाम् प्रार्थये—'मयि' मम शरीरे 'रमस्व' विहर अवस्थानं कुरु ॥ ११ ॥

हे उपानहौ ! युवां 'नेत्र्यौ' नेतृरूपौण्यौ 'मां' देशाद् देशान्तरं सुखेन 'नयतम्' प्रापयतम् ॥ १२ ॥

हे दण्ड! त्वं गन्धर्व्वः रक्षणसमर्थः 'असि' भवसि, 'माम्'

হইতেই স্খলিত করিয়া দাও। হে অখণ্ডাংশ ! আমরা পাশমুক্ত হইয়া তোমার সন্তোষবিধান কার্য্যে অখণ্ড ফল লাভের নিমিত্ত যাহাতে নিরপরাধী থাকি এরূপ কর। ১০

হে মালা দেবতা ? তুমি শোভাস্বরূপা হইতেছ, অতএব প্রার্থনা করি—মদীয় শরীরে অবস্থান কর। ১১

হে উপানৎ দেবতারা ! তোমরা নয়নকারিণী হইতেছ (অর্থাৎ তোমাদের সাহায্যে কণ্টকাদিতে আবৃত দুর্গম পথেও অনায়াসে যাওআ যায়) আমার গমনে সুখকারিণী হও। ১২

१०—वरुणो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । मोचने विनियोगः ।

१२—श्री देवता । यजुः । स्रग्बन्धने विनियोगः ।

१२—उपानद्देवता । यजुः । उपानत्-परिधाने विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मव ॥ १३ ॥ यक्षमिव चक्षुषः प्रियो वो भूयासम् ॥१४॥ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तपरिमितः पविः ॥ जिह्वे मा विह्वलो वाचं चारु माद्येह वादय ॥१५॥ वनस्पते

'उपाव' समीपमागत्य रक्ष। पुनः कथयति—'माम्' 'उपाव' समीपमागत्य रक्ष, सततं सर्व्वतः रक्षेति यावत् ॥ १३ ॥

हे परिषदः! अहं 'वः' युष्माकं 'चक्षुषः' 'यक्षम्' यक्षः 'इव' 'प्रियः' 'भूयासम्', यक्षः यथा सर्व्वेषां प्रियः, तथा अहमपि भूयासम्-इति प्रार्थये ॥ १४ ॥

हे 'जिह्वे'! त्वं 'नकुली' नकुलीवत् 'ओष्ठापिधाना' ओष्ठाभ्यामाच्छादिता नकुली यथा विले प्रच्छन्ना भवति क्षणेनात्मप्रकाशं करोति पुनः क्षणेन प्रच्छन्ना भवति तथास्वभावा, अहञ्च 'विह्वलः' कामादिरिपुसाहचर्य्यात् 'पविः' वज्रः 'दन्तपरिमितः' अपि भवति, अश्लीलादिरूपः उच्चारित-वागपि वज्रा-

হে দণ্ডদেবতা! তুমি বিপদে রক্ষা করিতে সমর্থ হইতেছ অতএব তোমাকে গন্ধর্ব্ব বলা যায়, তুমি আমার নিকটে সতত অবস্থিতি কর। ১৩

হে সভাসদ্ মহোদয়গণ! আমি আপনাদের চক্ষে যেন যক্ষের ন্যায় প্রিয় হই! ।১৪

হে জিহ্বে! সর্ব্বদাই অধর ও ওষ্ঠের অভ্যন্তরে অবস্থিত তুমি নকুলীর ন্যায় হইতেছ, আমরা কামাদি রিপুর বশে সর্ব্বদাই বিহ্বল, দন্ত সাহায্যে উচ্চারিত কোন কোন

१३ – दण्डी देवता। यजुः। दण्ड ग्रहणे विनियोगः॥

१४—परिषदी देवताः। यजुः। वीक्षणे विनियोगः।

१५ – जिह्वा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। मुखापिधाने विनियोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ॥ गोभिः सन्नद्धो असि वीड्यस्व ॥ आस्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥ १६ ॥

वक्ता भवतीति भावः। अतः प्रार्थ्यते—'अद्य' 'इह' कर्म्मणि मां 'चारु' शोभनं 'वाचं' वचनं 'वादय' ॥ १५ ॥

हे 'वनस्पते !' वनस्पतिर्वृक्षः तदवयवेन काष्ठेन निर्म्मित हे रथ ! त्वं 'हि' निश्चयं 'वीड्वङ्गः' दृढाङ्गः 'भूयाः' किञ्च 'अस्मात्' अस्माकं 'सखा' सखि-रूपः सन् 'प्रतरणः' त्राता 'भूयाः' अपिच 'सुवीरः' वीरश्रेष्ठानां वाहकः 'भूयाः' । 'गोभिः' गोचतुष्टयैः 'सन्नद्धः' संयुक्तः 'असि', स त्वं 'वीड्यस्व' इहैव किञ्चित् क्षणं तिष्ठ। 'ते' तव 'आस्थाता' आरोही 'जेत्वानि' जेतुमुपयुक्तानि परपक्षीयसेनादलानि 'जयतु'॥ १६ ॥

বাক্যও বজ্রস্বরূপ প্রকাশ পায়; অতএব প্রার্থনা করি— অদ্য এই কার্য্যে আমাকে নির্দ্দোষ বাক্যের বক্তা কর। ১৫

হে বন্য-কাষ্ঠ-নির্ম্মিত রথ! তুমি নিশ্চয়ই দৃঢ়াঙ্গ, আমাদের সখারূপে বিপদে ত্রাতা হও ও বীর-শ্রেষ্ঠদিগের বহনকারী হও। গোসজ্জে সংযুক্ত হইয়াছ; কিঞ্চিৎক্ষণ এই স্থলেই স্থিতি কর; তোমার আরোহী রথী মহোদয় পরপক্ষীয় সেনাদলকে জয় করুন। ১৬

॥ इति सामवेदिये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य सप्तमः खण्डः समाप्तः ॥

१६—रथी देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। रथाभिमर्षनारोहणे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ अष्टमः खण्डः।

इमा मे विश्वतो वीर्यो भव इन्द्रस्य रक्षतं॥
पूषंस्त्वं पर्य्यावर्त्तयानष्टा आयंतुनो गृहान्॥१॥
इमा मधुमती र्मह्यमनष्टाः पयसा सह॥ गाव
आज्यस्य मातर इहेमाः सन्त भूयसीः॥२॥

'विश्वतोवीर्य्यः' सर्व्वतोवलशाली 'भव'; 'मे' मम 'इमाः' गाः सन्ति, 'तं' ताः 'च' 'रक्ष' हे 'पूषन्!' देव! 'त्वं' एनाः 'पर्य्यावर्त्तय' प्रत्यावर्त्तस्व यथा च इमाः 'अनष्टाः सत्यः 'नः' अस्माकं 'गृहान्' 'आयन्तु' प्रत्यागच्छन्तु तथा कुरु॥१॥

हे इन्द्र! 'इमाः' 'मधुमतीः' गाः 'पयसा' दुग्धेन 'सह' 'अनष्टाः' यथा स्युस्तथा 'मह्यं' प्रत्यर्पय किञ्च 'इमाः' 'भूयसीः' भूयस्यः बहवः 'गावः' 'इह' गृहे 'आज्यस्य' 'मातरः' जनयित्र्यः 'सन्तु' इति प्रार्थये॥२॥

ইন্দ্র তুমি বলশালী হও, আমার এই গোগুলি রক্ষা কর। হে পূষন্! তুমি ইহাদিগকে গোষ্ঠ হইতে প্রত্যাবৃত্ত করাইবা, যাহাতে ইহারা নির্ব্বিঘ্নে আমাদের ভবনে প্রত্যাগমন করিতে পারে!। ১।

হে ইন্দ্র! এই মধুমতী গো-সকল, যাহাতে অপরিমিত দুগ্ধবতী হয়—গোষ্ঠহইতে এইরূপ করিয়া আনয়ন কর এবং

१, २—इन्द्रोदेवता। अनुष्टुप्छन्दः। गोचारण-त्यागे विनियोगः।

For Private And Personal Use Only

गवाᳩ श्लेष्मासि गावो मयि श्लिष्यंतु ॥ ३ ॥ संग्रहण सङ्गृहाण ये जाताः पशवो मम ॥ पूषैषाᳩ शर्म यच्छतु यथा जीवन्तो अप्ययात् ॥ ४ ॥ भुवन म-सि साहस्र मिन्द्राय त्वा सृमो ददात् ॥ अक्षतम-

हे वत्स! त्वं 'गवां' 'श्लेष्मा' श्लेषकः 'असि' अतः त्वां प्रार्थये— 'गावः' इमाः 'मयि' मद्गृहे श्लिष्यन्तु स्वच्छन्दास्तिष्ठन्तु ॥ ३ ॥

हे सङ्ग्रहण! 'मम' गृहे 'ये' 'पशवः' गावः, 'जाताः', तान् 'सङ्गृहाण' रक्षां कुरु, 'एषां' गवां, 'पूषा' आदित्यः 'शर्म' कल्याणं, तथा 'यच्छतु' ददातु, यथा 'जीवन्तः' प्राणान् धारयन्तः एते, 'अप्ययात्' समयं निनुयः [एते आयुष्मन्तो भूयासुरिति भावः] ॥ ४ ॥

এই বহুতর গোবৃন্দ এই পরিবারে অপরিমিত ঘৃতের জনয়িত্রী হউক। ২।

হে বৎসেরা! তোমরা গো-সকলের স্বচ্ছন্দ আলিঙ্গনের বস্তু হইতেছ, অতএব প্রার্থনা করি—এই গোগুলি যেন ত্বৎ প্রসাদে মদীয় গৃহকে স্বচ্ছন্দ আলিঙ্গন করে অর্থাৎ এই গৃহেই যেন চিরকাল সুখে বাস করে। ৩।

হে সঙ্গ্রহণ! (পূষাদেব) আমার গৃহে যে সকল পশুরা হইয়াছে, তাহাদিগকে রক্ষা কর, এবং এই পশুদিগের (গোদিগের) পূষাদেব (আদিত্য) এরূপ কল্যাণ করুন, যাহাতে ইহারা প্রাণ ধারণ করতই সময়াতিবাহন করুক, অর্থাৎ

३—श्लेष्मा देवता । यजुः । गोवत्सनिरीक्षणे विनियोगः ।

४—अनुष्टुप्छन्दः । पूषा देवता । विलयन-होमे विनियोगः ।

रिष्टमिलादं ॥ ५ ॥ गोपोषणमसि गोपोषस्येशिषे गोपोषाय त्वा ॥ सहस्रपोषणमसि सहस्र पोषस्ये

हे स्वधिते ! अस्त्र ! त्वं 'भुवनं' भुवनोपकारकम् 'असि' भवसि, अतएव पशूनां साहस्रं बाहुल्यनिमित्तं 'असि', किञ्च 'इमोदेवः; 'त्वा' त्वां, 'इन्द्राय' 'अदात्' दत्त-वान्, कथम्भूतं त्वां ?—'अघतं' अभग्नं, नूतनं वा, 'अरिष्टं' विघ्ननाशनं, 'इलादं' अन्नदातारं ॥ ५ ॥

हे स्वधिते ! 'गोपोषणं' गवां पुष्टिकरं, 'असि', किञ्च गोपोषस्य गवां पुष्टेः 'इशिषे' वृद्धि-कर्त्ता 'असि' अतएव 'त्वा' त्वां गोपोषाय' गवां पुष्ट्यर्थं, गृहीतवान् इति सम्बन्धः—अपिच यतस्त्वं 'सहस्र पोषणं' बहूनां पशूनां पुष्टि निमित्तं 'असि' 'सहस्र पोषस्य' बहूनां पुष्टेः 'इशिषे' वृद्धिकर्त्ता, 'असि' अतस्त्व

ইহারা যাহাতে আয়ুষ্মান হউক এইরূপ কল্যাণ প্রদা কর ॥ ৪

হে অস্ত্র ! তুমি ভুবন মাত্রের উপকারক হইতেছ, অত এব পশুদিগের বাহুল্য বিধানে হেতুভূত তুমিই হইতে এবং অক্ষত, বিঘ্ননাশন এবং অন্নদাতা হইতেছ, দেখ—এ নিমিত্তই তোমাকে স্বষ্ম নামক দেবতা ইন্দ্রের প্রতি সমর্পণ করিয়াছেন ॥ ৫

হে অস্ত্র ! তুমি গো-সকলের পুষ্টিকারী হইতেছ, আর তুমি গো-সকলের পুষ্টির উত্তরোত্তর বৃদ্ধিকারী হইতেছ, অতএব গো-সকলের পুষ্ট্যর্থ তোমাকে গ্রহণ করিয়াছি ;

५—स्वधिति र्देवता। गायत्रीच्छन्दः यत्स्यस्य कर्षयो च्छिद्र-करणे विनियोगः।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धिषे सहस्र पोषाय त्वा ॥६॥ लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृतं ॥ यावतीनां यावतीनां व ऐषमो लक्षण मकारिषं ॥ भूयसीनां भूयसीनां व उत्तरा मुत्तराꣳ समां क्रियासं ॥ ७ ॥ इय न्तन्ती गवां माता

'त्वा' त्वां 'सहस्र पोषाय' बहूनां पशूनां पुष्टि-वृद्ध्यर्थं, गृहीत-वान् इत्यनुसन्धानीयम् ॥ ६ ॥

हे गावः! 'यावतीनां यावतीनां' यावत् सङ्ख्याकानां, 'वः' युष्माकं, 'लोहितेन' औदुम्बरेण, 'स्वधितिना' असिना, 'मिथुनं कर्णयोः' द्वयोः कर्णयोः, 'कृतं' वेदविहितं, 'लक्षणं' छिद्रं 'ऐषमः' अस्मिन वर्षे, 'अकारिषं' कृतवानस्मि, 'भूयसीनां भूय सीनां' तेभ्योपि विपुलानां, 'वः' युष्माकं, 'उत्तरामुत्तरां' उत्तर-स्मिन्२ 'समां' वर्षे, 'क्रियासम्' करिष्यामि ॥ ७ ॥

इयं 'तन्ती' वत्सबन्धनरज्जुः, 'गवां' 'माता' पालयित्री,

এবং তুমি অনেক পশুদিগের পুষ্টির নিমিত্ত হইতেছ ও অনেক পশুদিগের পুষ্টি-বর্দ্ধনকারী হইতেছ, অতএব আমিহ অনেক পশুদিগের পুষ্টি বৃদ্ধি করিবার নিমিত্ত তোমাকে গ্রহণ-করিয়াছি ॥ ৬

হে গো-সকল! এ বৎসরে তোমাদিগের যত গুলির কর্ণদ্বয়েতে লোহিত অসিদ্বারা বেদ-বিহিত ছিদ্র করিয়াছি, উত্তরোত্তর বর্ষেতে তাহাহইতে অধিক গুলির ঐ রূপে ছিদ্র করিব ॥ ৭

६ – दैवतादयः पूर्व्ववत् ।

७—गौर्देवता । त्रिपादनुष्टुप्छन्दः । कृत-लक्षणस्य गोरनुमन्त्रणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सवत्सानां निवेशनी ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरा९ समां ॥ ८ ॥

अस्याः परिवद्या द्वारादि प्रापकत्वेन गवां पालन कर्त्तृत्वम् । 'सवत्सानां' वत्ससहितानां गवां 'निवेशनी' प्रापयित्री, दोहन समये मातृजङ्घायां वत्सस्य बन्धनात्, 'सा' तन्त्री, 'नः' अस्माकं 'उत्तरा मुत्तरां' उत्तरोत्तरम्, 'समां' वर्षं, 'पयस्वती' क्षीरवती सती, अर्थात् इष्टफलदायिनी सती, 'दुहा' कामानां प्रपूरयित्री स्यादित्यर्थः ॥ ८ ॥

এই রজ্জু গো-সকলের মাতাস্বরূপ হইতেছে এবং বৎসের সহিত গোদিগের একত্রকারিণী হইতেছে, সেই রজ্জু উত্তরোত্তর বর্ষে ক্ষীরবতী হইয়া অর্থাৎ ক্ষীরবতী গো-সংযুক্ত হইয়া আমাদিগের কামনা সমুদয়ের পূরণকর্ত্রী হউক ॥ ৮

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य अष्टमः खण्डः । समाप्तश्चायम्प्रपाठकः ॥

—:०:—

८—तन्त्री देवता । अनुष्टुप्छन्दः । बद्धवत्सस्यानुमन्त्रणे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ द्वितीय: प्रपाठक: ।

तत्र

प्रथम-खण्ड:

ओं ॥* य: प्राच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलि:॥ यो दक्षिणस्यां दिशि सर्पराज एष ते बलि: ॥ १ ॥ य: प्रतीच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलि: ॥ य उदीच्यां

'प्राच्यां दिशि, पूर्व्वस्यां दिशायां 'य: सर्पराज:' य: सर्पश्रेष्ठ: वर्त्तसे, 'एष' मदत्तो 'बलि:' सखलु 'ते' तव ग्रहणीयो भवतु ; 'दक्षिणस्यां दिशि' 'य: सर्पराज:' इत्यादेरपि पूर्व्ववदर्थो वेदितव्य: ॥ १ । २ ॥

পূর্ব্বদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান, হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, দক্ষিণদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, পশ্চিমদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, উত্ত

---

* "अथात: श्रवणा कर्म" इति गोभिल: ३, ७ ।

१—४—एषां चतुर्णां सर्पदेवता । निगद:। सर्पबलि-कर्म्मणि विनियोग: ।

"अतर्द्ध्वं द्वितीय बलिं निर्व्वपति य: प्राच्यां दिशि" इत्यादि गो० ३, ९ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिग्मि सर्पराज एष ते वलिः॥ २ ॥ नमः पृथिव्यै दंष्ट्राय विश्वभृन्मा ते अन्ते रिषाम ॥ संहृतं मा विवधी र्विहृतं मा भिसम्बधीः॥ ३ ॥ सोमो राजा स मस्तु सो राजा सोमो स्माकं राजा सोमस्य वयं स्मः ॥

हे 'विश्वभृत्' ! अग्ने, ! तुभ्यं 'नमः' किम्भूताय—'पृथिव्यै' पृथिव्याः 'दंष्टाय' प्रधान भूताय, 'ते अन्ते' तव समीपे, 'मा रि-षाम' मा विनश्येम ॥ किञ्च 'संहृतं' सङ्गतं, अस्माभिसह विविधं-'मा वधीः' मा स्फोटयिष्यसि, 'विहृतं' वियुक्तमपि 'मा अभि सम्बन्धीः' मा अभिनैषी रित्यर्थः ॥ ३ ॥

'सोमीराजा' ब्राह्मणानां सोमोदेवः राजा, 'सोमस्तम्बो-राजा' दर्भस्तम्बानां सोमो देवः राजा; 'सोमो अस्माकं राजा' अस्तु, 'सोमस्य' एतन्नामकस्य 'वयं' उपासकाः, 'स्मः' भवामः; ॥

দিক্ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল ॥ ১ ২

হে বিশ্ব সংসারের ভরণকারী অগ্নিদেব! তোমাকে নমস্কার করি, তুমি পৃথিবীর রক্ষণে প্রধানভূত হইতেছ, তোমার নিকটে থাকিয়া যেন বিনাশপ্রাপ্ত না হই এবং আমাদিগের সহিত যাহারা একত্র হইয়া আছে তাহাদিগকে বিযুক্ত করিওনা এবং যাহারা বিযুক্ত হইয়া আছে তাহাদিগকে পুনঃ সংযুক্ত করিতে আনিওনা ॥ ৩

ব্রাহ্মণদিগের সোমদেব রাজা হইতেছেন, দর্ভস্তম্বেরও সোমদেব রাজা হইতেছেন, সোমদেবই আমা-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

অহি জম্ভন মসি সৌমস্তং বং সৌমস্তম্ব মহি জম্ভন মসি ॥ ৪ ॥ যাং সংধাং সমধত্ত যূয়ং সপ্তঋষিভিঃ সহ ॥ তাং সর্পা মাত্যক্রামিষ্ট নমো বো অস্তু মা নো হিংসিষ্ট ॥৫॥ মা ন স্তোকে তনয়ে মা ন আয়ৌ মা নো

হে সোমস্তম্ব ! সোমদেবতাকোদ্ভূর্ভ স্তম্ব ! 'অহি জম্ভনং' অহীনাং স্তম্ভনং 'অসি' ভবসি, হির্ব্বচন মাদরার্থং ॥৪॥

হে সর্পাঃ ! 'যাং সন্ধাং' সন্ধিব্যবস্থাং, 'সপ্তভিঃ ঋষিভিঃ সহ যূয়ং সমধত্ত' সম্যক্ ধৃতবন্তঃ, 'তাং' ব্যবস্থাং 'মাত্যক্রামিষ্ট' মা অতিক্রমত, 'নমোবোঽস্তু' 'বঃ' যুষ্মাকং 'নমঃ' অস্তু, 'নঃ' অস্মান্, 'মা হিংসিষ্ট' যূয়ং ন হিংসত ॥ ৫ ॥

হে ভগবন্ 'রুদ্র' ! 'নঃ' অস্মাকং, 'তোকে' পৌত্রাদি বিষয়ে, তনয়ে পুত্রে, 'আয়ৌ' আয়ুষি, 'গোষু, অশ্বেষু' 'মা রীরিষঃ' দিগের রাজা হইতেছেন, এই সোমদেবেরই আমরা উপাসক হইতেছি, হে সোমাধিদৈবত দর্ভস্তম্ব ! তুমি সর্প সকলের স্তম্ভনস্বরূপ হইতেছ, তুমিই সর্প সকলের স্তম্ভন স্বরূপ হইতেছ ॥ ৪

হে সর্প সকল ! তোমরা সাতজন ঋষির সহিত সন্ধি পূর্ব্বক যে ব্যবস্থা ভালরূপে গ্রহণ করিয়াছিলে, সে ব্যবস্থা অতিক্রমণ করিও না, তোমাদিগকে আমরা নমস্কার করি, তোমরা আমাদিগকে হিংসা করিও না ॥ ৫

৫—অগ্নির্দেবতা । অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ । ভূমিজপে বিনিয়োগঃ ।

"ভূমৌন্যঞ্চৌ পাণীপ্রতিষ্ঠাপ্য নমঃ পৃথিব্যাইত্যেতং মন্ত্রং জপতি" গো• ৩, ৭

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामिनो बधी र्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे ॥८॥

शतायुधाय शतवीर्याय शतोतये भिमाति षाहे ॥ शतं

हिंसां मा कृथाः, किन्तु 'नः' अस्माकं 'वीरान्' विक्रान्तान् मनुष्यान्, 'भामिनः' तेजस्विनः, 'मा बधीः' हिंसां मा कृथाः 'हविष्मन्तः' यजन्तो वयं 'त्वा' त्वां, 'हवामहे' आह्वयामः, सदमीति पादपूरणे, पुनः पुनः 'मा नो' वचनं प्रार्थनादौ आवश्यकत्वादुक्तम् ॥ ८ ॥

हे 'इन्द्र'! 'नः' अस्माकं 'शरदः' अनुपाय-हेतुत्वात् शरद्भूतायाः 'शतं' शतसंख्यां 'अजीजनत्' अजीजात् अभ्यवीभवत्, सुखेन अतिवाहयतीति स्पष्टार्थः, किन्तु 'यः' इन्द्रः 'नः' 'दुरितानि' दुस्तराणि व्यसनानि, 'विश्वा' विश्वानि स-

হে ঐশ্বর্য্যশালিন্ রুদ্র! আমাদের পুত্রপৌত্র প্রভৃতির এবং গো অশ্ব প্রভৃতির পরমায়ু বিষয়ে হিংসা করিও না, এবং আমাদিগের বীর ও তেজস্বী মনুষ্য সকলকে নষ্ট করিও না, যজনশীল আমরা তোমাকে আহ্বান করি ॥ ৮ ॥

হে ইন্দ্র! আমাদিগের শত শত শরৎ ঋতু, সুখে

६ – सोमसर्पौ देवते । निगदः । भूमिजपे विनियोगः ।

"दर्भस्तम्बं समूलं प्रतिष्ठाप्य सोमोराजेतीतं मन्त्रं जपति" गो० ३, ७।

७—सर्पो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । भूमिजपे विनियोगः ।

"यां सन्धां समधत्त तिच" गो० ३,७।

८—रुद्रो देवता । जगतीच्छन्दः । होमकर्म्मणि विनियोगः ।

"जहुयात् ** मानस्तोक इति द्वितीयाम्" गो० ३, ८।

For Private And Personal Use Only

यो नः शरदो अजीजा दिन्द्रो नेष दतिदुरितानि
॥९॥ ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृ
वियन्ति ॥ तेषां यो अज्यानि मजीजि मावहा

र्वाणि, 'अतिनेषत्' अतिशयेन विनाशं नीतवान्, तस्मै इ ताय इन्द्राय,—'शतायुधाय', बहु-प्रकारक-वज्राय, 'शतवी बहुबलाय, 'शतोतये' बहु-प्रकारक-पालनाय, 'अभिमाति' मानात्मकमहत्त्वम् आदत्ते, 'पाहे' स्वाहा, हविस् स्यात् ॥ ९ ॥

हे विश्वेदेवाः !, 'ये' 'चत्वारः पथयः' पन्थानः, 'देवय स्वर्गमार्गाः 'अन्तरा' मध्ये, 'द्यावापृथिव्योः' स्वर्ग-मर्त्त्ययोः यन्ति' विविधं गच्छन्ति, 'तेषां' चतुर्णाम्मध्ये 'यः' देवः, ज्यानिं' अमृतत्व-प्राप्ति-हेतुं, 'अजीजिं' क्षेमेण अभी

অতিবিহিত করিয়া থাক এবং যে ইন্দ্র আমাদিগের সকল একবারে বিনাশ করেন্, এবং যিনি বিবিধ বিশিষ্ট, বহুবলশালী, বিবিধ প্রকার পালনকর্ত্তা অভিমান করিতেছেন্, তাঁহাকে এই মদীয় হবি হইল ॥ ৯ ॥

হে বিশ্বেদেবা-দেব সকল ! দ্যুলোকও মর্ত্ত্যলোকের বিবিধ প্রকার যে চারিটী দেবমার্গ আছে, উহার অমৃত লাভের হেতুভূতও কল্যাণপ্রদ বিধায় অভীপ্

९—इन्द्रो देवता । पंक्तिश्छन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।

"आज्याहुतिभिरभि जुहोति शतायुधायेत्येतैरतन्-प्रभृतिभिः" गो० ३, ८ ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो देवा: परिदत्तेह सर्वे ॥ १० ॥ ग्रीष्मो हेमन्त उत-नो वसन्तः शरद्वर्षा: सुवितन्नो अस्तु॥ तेषा मृतूनाꣳ शत-शारदानां निवात एषा मभये स्याम ॥११॥ इह-

आवहा: नायका:, 'तस्मै' देवाय, 'इह नः' इहलोके स्थितान् अस्मान्, 'परिदत्त' समर्पयत, ॥ १० ॥

'ग्रीष्म:' ग्रीष्मऋतु:, 'हेमन्त:' हेमन्तऋतु:, 'उत' अपिच, 'वसन्त:' वसन्तऋतु:, 'शरत्' शरत्ऋतु:, 'वर्षा' वर्षाऋतुः, 'न:' अस्माकम्, एते निर्द्दिष्टा: षट् ऋतव:! यूयं मया प्रार्थ्यन्ते, यत् इदं अस्माकं कर्म्म, तत्, युष्मत्-प्रसादेन 'सुवितं' सुष्ठम् 'अस्तु' भवतु, किञ्च यत्र कर्म्मणि ते ऋतव: 'शत-शारदानां' भूय: प्रत्यावर्त्तनेन बहु-शरद्-विशिष्टानाम्, 'तेषां' 'एषां' ऋतुनां 'अभये' निर्भये,'निवाते' आश्रये, 'स्याम' निर्भया भवेम ॥ ११ ॥

স্থানে, যে দেব লইয়া যাইতেছেন, সেই দেবেতে ইহলোক স্থিত আমাদিগকে সমর্পণ করুন, এই হবি আপনাতে সমর্পিত হইল ॥ ১০ ॥

গ্রীষ্ম ঋতু, হেমন্ত ঋতু, এবং বসন্ত ঋতু ও শরৎ ঋতু, বর্ষা ঋতু, আমাদিগের সম্বন্ধে বর্ত্তমান এই সকল ঋতুগণ! তোমরা আমাদিগকর্ত্তৃক প্রর্থিত হইতেছ—আমাদিগের অনুষ্ঠিত এই কর্ম্ম তোমাদিগের প্রসাদে উত্তম রূপে সম্পন্ন হউক ;

१०—विश्वे देवा देवता: । त्रिष्टुप्छन्द: । आज्यहोमे विनियोग: ।

११— ऋतवो देवता: । त्रिष्टुप्छन्द: । आज्यहोमे विनियोग: ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ৎসরায় পরিবৎসরায় সংবৎসরায় কৃণুতা বৃহন্নমঃ। তেষাং বয়ং সুমতৌ যজ্ঞিয়ানাং জ্যোগ্জীতা অহতাস্যাম ॥ ১২ ॥ ভদ্রান্নঃ শ্রেয়ঃ সমনৈষ্ট দেবাস্ত্বয়া বসেন

হে স্তোতারঃ ! যেভ্যঃ মনুষ্য-পিতৃ-দেব-সম্বন্ধি-তত্তৎ-বৎসর-বিশেষ-কালেভ্যঃ ইদং হবিঃ 'বৃহৎ ইৎ' বৃহদেব, যূয়ং 'কৃণুত' কুরুত, তস্মৈ 'বৎসরায় পরিবৎসরায় সংবৎসরায়' তত্তৎ-কাল-বিশেষায় 'নমঃ' 'তেষাং' বৎসরাণাং 'যজ্ঞিয়ানাং' যজ্ঞহেতুভূতানাং, 'সুমতৌ' শোভনায়াং বুদ্ধৌ, বর্ত্তমানাঃ 'বয়ং' 'জ্যোক্' চিরং, 'জীতাঃ' দুরিতানাং জেতারঃ সন্তঃ, 'অহতাঃ' অপীড়িতাঃ, 'স্যাম' ভবেমেতি প্রার্থয়তে ॥ ১২ ॥

হে 'দেবাঃ !' ব্রীহিময়াঃ, 'ত্বা' ত্বাং, বয়ং 'সশীমহি' আমরা একশত শরৎ ঋতু অর্থাৎ শতসংবৎসর যেন তোমাদিগের আশ্রয়ে নির্ভয়ে থাকি, [অর্থাৎ রোগ-শোকাদি-শূন্য হইয়া যেন শতায়ু হই] ॥ ১১ ॥

হে স্তোতৃগণ ! তোমরা মনুষ্য, পিতৃ, দেব সম্বন্ধি যথাক্রমে বৎসর, পরিবৎসর, সংবৎসর নামক যে সকল কাল বিশেষে এই হবি প্রশস্ত করিয়া থাক, সেই সকল বৎসরাদি কাল বিশেষকে নমস্কার করি আমরা যজ্ঞ সকলের জনকস্বরূপ সেই সকল বৎসরাদির অধীন হওতঃ সুমতিশালী হইয়া, চিরকাল যেন দুরিত-জয়ী হইয়া রোগাদিদ্বারা অসংস্পৃষ্ট হইয়া থাকি ॥ ১২ ॥

১২—সংবৎসরো দেবতা । ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ । আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भक्षीमहि त्वा ॥ स नो मयोभूः पितेवा विशस्व शं तो काय तन्वै स्योन स्वाहा । १३ ॥ अमोसि प्राण तदृतं

भुञ्जीमहि, 'त्वया' 'अन्नेन' पाथेयभूतेन, नवं नवं वर्षंशतं प्रापिताः वयं सश्रीका भवेमेति भावः, किञ्च यूयं 'नः' अस्मान्, 'श्रेयः' एतन्नवान्न-प्राशन-प्रभव मारोग्यं सम-नैष्ट' सम्यक् प्रापयत, किम्भूतान् नः? 'भद्रान्' युष्मत्-प्रसादेन नवान्न-प्राशन-योग्यान्, अपिच हे व्रीहे! अस्माभिः यस्त्वं प्राशनः 'सः' व्रीहिमयो देवः, 'नः' अस्मान्, 'आविशस्व' प्रविश, कथम्भूतस्त्वम्? 'पितेव मयोभूः' पिता इव सुख-जनकः, 'तोकाय' 'शं' सुखरूपो भव 'तन्वै' शरीराय, 'स्योनः' सुखकरो भव ॥ १२ ॥

हे 'प्राण!' त्वं, 'अमः' गतिशीलः, 'असि' भवसि, 'तत्' एतत्, 'ऋतं' सत्यं 'ब्रवीमि' व्यक्तं वच्मि, 'हि' यस्मात्, 'अमाः' गति-शीलाः सन्तः 'सर्व्वं' अशेषं भूतजातम् 'अनु प्रविष्टः'

হে ব্রীহিরূপিন্ দেব! তোমাকে আমরা যেন ভক্ষণ করি, তুমি পাথেয় স্বরূপ, তোমাকর্ত্তৃক নূতন নূতন বর্ষ সকল প্রাপ্ত হইয়া আমরা সকলে যেন শ্রীবিশিষ্ট হই, এবং তোমরা আমাদিগকে এই নবান্ন প্রাশনের আরোগ্য রূপ ফল ভাল-রূপে প্রদান কর; আমরা তোমাদিগের প্রসাদেই নবান্ন প্রাশন করিতে যোগ্য হইতেছি, অপিচ——

হে ব্রীহিরূপিন্ দেব! যেহেতুক তুমি আমাদিগের ভক্ষ্য হইতেছ অতএব আমাদিগের অন্তরে প্রবেশ কর, তুমি

१२—व्रीहयो देवताः । त्रिष्टुप्छन्दः । व्रीहि- हविः-प्राशने विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्रवीम्यमा ह्यसि सर्वं मनु प्रविष्टः । स मे जराꣳ रोग-मप मृज्य शरीरा दपाम एधि मा मृथान इन्द्र ॥१४॥ अग्निः प्राश्नातु प्रथमः स हि वेदयथा हविः । शिवा

'असि' भवसि, 'सः' प्राणमयो देवः 'मे' मम, 'शरीरात्' वपुषः 'जरां' शरीर-परिणाम-रूपां, 'रोगं' दुःखजनकं वपुषि आगन्तुकं ज्वरादि, 'अपमृज्य' अपनीय, 'अपामः' निर्दुष्ट-गतिकः सन्, 'एधि' भव, हे 'इन्द्र !' सर्व्वैश्वर्य्यशालिन् ! प्राण ! 'नः' अस्मान्, 'मा मृथाः' मरणं देहाद्वियोगरूपं, मा कृथा इत्यर्थः ॥ १४ ॥

'अग्निः !' जाठरोऽग्निः, 'प्रथमः' अग्रे, 'हविः' 'प्राश्नातु प्राशनं करोतु 'हि' यतः—'स' देवः, 'यथा' येन रूपेण, तद्धविः

পিতার ন্যায় সুখ-জনক হইতেছ, তুমি আমাদিগের পৌত্রাদির নিমিত্ত কল্যাণরূপী হইয়া উদিত হও, আমাদিগের শরীরের নিমিত্তও সুখ-কারক হও অর্থাৎ কোন রোগাদির জনক হইয়া কষ্ট দিও না ॥ ১৩ ॥

হে প্রাণ ! তুমি গতিশীল হইতেছ, ইহা আমি সত্যই বলিতেছি, যেহেতু তুমি সমুদয় ভূতবর্গেতে গতিশীল হইয়াই অনুপ্রবেশ করিয়াছ, সেই প্রসিদ্ধ প্রাণরূপী দেব আমার শরীর হইতে জরা ও রোগ সকলকে অপনয়ন করত শরীরে নির্দ্দোষ-গমন-শীল হইয়া অবস্থিতি করুন, হে প্রাণ ! তুমি আমাদিগের দেহ-বিয়োগরূপ, মরণ-দুঃখ প্রদান করিও না ॥ ১৪ ॥

१४—प्राणो देवता । त्रिष्टुप्छन्दः । अङ्गाभिमर्शने विनियोगः ॥
" प्रत्यभिमृशेरन् मुखं शिरोऽङ्गानीत्यनुलोम ममोसीति" गो० ३, ८ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्मभ्य मोषधीः क्रणोतु विश्वचर्षणिः स्वाहा ॥ १५॥

एतमुत्यं मधुना संयुतं यवꣳ सरस्वत्या अधिवनावच-

'वेद' जानाति, किन्तु 'अस्मभ्य' 'शिवाः' कल्याणकरीः 'ओषधीः' धान्य विशेषान्, सः 'विश्वचर्षणिः' विश्वस्य जगतः 'चर्षणिः' स्रष्टा अग्निः 'क्रणोतु' ददातु ॥ १५ ॥

हे इन्द्र! 'एतं' ('उ' पादपूरणे) 'त्यं' तं, 'मधुना संयुतं यवं' 'सरस्वत्या' वाचा, 'वना' सम्भजनीयं, 'अध्यवचर्क्षधि' अतिशयेन अधिकारं कुरु, गृहाणेति यावत्,—इदानीं यवान्न ग्रहणे इन्द्रस्य औचित्यं दर्शयति,—'इन्द्रः' 'शतक्रतुः' शत-संख्याक-यज्ञानुष्ठायी सन्नेव 'सीरपतिः' यवाद्युत्पादकस्य 'सीरस्य मेघस्य' 'पतिः' अधिपतिः-संरक्षण-कर्त्ता, 'आसीत्' अभूत् एवं यवाद्युत्पत्ति-सहकारिणोपि 'सुदानवः' शोभन

জাঠর (জঠরে উৎপন্ন) অগ্নি প্রথমে এই হবি ভক্ষণ করুন, যেহেতু তিনি যেরূপ এই হবি অবগত আছেন আমি তদ্রূপ জানি না, কিন্তু সেই বিশ্ব সংসারের স্রষ্টা অগ্নি আমাদিগকে কল্যাণ-জনক ধান্যাদি প্রদান করুন ॥ ১৫ ॥

হে ইন্দ্র! বাক্য দ্বারা সম্যক্‌রূপে ভজনীয়, মধু-সম্মিশ্রিত, এই যব, ভালরূপে অধিকার কর, শতবার যজ্ঞানুষ্ঠান করিয়া শতক্রতু নাম ধারী ইন্দ্র দেবতা যবাদি অন্ন সকলের উৎপাদক মেঘের অধিপতি হইয়াছেন, এবং যবাদি অন্নের

१५—जाठरोऽग्नि र्देवता । अनुष्टुप्छन्दः । श्यामाकचरु-प्राशने विनियोगः ।

"अग्निः प्राशातु प्रथम मिति श्यामाकानाम्" गो० ३, ८ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र्षि ॥ इन्द्र आसीत्सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन्मरुतः सुदानवः स्वाहा ॥ १६ ॥

दातारः, 'मरुतः' वायु-विशेषाः, 'कीनाशाः' वर्षण-कर्त्तारः, आसन् अभूवन् ॥ १६ ॥

উৎপত্তিতে সহকারী, কল্যাণ-প্রদ, মরুৎ নামক বায়ু বিশেষেরাও বর্ষণকারী হইয়াছেন ॥ ১৬ ॥

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमः खण्डः

——:०:——

अथ द्वितीयः खण्डः ।

*प्रथमा ह व्युवास सा धेनुर भवद्यमे ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरामुत्तराꣳसमाम् ॥ १ ॥ प्रतिच्चर्चे

हे अग्रहायणि देवते ! 'सा' 'हव्युवास' हविषि पयोलक्षणे कारणतया वसति या तथारूपा, 'धेनुः' 'यमे' धर्मराजस्य तोषार्थं 'प्रथमा' अग्रा 'अभवत्' भवति । 'सा' तां 'पयस्वती' पयस्वतीं बहुतर-दुग्धवतीं धेनुं 'उत्तराम् उत्तराम्' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'दुहां' अध्यधिक-दुग्धदायिणीं कुरु इति शेषः ॥ १ ॥

হে আগ্রহায়ণী দেবতা! ধর্ম্মরাজের পরিতোষার্থ যে ধেনু সর্ব্ব প্রথমে দুগ্ধরূপ হবির কারণরূপে আবির্ভূত হইতে-

१६—इन्द्री देवता । जगतीच्छन्दः । यवचरुप्राशने विनियोगः ।

"एतमुत्य मधुना संयुत मिति यवानाम्" गो० ३, ८ ।

* "अग्रहायण्यां बलि हरणम्" गो० ३, ९ ।

१—आग्रहायणी देवता । अनुष्टुपछन्दः । चरुहोमे विनियोगः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रतितिष्ठामि गोषु ॥ प्रति-प्राणे प्रतितिष्ठामि पुष्टौ प्रत्यङ्गेषु ॥ प्रतितिष्ठाम्यात्मनि ॥ २ ॥ प्रतिद्यावापृथिव्योः प्रति-

हे अग्ने ! 'प्रतिक्षत्रे' क्षत्रं क्षत्रं प्रति प्रत्येक-वेश्मनि 'प्रतितिष्ठामि' प्रतितिष्ठेयम् प्रथिततया प्रतिष्ठितो भवेयमित्यर्थः। 'राष्ट्रे' राज्यमध्ये च तथैव गुणवत्तया 'प्रत्यश्वेषु' अश्वमश्वं प्रति प्रतितिष्ठामि' सुचालकतया प्रतिष्ठितो भवेयम् । 'गोषु' गो-प्रभृति-पशुषु च तथैव पालकतया । 'प्रतिप्राणे' प्राणं प्राणं प्रति प्राणिमात्रे 'प्रतितिष्ठामि' सुहृत्तया प्रतिष्ठितो भवेयम् । 'पुष्टौ' पुष्टिविषये बलादौ च तथैव बलवत्तया । 'प्रत्यङ्गेषु' हस्त-पदादिषु 'प्रतितिष्ठामि' दार्ढ्य-कर्मोपयुक्तत्वादिना प्रतिष्ठितो भवेयम् । 'आत्मनि' स्वधर्मे च तथैव ज्ञानवत्तया प्रतिष्ठितो भवेयम् ॥ २ ॥

ছেন, বহুতর দুগ্ধবতী সেই ধেনুকে উত্তরোত্তর বর্ষে অত্যধিক দুগ্ধদাত্রী কর ॥ ১ ॥

হে অগ্নে! আমি যেন বিখ্যাত হওত প্রতি ক্ষত্রিয় গৃহে প্রতিষ্ঠিত হই, রাজ্য মধ্যেও গুণবত্তা প্রচার হওত যেন প্রতিষ্ঠিত হই, এবং প্রতি অশ্বেতে সুচালকতা গুণে যেন প্রতিষ্ঠিত হই, সেইরূপ গোপ্রভৃতি পশুবিষয়েও যেন পালন কারিতা গুণে প্রতিষ্ঠিত হই, এমন কি প্রাণিমাত্রেতেই সৌহৃদ্য গুণে যেন প্রতিষ্ঠিত হই, এইরূপ পুষ্টি-বিষয়ে, বলাদি বিষয়ে,

२—अग्निर्देवता । त्रिष्टुप्छन्दः । जपे विनियोगः ।

" प्रतिक्षत्र इत्येषा व्याहृति जपति" गो० ३, ९ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

তিষ্ঠামি যজ্ঞে ॥ ৩ ॥ স্যোনা পৃথিবি নো ভবানৃক্ষরা নিবেশনী ॥ যচ্ছা নঃ শর্ম্ম সপ্রথাঃ দেবা-ন্মা ভয়া দিতি ॥ ৪ ॥*॥ যদস্য ব: প্রচ্ছাযন কনষা

হে অগ্নে ! 'প্রতিদ্যাবাপৃথিব্যোঃ' সর্ব্বত্রৈব 'প্রতিতিষ্ঠামি' প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ ! অদ্য হৃষ্ট 'যজ্ঞে' চ প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ ॥৩॥

হে 'পৃথিবি !' 'অনৃক্ষরা' পাপশূন্যা 'নিবেশনী' প্রাণিনাং ধারণকারিণী ত্বং 'স্যোনা' কল্যাণরূপা 'ভব'। 'সপ্রথাঃ' বিস্তীর্ণরূপা ত্বং 'নঃ' অস্মভ্যং সর্ব্বত্রৈব 'শর্ম্ম' কল্যাণং 'যচ্ছ' দেহি। 'দেবাৎ' দেব-কৃতাৎ 'ভয়াৎ' 'মা' মাং পাহীতি শেষঃ ॥ ৪ ॥

হস্তপাদ প্রভৃতি সমস্ত অঙ্গবিষয়ে; দৃঢ়তাজনক কার্য্য কারিতা গুণেও যেন প্রতিষ্ঠিত হই এবং জীবাত্মা বিষয়ে বিদ্যারূপ গুণেও যেন প্রতিষ্ঠিত হই ॥ ২ ॥

হে অগ্নে ! প্রতি দ্যাবা পৃথিবীর সর্ব্বত্রই যেন প্রতিষ্ঠিত হই, অদ্য এই যজ্ঞে যেন প্রতিষ্ঠিত হই ॥ ৩ ॥

হে পৃথিবি! তুমি পাপশূন্যা ও প্রাণিদিগের ধারণ কারিণী হইতেছ, এবং অতিশয় বিস্তৃত হইতেছ, তুমি আমাদিগের সম্বন্ধে কল্যাণস্বরূপ হইতেছ, অতএব সর্ব্বত্র আমাদিগকে কল্যাণ প্রদান কর, এবং দৈব ভয় হইতে আমাকে রক্ষা কর ॥৪ ॥

৩—অগ্নি দেবতা। যজুঃ। জপে বিনিয়োগঃ।

৪—পৃথিবী দেবতা। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। জপে বিনিয়োগঃ।

স্যোনা পৃথিবি নো ভবে তেনৈতা মন্ত্রং জপতি গো০ ২, ৫।

* অথ অষ্টকা প্রকরণম্। অষ্টকা রাত্রি দেবতেত্যাদি গো০, ২, ১০

For Private And Personal Use Only

हृदयेन च॥ वाचा सहस्रपाशया मयि बध्नामि वो मनः ॥५॥* अनु त्वा माता मन्यताम् अनु पिता न भ्राता

हे 'पशवः'! यूयं 'यत्' येन 'मनसा हृदयेन च' 'प्रध्यायत' चिन्तां कुरुथ, तदेव 'वः' युष्माकं 'मनः' मानसम् अद्य 'सहस्रपाशया' बहुतर-रज्जु-रूपया 'वाचा' विनयवाक्येन 'बध्नामि' स्ववशं नयामि ॥ ५ ॥

हे पशो! देवे पैत्रे च कर्मणि विनियुक्तं 'त्वा' त्वां, 'माता' त्वदीय-जननी 'अनु मन्यताम्' देव-पितृ-कार्य्य-साधनाय शरीर-विसर्ज्जने अनुमतिं ददातु। 'पिता' त्वदीय-जनकः 'अनुमन्यताम्'। 'भ्राता' वैमात्रेयादिः त्वदीयः 'अनुमन्यताम्'। 'सगर्भ्यः' सोदरः त्वदीयः 'अनुमन्यताम्'। 'सखा' त्वदीयः 'अनुमन्यताम्'। 'सयूथ्यः' त्वदीय-यूथ-चारी अपरः पशुः 'अनुमन्यताम्' ॥ ६ ॥

হে পশুসকল! তোমরা সকলে হৃদয়ের সহিত যে মনের দ্বারা ধ্যান করিয়া থাক, তোমাদিগের সেই মানস, অদ্য বিনয় বাক্য স্বরূপ বহুতর রজ্জুদ্বারা বন্ধন করিতেছি অর্থাৎ স্ববশে আনিতেছি ॥ ৫ ॥

হে পশো! দৈব, পৈত্র কার্য্যে বিনিযুক্ত তোমাকে তোমার জননী দেব পিতৃ কার্য্য সাধনের নিমিত্ত শরীর বিসর্জন করিতে অনুমতি প্রদান করুক, তোমার জনকও অনুমতি প্রদান করুক, তোমার বৈমাত্রেয়াদি ভ্রাতারাও অনুমতি

५—पशवो देवताः। अनुष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः।

जुहुयात् यत् पशवः प्रध्यायतेति गो० ३, ९।

नु सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः॥६॥ आत्तं देवेभ्यो हविः॥७ यत्पशुर्मायु मकृततौ रोपद्भि राहत। अग्नि र्मा तस्मा देनसो विश्वान्मुञ्च त्वꣳहसः॥८॥ अग्ना वग्निश्च

हे पशो ! त्वं 'देवेभ्यः' देवार्थं 'हविः' भक्ष्यम् इति 'आत्तम्' गृहीतम् ॥ ७ ॥

हे अग्ने ! अयं 'पशुः' 'यत्' यावत् परिमितम् 'आयुः' 'अकृत' प्रापयत् भोग्यत्वेनेति शेषः, तत् त्वं जानासीति वाक्यान्वयः। किञ्च 'कृतः' कृतं यस्य 'रोपद्भिः' स्थापयितृभिः अस्माभिः 'आहत' अयं पशु राहन्यते इति त्वं वेत्सि। 'सः' 'त्वम्' 'अग्निः' 'ह' निश्चयम् 'तस्मात्' आयुषो न्यूनी-करणरूपात् 'एनसः' पापात् 'मा' मां (न केवलं मामेव) अपितु 'विश्वान्' सर्व्वानेव याज्ञिकान् 'मुञ्च' मोचय ॥ ८ ॥

প্রদান করুক, তোমার সোদর ভ্রাতাও অনুমতি প্রদান করুক, তোমার সখা অনুমতি প্রদান করুক, অপরাপর তোমার দল-প্রবিষ্টেরাও অনুমতি প্রদান করুক ॥ ৬ ॥

হে পশো ! তুমি দেবতাদিগের নিমিত্ত হবি (ভক্ষ্য) রূপে গৃহীত হইয়াছ ॥ ৭ ॥

হে অগ্নে ! এই পশু যাবৎ পরিমিত আয়ু প্রাপ্ত হইয়াছিল, তাহা তুমি জ্ঞাত আছ, এবং সত্য যজ্ঞানুষ্ঠায়ি আমা-

---

६ — पशु र्देवता । यजुः । अनुमन्त्रणे विनियोगः ।
हुत्वा चानु मन्त्रयेतानुत्वा माता मन्यतामिति गो० २, ८।
७ — पशु र्देवता । यजुः । उदक-सेचने विनियोगः ।
आत्तं देवेभ्यो हविरित्यथैनामुदगुत् स्रप्य गो० २, ९ ।
८ — अग्नि र्देवता । अनुष्टुप्छन्दः । होमे विनियोगः ।
पितृ-दैवत्ये संस्रायां जुहुयात् यत् पशु र्मायुमकृतेति गो० २, ९ ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः ॥ [illegible]:
ीन: सुयजा यजा च यथा देवानां जनिमानि
द ॥ ८ ॥ औलूखलाः संप्रवदन्ति ग्रावाणो हविष्कृ-

'ऋषीणां पुत्रः' ऋषिभिर्मन्थनेनोत्पाद्यमानत्वात् ऋषी
ां तनय इव 'एषः' यः 'अग्निः', 'अधिराजः' अध्यधिक
ीप्तः सन् 'अग्नौ' आहवनीयाग्नौ 'प्रविष्टः' प्रवेशं कुर्वन्
चरति' हविर्भक्षयति । 'सः' अग्निः 'नः' अस्माकं 'स्योनः'
ल्याणकरः भवतु । अहञ्च 'सुयजा' याज्ञिकः 'देवानाम्'
षां 'जनिमानि' उत्पत्त्यादीनि 'यथा' 'वेद' जानामि,
थैव 'यजा' यजे ॥ ८ ॥

'परिवत्सरीणाम्' प्रति वत्सर-सम्पाद्यमानानां अष्ट
ाणाम् सिद्धार्थं 'हविष्कृण्वन्तः' हविष उपयोगिन स्तण्डुलान्

গকর্ত্তৃক এই পশু হত হইতেছে—ইহাও তুমি জানিতেছ,
তএব আয়ুর ন্যূনতা করণ জন্য প্রত্যবায় হইতে অবশ্যই
ম আমাকে—কেবল আমাকে নয়, এইরূপ সত্য যজ্ঞানুষ্ঠানে
ী তাবৎকেই মোচন করব ॥ ৮ ॥

ঋষিদিগকর্ত্তৃক অরণিদ্বয় মন্থনে উৎপন্ন বিধায় ঋষিদিগের
ত্ররূপী যে অগ্নি অত্যধিক প্রদীপ্ত হওত আহবনীয় অগ্নিতে
্রবেশ করিয়া হবি ভক্ষণ করেন, সেই অগ্নি আমাদিগের
ল্যাণ-প্রদ হউন, আমি যাজ্ঞিক সেই সকল দেবদিগের
রূপ উৎপত্ত্যাদি অবগত আছি, তদনুরূপেই যাগ করি-
েছি ॥ ৯ ॥

८—अग्नि र्देवता । विराट् त्रिष्टुप्छन्दः । होमे विनियोगः ।
चतुर्गृहीत माज्यम् गृहीत्वाष्टर्च प्रथमया जुहुयादग्नावग्नि रिति गो० ४, १ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

ाम्याः पशवो विश्वरूपा स्तेषां सप्तानां मयि रन्ति
ःस्तु ॥११॥ एषैव सा या पूर्व्या व्यौच्छत् सेय मप्स्वन्तश्च
ःति प्रविष्टा॥ वधू र्जिगाय प्रथमा जनित्री विश्वे ह्य-
ां महिमानो अन्तः ॥ १२ ॥ एषैव सा या प्रथमा

वनीय-द्रव्यमात्र ‘ गृभाय’ गृहाण । गृहीत्वा च मह्य
ामुं वरं देहि—यत्, ‘ ये ग्राम्याः’ ‘विश्वरूपाः’ विविधात्मकाः
पशवः’ गोमहिष्यादयः तेषां ‘ सप्तानां’ बहूनां ‘ मयि’ मद्-
ःहे ‘रन्ति’ रमणं-प्रसन्न भावः ‘अस्तु’ ॥ ११ ॥

‘ या’ अष्टका ‘पूर्व्या’ प्रथमकालीनेव ‘वि ऐच्छत्’ विशेषेण
काशमानवती ‘ सा’ एव ‘ एषा’। किञ्च या ‘ अप्सु’
दी-तड़ागादि स्थितेषु ‘ अन्तः प्रविष्टा’ सती ‘ चरति’ भ्रमति
सा एव ‘ इयम्’। वधूः पार्थिवान् समस्तद्रव्यान् ‘ जिगाय’
जितवती। इयञ्च प्रथमा ‘ प्रधाना ‘ जनित्री’ जनयित्री
ामानां मिति शेषः। ‘ अस्याम् अन्तः अष्टकायां मध्ये ‘विश्वे’
र्व्वे ‘हि’ एव ‘ महिमानः’ सन्ति ॥ १२ ॥

হিষ প্রভৃতি পশু সকল রহিয়াছে তৎসমুদয়েরই আমার
হে প্রসন্নতা থাকুক্ ॥ ১১ ॥

পূর্ব্বকালেতে যে অষ্টকা বিশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছিল,
সই এই অষ্টকা, এবং যে অষ্টকা জলেতে প্রবিষ্ট হইয়া
মণ করিতেছিল, সেই অষ্টকা এই পার্থিব সমস্ত দ্রব্য
য় করিয়াছে, এই প্রধানা, ও কামনা সকলের জননকারিণী
ইতেছে, এই অষ্টকারই মধ্যে সমস্ত মহিমা আছে ॥ ১২ ॥

१२—अष्टका देवता त्रिष्टुप्छन्दः। सर्व्वदाने विनियोगः।
चतुर्थी-पञ्चमीभ्यां षष्ठी-सप्तमी-भ्याञ्च श्रेव सर्व्वदाय गो० ४, १।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यौच्छत् सा धेनु रभवद्विश्वरूपा॥ संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली ॥१३॥ यां देवाः प्रति पश्यन्ति रात्रीं धेनुमिवायतीं ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तराꣳ समाम्॥ १४ ॥ संवत्सरस्य प्रतिमां

'एषा एव सा' अष्टका, 'या' 'प्रथमा' पूर्व्वकालीना एव 'वि ऐच्छत्' विशेषं प्रकाशमानवती । 'सा' इयं 'विश्वरूपा' बहुजनसेव्यत्वात् बहुरूपा, 'धेनुः' यथाभिलषितप्रदत्वात् काम-धेनुरिव । 'या' इयं 'संवत्सरस्य' 'पत्नी' भोग्यत्वात् उच्यते वेदे, 'सा' 'नः' अस्माकं 'सुमङ्गली' कल्याणी 'अस्तु' ॥ १३ ॥

'देवाः' द्योतमानाः 'यां' 'धेनुम् इव आयतीम् यथा गोष्ठात् धेनु रागच्छतीव तथैव वर्षान्ते पुनरागच्छतीव अष्टका इति तां 'रात्रीं' उत्तराष्टकां प्रति 'पश्यन्ति' आगमन-पथं निरीक्षन्ति, 'सा' अष्टका रात्री 'दुहा' 'कर्म्म-फलानि दुह्यन्ते यस्या स्तथा भूता 'उत्तराम् उत्तराम्' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'पयस्वती' अध्यधिक-दुग्धवतीवभव तु ॥ १४ ॥

এই অষ্টকাই—সেই, যে পূর্ব্বকালেতে বিশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছিল, যে অষ্টকা বহু লোকের সেব্য বিধায়, বহুবিধ অভিলষিত প্রদান করায় কামধেনু স্বরূপ, এবং যে—সংবৎসর কাল পর্য্যন্ত ভোগ্য হওয়ায় সংবৎসরের পত্নীস্বরূপ, সেই অষ্টকা আমাদিগের সমন্ধে সুমঙ্গল দায়িনী হউক ॥ ১৩ ॥

গোষ্ঠ হইতে ধেনুর আগমনের ন্যায় বর্ষান্তে পুনরাগমশীল যে—সেই উত্তর-অষ্টকা, তাহার আগমন পথ দেব-

১৩, ১৪, ১৫—एषां सर्व्वं पूर्व्ववत् । तृष्टुप्छन्दः इत्येव भेदः ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्वा रात्रि! यजामहे॥ प्रजामजर्य्यां नः कुरु रायस्पोषेण सꣳसृज॥ १५ ॥ अन्वियन्नो अनुमति र्यज्ञं देवेषु मन्यताम्। अग्निश्च हव्यवाहनः स नो ऽदाद्दाशुषे मयः॥ १६ ॥

हे 'रात्रि'! अष्टकाया रजने! 'संवत्सरस्य' 'प्रतिमां' परिमापयित्रीं 'यां' 'त्वा' त्वां 'यजामहे' वयं, सा त्वं 'नः' अस्माकं 'प्रजां' 'अजर्य्यां' जरा-शून्यां 'कुरु'; किञ्च अस्मान् 'रायस्पोषेण' धनस्य सम्बन्धि-पोषणेन 'सं सृज' अतिसर्जय॥ १५ ॥

'इयं' 'अनुमतिः' देवी 'देवेषु' इन्द्रादिषु 'यज्ञम्' इदं 'अनुमन्यताम् बोधयताम्'। 'हव्यवाहनः' हव्यानां वहनकारी 'च' 'सः' अयम् 'अग्निः' 'दाशुषे' हविर्दत्तवते यजमानाय 'नः' नस्मै 'मयः' सुखम् 'अदात्' ददातु॥ १६॥

তারা নিরীক্ষণ করিতেছেন, সেই অষ্টকা রাত্রি (উত্তরাষ্টকা) অত্যধিক দুগ্ধবতী গোর ন্যায়-উত্তরোত্তর বর্ষে ইষ্ট-ফল-প্রসবিনী হউক ॥ ১৪ ॥ হে অষ্টকা-রাত্রি! তুমি সংবৎসরের পরিমাণকর্ত্রী, তোমাকে আমরা পূজা করিতেছি, তুমি আমাদিগের অপত্যাদিকে জরা শূন্য কর, এবং আমাদিগকে ধনের রক্ষণ সহকারে পালন কর ॥ ১৫ ॥

এই অনুমতি দেবী ইন্দ্রাদি দেবগণেতে যজ্ঞ বোধন কারন্, এবং হব্য-সমুদয়ের বহনকারী এই অগ্নি দেবতা, দত্ত হবিষ্ক* আমাদিগকে সুখ প্রদান করুন ॥ ১৬ ॥

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे द्वितीयप्रपाठकस्य द्वितीय खण्डः समाप्तः॥

१६—अग्निर्देवता। अनुष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः। सौविष्ट कृत मष्टम्या जुहुयात्, गो० ४,१

*দত্ত-হবিষ্ক—দত্ত হইয়াছে হবি যাহা কর্ত্তৃক।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ तृतीयः खण्डः ॥

स्वाहा सोमाय पितृमते ॥ १ ॥ स्वाहाऽग्नये कव्य-वाहनाय ॥ २ ॥ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः ॥ ३ ॥ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः

यः पितृणां सोमः तस्मै स्वाहा ॥ १ ॥

कव्यं—पैत्रं हविः, तद्वहतीति कव्यवाहनः तस्मै अग्नये स्वाहा, तमग्निमुद्दिश्य कव्यं त्यजामि इति—भावार्थः ॥२॥

'वेदिषदः' वेदिगताः ये 'असुराः' विरोचनादयः 'रक्षांसि' राक्षसाः, ते 'अपहताः' अपनीताः भवन्तु ॥ ३ ॥

'ये' 'असुराः' 'रूपाणि' स्वकीयानि रौद्राणि 'मुञ्चमानाः' त्यजन्तः 'सन्तः' 'स्वधया' पित्र्येण हविषा 'चरन्ति' जीवन्ति,

পিতৃগণ অধিষ্ঠিত হইয়া থাকেন যে সোমদেবে, তাহার উদ্দেশে এই কব্য পরিত্যক্ত হইল ॥ ১ ॥

পিত্রুদ্দেশে পরিত্যক্ত কব্যের (হবি) বহনকারী যে অগ্নিদেব তাঁহার উদ্দেশে এই কব্য পরিত্যক্ত হইল ॥ ২ ॥

বেদিতে আগত অসুর রাক্ষসেরা দূরীভূত হউক ॥ ৩ ॥

যে সকল অসুরেরা স্বকীয় রূপ পরিত্যাগ করতঃ অর্থাৎ ছদ্মবেষে পিত্রুদ্দেশে দত্ত হবির দ্বারা জীবিতেছে এবং

१,२ — पितृ-दैवता । यजुः । उपघात-होमे विनियोगः ।

"उपघातं जुहुयात्,—स्वाहा सोमाय पितृमत इति पूर्व्वां स्वाहाग्नये कव्यवाहनायेत्युत्तराम्' गो॰ ४, २ ।

३—पितृ-दैवता । यजुः । लेखोल्लेखे विनियोगः ।

'दक्षिणायां लेखामुल्लिखेदपहता असुरा इति' गो॰ ४, ३ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रधय। चरन्ति ॥ परा पुरो निपुरो ये भरन्त्य-
ग्निर्लोकात् प्रणुदत्वस्मात् ॥ ४ ॥ एत पितरः सो-
म्यासो गम्भीरेभिः पथिभिः पूर्विणेभिः ॥ दत्ता स्मभ्यं
द्रविणेह भद्रं रयिं च नः सर्ववीरं नियच्छत ॥ ५ ॥

रः' लोकत्रयं 'परा' पराभवन्ति, ये च 'पुरः' त्रिपुरवा-
रः 'नि' निघ्नन्ति, 'ये' च 'भरन्ति' हरन्ति हव्यादीन्,
नसुरान् 'अग्निः' देवः 'अस्मात्' 'लोकात्' भू-लोकात्
' दूरीकरोतु ॥ ४ ॥

म्यासः' सोम्याः सोमदर्शनाः हे 'पितरः!' 'गम्भीरेभिः'
सुविस्तृतैः 'पूर्व्विणेभिः' पूर्व्वैः पूर्व्वपुरुषाचरितैः
' मार्गैः 'एत' इह आगच्छत। हे पितरः! 'इह' सं-
स्मभ्य' 'द्रविणा' द्रविणम् द्रव्यं ऐश्वर्य्यं वा, 'दत्त' 'च'
:' अस्मभ्यं 'भद्रं' कल्याणं; अपिच 'सर्व्ववीरं' सर्व्वे-
त्रपौत्रादयः येन जीवन्ति तादृशं 'रयिं' अन्नधनं 'नि-
प्रदेहि ॥ ५ ॥

' অসুরেরা, লোকত্রয়কে পরাভব করিতেছে, এবং যে
লোকত্রয়-নিবাসি অসুরেরা দৈব, পৈত্র্য হব্যাদি
তছে, হরিতেছে, সেই সকল অসুরদিগকে অগ্নিদেব
াক হইতে নিষ্কাশিত করুন ॥ ৪ ॥

সৌম্য দর্শন পিতাসকল! সুবিস্তৃত, পূর্ব্ব পুরুষানু-

ग्नि देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। कर्षिकाग्नि-स्थापने विनियोगः।
। निदध्याद् ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना इति' गों ४, ३।
पितरो देवताः। त्रिष्टुप् छन्दः। पित्रावाहने विनियोगः।
पितृनावाहयत्येत पितरः सोम्यास इति" गों ४, ३।

For Private And Personal Use Only

অত্র পিতরো মাদয়ধ্বং যথাভাগমাবৃষায়ধ্বং ॥ ৬ ॥
অমী মদন্ত পিতরো যথাভাগমাবৃষা য়ষত্ ॥ ৭ ॥
নমো বঃ পিতরো জীবায় নমো বঃ পিতরঃ শূষায় ॥

'পিতরঃ' 'অত্র' পিণ্ডে 'মাদয়ধ্বম্' তৃপ্যত, 'যথা ভাগম্' যো যস্য ভাগঃ তম্ 'আবৃষায়ধ্বম্' অভিলষত ॥ ৬ ॥

অনেন পিণ্ডদানেন 'অমী' 'পিতরঃ' 'মদন্তঃ' তৃপ্তবন্তঃ সন্তঃ 'যথা ভাগম্' যো যস্য ভাগঃ তং 'আবৃষা য়ষত্' অভিলষিতবন্তঃ গৃহীতবন্তঃ ॥ ৭ ॥

হে 'পিতরঃ' 'বঃ' যুষ্মভ্য 'নমঃ' নমামি, কস্মৈ? হেতুরুচ্যতে— 'জীবায়' দীর্ঘজীবনায়। 'শুষায়' বলায়। 'ঘোরায়' পরিতৃপ্তয়ে ক্রমে আচরিত, পথেরদ্বারা এই স্থানে আগমন কর; আসিয়া এই সংসারে আমাদিগকে দ্রব্য দাও, এবং কল্যাণ, দাও অপিচ, অন্নধন এরূপ প্রদান কর যদ্বারা পুত্র পৌত্রাদি সকল অনায়াসে জীবন নির্ব্বাহ করিতে পারে ॥ ৫ ॥

পিতাসকল এই পিণ্ডে তৃপ্ত হউন যাহার যে ভাগ তাহা লাভ করুন ॥ ৬ ॥

এই পিণ্ডদান করায় এই সকল পিতারা পরিতৃপ্ত হইয়া আপনার আপনার ভাগ গ্রহণ করিলেন ॥৭॥

হে পিতাসকল! আপনাদিগকে নমস্কার করিতেছি, দীর্ঘজীবী হইবার নিমিত্ত, বলী হইবার নিমিত্ত, পরিতৃপ্ত

৬, ৭— অনয়োঃ পিতরো দেবতাঃ। যজুঃ। জপে বিনিয়োগঃ।

"জপত্যত্র পিতরো মাদয়ধ্বং যথাভাগমাবৃষায়ধ্বমিত্যপর্য্যাবৃত্য পুরীচ্ছ্বাসাদভিপর্য্যাবর্ত্তমানো জপেদমী মদন্ত পিতরো যথাভাগমাবৃষা য়ষতেতি" গো০ ৪,২।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो रसाय ॥८॥ नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यवे ॥ नमो वः पितरः पितरो नमो वः ॥ ९ ॥ गृहान्नः पितरो दत्त ॥ १० ॥ सदोवः पितरो देष्म ॥ ११ ॥

'रसाय' आनन्दाय ॥ ८ ॥ स्वधायै' अन्नाय 'मन्यवे' क्रोधाय— क्रोधमूल-सम्पत्तये । अन्यत् सुगमम् ॥ ९ ॥

हे 'पितरः !' 'गृहान्नः' गृहस्य अन्नानि 'दत्त' प्रयच्छत । अथवा 'नः' अस्मभ्यं 'गृहान् 'दत्त' प्रयच्छत ॥ १० ॥

हे "पितरः' 'वः' युस्मभ्य' 'सदः' स्थानं 'देष्म' वय मिति शेषः ॥ ११ ॥

হইবার নিমিত্ত, আনন্দ লাভের নিমিত্ত, অন্নলাভের নিমিত্ত, ইহ লোকে উপকারি-ক্রোধের মূলীভূত-সম্পত্তির নিমিত্ত, বার বার নমস্কার করিতেছি ॥ ৮ ॥—॥ ৯॥

হে পিতানকল! গৃহের অন্ন [ভক্ষ্য] সকল প্রদান কর, অথবা আমাদিগকে গৃহ প্রভৃতি স্থাবর পদার্থ সকল প্রদান কর ॥১০ ॥

হে পিতাসকল! তোমাদিগকে আমরা এই স্থান উপবেশন করিতে দিলাম ॥ ১১ ॥

८, ९— अनयोः, पितरो देवता: । उष्णिक् छन्दः । जपे विनियोग: ।

'पूर्व्वस्यां कर्ष्वां दक्षिणेनोत्तानौ पाणी कृत्वा—नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरो शूषायेति मध्यमायां, सव्योत्तानौ-नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो रसायेत्युत्तमायां, दक्षिणोत्तानौ—नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यव इति, अथाञ्जलिकृतो जपति – नमो वः पितरः पितरो नमो व इति गो० ४, ३ ।

१०— पितरो देवता । यजुः । गृहेक्षणे विनियोग: ।

'गृहानवेक्षते गृहान्नः पितरो दत्तेति' गों ४, ३ ।

११ — पितरो देवता: । यजुः ।पिण्डावेक्षणे विनियोग: ।

'पिण्डानवेक्षते सदो वः पितरो देष्मेति' गों ४, ११ । ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एतद्वः पितरो वास॥१२॥ ऊर्ज्जं वहन्तीः रमृतं घृतंपय. कीलालंपरिस्रुतं॑स्वधास्थतर्पयत मे पितॄन्॥१३॥आधत्त पितरोगर्भंकुमारंपुष्करस्रजं॥ यथेहपुरुषस्यात्॥ १४ ॥

हे 'पितरः !' 'वः' युष्माकम् 'एतत्' 'वासः' परिधेयं वस्त्रम् ॥ १२ ॥

हे आपः ! यूयं 'स्वधा' पितॄणां परमाशिषः 'स्थ' भवथ, अतः 'ऊर्ज्जम्' अन्नम् 'अमृतम्' जरामृत्यु-शून्य-कारिणम् मधु, 'घृतं', 'पयः' क्षीरं 'कीलालम्' जलञ्च 'परिस्रुतं' इदं सर्व्वं 'वहन्तीः' वहन्त्यः 'पितॄन्' इमान् 'तर्पयत' परितृप्तान् कुरुत ॥ १३ ॥

हे 'पितरः!' 'पुष्करस्रजम्'। अम्बरमाला-धारिणम् सूर्य्यं चन्द्र मिव वा 'कुमारं' पुत्ररूपं 'गर्भं' 'आधत्त' प्रदद्त। पुनश्चो-

হে পিতাসকল ! তোমাদিগকে আমরা এই বস্ত্র পরিধান করিতে দিলাম ॥ ১২ ॥

হে জল ! তোমরা পিতৃদিগের পরম সুখ-দায়ক হইতেছ এই হেতু অন্ন, ও জরা-মৃত্যু-প্রভৃতির বিনাশক মধু, ঘৃত, দুগ্ধ, এবং পরিস্রুত জল এই সকল বহন করত এই সকল পিতাকে পরিতৃপ্ত কর ॥ ১৩ ॥

१२—पितरो देवता:। यजुः। सूत्रदाने विनियोगः।
सूत्रतन्तुं गृहीत्वा ** पिण्डे निदध्यात् ** पितर्नाम गृहीत्वा सावेतत्ते वासो—येचात्वात्रनुयांश्च त्वमनु तस्मै ते स्वधेति, गो० ४,३ ॥

१३ –पितरो देवता:। पिपीलिक मध्योष्णिक् छन्दः। पिण्डपरिषेके विनियोगः॥
'पिण्डान् परिषिञ्चेदूर्जं वहन्तीरिति' गो ४, ३।

१४ – पितरो देवता:। गायत्री छन्दः पिण्ड प्राशने विनियोगः।
'मध्यमं पिण्डं पत्नी पुत्रकामा प्राश्नीयादाधत्त पितरो गर्भमिति गो० ४,३।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभून्नोदूतो हविषो जात वेदा अवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा ॥ प्रादात् पितृभ्यः स्वधया ते अचन् प्रजानन्नग्ने पुनरेहि योनिं ॥ १५ ॥ वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैतान्वेत्थ निहितान् पराचः ॥ मेदसः कुल्या अभितान्

स्यते—'इह' मद्‌गर्भे 'पुरुषः' पुरुष इति विख्यातः तनयो 'यथा-स्यात्' तथा प्रसन्नो भवेति शेषः ॥ १४ ॥

'जातवेदाः' अग्निः 'नः' अस्माकं सम्बन्धिनः 'हविषः' 'दूतः' वाहकः 'अभूत्'। अतएव 'हव्यानि' अस्मद्दत्तानि 'सुरभीणि कृत्वा' 'अवाट्' वहनं कृतवान्। 'स्वधया' अस्मदुक्तया वाचा सह तानि च 'पितृभ्यः' 'प्रादात्' दत्तवान्। 'ते' च पितरः 'अचन्' तानि भक्षितवन्तः। इदानीं प्रार्थये—हे 'अग्ने!' पितृभक्षणं 'जानन्' सन् 'योनिं' स्वस्थानम् अत्र 'पुनः प्रेहि' पुनः प्रत्यागच्छ ॥ १५ ॥

হে পিতাসকল! আকাশরূপি মালাধারি সূর্য্যের ন্যায় বা ঐরূপ চন্দ্রের ন্যায় পুত্ররূপি গর্ভ প্রদান কর, পুনশ্চ এই আমার গর্ভ পুরুষ বলিয়া খ্যাত্যাপন্ন পুত্র, যেরূপে হয় এবম্বিধ আশীর্ব্বাদ কর ॥ ১৪ ॥

জাতবেদ নামক অগ্নি, অস্মদাদি-প্রদত্ত-হবির দূত (বাহক) হইয়াছিল, অতএব অস্মদাদি প্রদত্ত-হব্য সমুদয়কে সুগন্ধি করত বহন করিয়া ছিল; স্বধা রূপি অস্মদাদ্যুক্ত বাক্য-সহকারে সেই সমুদয় হব্য পিতৃগণকে দিয়াছিল; পিতৃলোকেরা

१५—अग्निर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। उल्मुका भ्युक्षणे विनियोगः।
"अभून्नो दूतो हविषो जातवेदा इत्युल्मुक मग्निरभ्युक्षा' गो॰ ४, ३।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्रवन्तु सत्या एषा माशिषः सन्तु कामात् ॥ ३ ॥ १६ ॥
जातवेदो वपया गच्छ देवांस्त्वं हि होता प्रथमो

हे 'जातवेदः' अग्ने ! यत्र' यस्मिन् प्रदेशे 'एतान्' 'वा' पितॄन् 'पराचः' गमन-पराङ्मुखान् उपविष्टानिति यावत् 'निहितान्' स्थितान् 'इत्थ' जानीहि, तत्रैव प्रदेशे तेभ्यः 'पितृभ्यः' 'वपां' मेदः [चरवि] 'वह' प्रापय। 'मेदसः' अस्य 'कुल्याः' कृत्रिमासरितः 'तान्' अभिस्रवन्तु। 'एषाम्' इमानां 'कामात्' इच्छातः हेतोः 'आशिषः' आशीर्व्वादाः 'सत्याः' अमृताः सफलाः 'सन्तु' ॥ १६ ॥

हे 'जातवेदः' अग्ने ! 'हि' यतः 'त्वं' 'प्रथमः' मुख्यः 'होता' সেই সমুদয় ভক্ষণ করিয়াছিলেন; সম্প্রতি প্রর্থিতেছি— হে অগ্নে! পিতৃলোকের ভক্ষণ জ্ঞাত হইয়া স্বস্থানে (এইস্থলে) পুনঃ প্রত্যাগমন কর ॥ ১৫ ॥

হে জাতবেদ অগ্নে! যে প্রদেশে গমন-পরাঙ্মুখ, অবস্থিত, এই সকল পিতৃলোককে জানিবা, সেই স্থানেতে পিতৃদিগকে মেদ বহন করিয়া দাও,—এই মেদের কুল্যা (কৃত্রিম-সরিৎ) প্রস্তুত করত অভিষেক কর; এই সকল পিতৃদিগের স্বেচ্ছা পূর্ব্বক প্রদত্ত আশার্ব্বাদ-সকল সত্য *(সফল) হউক ॥ ১৬ ॥

---

१६ अग्नि र्दैवता। त्रिष्टुप् छन्दः। वपाहोमे विनियोगः।

* 'अथान्वष्टक्य स्थालीपाकेन' इति गो० ४, ४।
'पितृ देवत्येषु पशुषु वह वपां जात वेदः पितृभ्य इति वपां जुहुयात् गों ४,४ ।

* अथोतो हलाभियोगः गो० ४, ४।
"स्थालीपाकस्य जुहुयादेकाष्टका तपसा तप्यमानेति" गो॰ ४, ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बभूव॥ सत्या वपा प्रगृहीता मे अस्तु समृध्यतां मे यदिदं करोमि॥१७॥ यत् कुसीदमप्रदत्तं मयेह येन यमस्य निधिना चरामि॥ इदं तदग्ने अनृणो भवामि जीवन्नेव प्रतिदत्ते ददानि॥१८॥ एकाष्टका-तपसा

देवानामाह्वाता 'बभूव', अतः 'वपया' अस्मद्दत्तया गृहीतया 'देवान्' इन्द्रादीन् गच्छ। इयञ्च 'मे' मम 'प्रगृहीता' प्रदानाय वपा 'सत्या' दोषशून्या 'अस्तु' त्वत्प्रसादादिति भावः। 'यत् इदं' कर्म करोमि तत् 'समृध्यताम्' समृद्धि-युक्तं कुरु॥१७॥ हे 'अग्ने!' 'इह' जन्मनि 'यत्' 'कुसीदम्' 'अप्रदत्त'' न दत्तम्, 'येन' हेतुना 'यमस्य' धर्मराजस्य 'निधिना' केश-ग्रहणेन 'चरामि' अहमिति यावत्, 'तत्' 'इदं' कुसीदम् 'ददानि'' प्रतिदत्ते च अस्मिन् अहं 'जीवन् एव' जीवितशरीर एव 'अनृणः' ऋणशून्यो भवामि॥१८॥

হে জাতবেদ অগ্নে! যেহেতু তুমি দেবতাদিগের মুখ্য আহ্বান-কর্ত্তা হইয়াছিলে, অতএব তুমি অস্মদ্দত্ত বপার সহিত ইন্দ্রাদি-দেবতা দিগের নিকটে যাও, তোমার প্রসাদে আমার দানের নিমিত্ত আয়োজিত বপা (মেদ) দোষ-শূন্য হউক, আমি এই যজ্ঞ করিতেছি অতএব আমাকে সমৃদ্ধিশালী কর॥ ১৭॥

হে অগ্নে! এই জন্মে যাহা কিছু ঋণ করিয়া কুসীদ (শুদ) প্রদান করি নাই;—যেহেতু আমি ধর্ম্মরাজ-কর্ত্তৃক যেন কেশা-

१७—अग्निर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। वपा होमे विनियोगः।

'देव देवत्र्येषु जातवेदो वपया गच्छ देवानिति" गो॰ ४, ४।

१८—अग्निर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। होमे विनियोगः।

ऋणे प्रज्ञायमाने गोलकानां मध्यम पर्णेन जुहुयात् यत् कुसीदमिति गो॰ ४,४।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

তপ্যমানা জজান গর্ভং মহিমান মিন্দ্রং ॥ তেন দেবা অসহন্ত শত্রূন্ হন্তা সুরাণা মভবচ্ছচীভিঃ ॥ ১৯ ।

'একাষ্টকাতপসা' এক সংখ্যকাষ্টকায়াঃ তপসা শাস্ত্রোক্ত বিধিবৎ কর্ম্মণা 'তপ্যমানা' তপঃ কর্ম্মবতী কাচিৎ অদিতিঃ অখণ্ডনীয়া নিত্যাশক্তিঃ 'মহিমানং' মহত্ত্বযুক্তম্ 'ইন্দ্রং' ঐশ্বর্য্যশালিনং ইন্দ্রনামকং বা 'গর্ভং' 'জজান' জনিতবতী। 'তেন' ইন্দ্রেণ অধিপতিভূতেন সহ মিলিত্বা 'দেবাঃ' বায়্বাদয়ঃ 'শত্রূন্' বৃত্রাদীন্ 'অসহন্ত' পরাভূতান্ কৃতবন্তঃ। ততঃ প্রভৃতি স ইন্দ্রঃ 'শচীভিঃ' বৃত্রবধাদিভিঃ স্বকর্ম্মভিঃ 'অসুরাণাং' 'হন্তা' ইতি প্রসিদ্ধঃ ॥ ১৯ ॥

কর্ষিত হইয়া আচরণ করি অতএব সেই কুসীদ দিব, এবং দিতেছি, জীবিত থাকিতে থাকিতেই এ শরীরে ঋণ-শূন্য হইব ॥ ১৮ ॥

বিধিমত একটি অষ্টকারূপ তপোদ্বারা তপ্যমান কোন এক অখণ্ডনীয় অদিতি নাম্নী নিত্যাশক্তি, মহিমাশালি ইন্দ্র-নামে গর্ভ প্রাদুর্ভূত করিলেন, বায়ু প্রভৃতি দেবতারা সেই অধিনায়ক ইন্দ্রের সহিত মিলিত হইয়া বৃত্রাদি শত্রু-দিগকে পরাভব করিয়াছিলেন তদবধি সেই ইন্দ্র বৃত্রবধাদি স্বীয় ক্রিয়া রূপিণী শচীর সহিত বিরাজমান হইয়া অসুর-দিগের হন্তা বলিয়া প্রসিদ্ধ হইলেন ॥ ১৯ ॥

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয় প্রপাঠকস্য তৃতীয়-খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

১৯ — ইন্দ্রাণী দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। স্থালী পাক হোমে বিনিয়োগঃ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ चतुर्थः खण्डः ॥

इदं भूमे र्भजामह इदं भद्रꣳ सुमङ्गलं॥ परा सपत्नान्बाधस्वान्येषां विन्दते वस्वन्येषां विन्दते धनं ॥१॥ इमꣳ स्तोम मर्हते जातवेदसे रथमिव संमहेमा

हे अग्ने ! 'भूमेः' 'इदं' खण्डं स्थण्डिलात्मकं 'भजामहे, 'इदं' 'भद्र' कल्याणकरं 'सुमङ्गलं' मङ्गलकरं पुनरुक्त्या अति-कल्याणकरं अस्माकं भवत्विति शेषः। किञ्च 'सपत्नान्' अस्मच्छत्रून् 'पराबाधस्व' सुष्ठु पीड़यस्व। किञ्चान्यदपि 'अन्येषां' परेषां शत्रूणां 'वसु' धनम् 'विन्दते' लभते इत्थं याजक इति श्रुतमित्यभिप्रायः॥ 'अन्येषां विन्दते धनम्'—इत्यंशस्तु 'अन्येषां विन्दते वसु' इति स्थानीयं रात्रौ पाठमिति युक्त मत ॥ १ ॥

'इमं' 'स्तोमं' स्तवं, 'सम्महेमा' पूजोपकरणयुक्तं कुर्य्याम, —किमर्थं ? 'जात- वेदसे' एतन्नामकाग्नये, 'अर्हते' स्तुत्याय, 'मनीषया' प्रज्ञया, सारथि र्यथा 'रथमिव' रथं सम्महेमा तद्वत्

হে অগ্নে! আমরা ভূমির এই স্থণ্ডিল ভাগ উপাসনা-করিতেছি তুমি আমাদের কল্যাণকর, মঙ্গলকর অতিশয় কল্যাণকর হইতেছে, অতএব আমাদের সপত্ন-শত্রুদিগকে ভাল-রূপে পীড়া দাও এবং অন্যান্য শত্রুদিগের ধন হরণ কর॥ ১।

নিজ প্রজ্ঞাবলে সারথি যেমন রথকে চালনোপযুক্ত করে তদ্রূপ আমরা এই স্তুতিকে জাতবেদ নামক অগ্নির নিমিত্ত পূজোপকরণে উপযুক্ত করি, যেহেতু, এই অগ্নির

---

१ — अग्निर्देवता। अनुष्टुप् छन्दः। भूमि जपे विनियोगः।

*'काम्येष्वत ऊर्ध्वम् गो॰ ४, ५।

भूमौ न्यञ्चौ पाणी प्रतिष्ठाप्येदं भूमिर्भजामह इति वस्वन्तं रात्रौ धनमिति गो॰ ४,५।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनीषया ॥ भद्रा हि नः प्रमति रस्य सꣳसद्यग्ने सख्ये मारिषामा वयं तव ॥२॥ भरा मेध्य' कृणवामा हवीꣳषि ते चितयन्तः पर्वणा पर्वणा वयं ॥ जीवातवे प्रतराꣳ साधया धियोऽग्ने सख्ये मारिषामा वय न्तव ॥३॥

इति मेषः । 'हि' यतः, 'नः' अस्माकं, 'अस्य' अग्नेः प्रसादात्, 'भद्रा' कल्याणी 'प्रमतिः' प्रकृष्टा मतिः, 'संसदि' सभायां जायते; हे 'अग्ने!' 'तव' 'सख्ये' सख्यतया अवस्थिताः वयं सर्व्वे, केनाप्यनेन दुरात्मना 'मा' 'रिषामा' मा हिंसिस्महि ॥२॥

हे 'अग्ने!' त्वदर्थं, 'इध्म' यज्ञदारु, 'भवाम' आहरामः, 'हवींषि' चरु-प्रभृतीनि, 'पर्व्वणा पर्व्वणा' पर्व्वणि पर्व्वणि, 'चितयन्तः' उत्पादयन्तः, 'कृणवामा' सम्पादयामः, निर्व्वपामइति यावत्, किमर्थं?—'प्रतरां' सुदीर्घकालं, 'जीवातवे' जीवनाय, किञ्च 'धियः' कर्म्माणि 'साधया' सफलानि कुरु, शिष्टं पूर्व्ववत् ॥ ३ ॥

প্রসন্নতাতেই আমাদের, সভাতে কল্যাণদায়িনী প্রকৃষ্ট-বুদ্ধি হইয়াথাকে, হে অগ্নে! তোমার সখ্যভাবে অবস্থিত আমরা সকলে, যেন কোন দুরাত্মাদি কর্তৃক নষ্ট না হই ॥ ২॥

হে অগ্নে! দীর্ঘায়ুর নিমিত্ত আমরা যজ্ঞ-কাষ্ঠের আহরণ ও পর্ব্বে পর্ব্বে চরু প্রভৃতি হব্য সকলের সম্পাদন করিয়া, তোমাকে দান করি, তুমি আমাদিগের কার্য্য-সকল সফল কর, আমরা তোমার সহিৎ সখ্যভাবে অবস্থিত, আমাদিগকে যেন কোন দুষ্টাত্মা হিংসা না করে ॥ ৩ ॥

२,३,४ — एषां त्रयाणां अग्निमारुते देवते । जगती छन्दः । परिसमूहने विनियोगः ।
इमं स्तोममिति त्यृचेन परिसमूहेत् गो०४, ५ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

শকেম ত্বা সমিধং সাধয়া ধিয় স্তে দেবা হবি রন্ত্যাহুতং॥ ত্বমাদিত্যাঁ আবহ তান্ হ্যুশ্মস্যগ্নে সখ্যে মারিষামা বয় ন্তব ॥ ৪ ॥ তপশ্চ তেজশ্চ শ্রদ্ধাচ হ্রীশ্চ সত্যঞ্চা ক্রোধশ্চ ত্যাগশ্চ ধৃতিশ্চ ধর্ম্মশ্চ সত্ত্বং চ

হে ‘অগ্নে’ ত্বং অস্মাকং ‘ধিয়ঃ’ কর্ম্মাণি, বুদ্ধীর্ব্বা ‘সাধয়া’ সাধয়, ত্বদারাধনযোগ্যানি নিষ্পাদয়। যথা বয়ং ‘ত্বা’ ত্বাং, ‘সমিধং’ পরিচরিতুং ‘শকেম’ শক্নুয়াম, ‘তে’ ত্বয়ি, ‘আহুতং’ দেবাঃ ‘অদন্তি’ ভক্ষয়ন্তি, অতস্ত্বং ‘তান্’ ‘আদিত্যান্’ অদিতেঃ পুত্রান্, ‘আবহ’ আবাহয় ‘হি’ যতঃ বয়ং ‘তান্’ আদিত্যান্ ‘উশ্মসি’ কামযামহে। শিষ্টং পূর্ব্ববৎ ॥ ৪ ॥

‘তপশ্চ’ ইত্যাদি যানি, ‘তানি’ অহং ‘প্রপদ্যে’ শরণং গতোঽস্মি। ‘তানি’ তপঃ-প্রভৃতীনি ব্রহ্মপর্য্যন্তানি ‘মাং’ ‘অবন্তু’

হে অগ্নে! তুমি আমাদের কর্ম্মসকল ও বুদ্ধিসকল তোমার আরাধনের যোগ্য কর, যাহাতে আমরা তোমার পরিচর্য্যা করিতে যোগ্য হই, তোমাতে যাহা আহুতি দেওয়া যায়, তাহা দেবতারা ভক্ষণ করেন্, অতএব তুমি সেই অদিতিপুত্র দেবগণকে আহ্বান কর, আমরা তাঁহাদিগকে কামনা করিতেছি, আমরা তোমার সহিত সখ্য ভাব অবলম্বন করিয়া থাকি, কোন দুরাত্মা যেন আমাদিগকে হিংসা না করে ॥ ৪ ॥

তপ, তেজ, শ্রদ্ধা, লজ্জা, সত্য, অক্রোধ, ত্যাগ, ধারণা, ধর্ম্ম সত্ত্ব, বাক্য, মন, আত্মা, ব্রহ্ম, এই সকলের আমি শরণাপন্ন হইতেছি, এবং এই তপঃ প্রভৃতি ব্রহ্ম পর্য্যন্ত আমাকে

For Private And Personal Use Only

वाक् च मनश्चात्मा च ब्रह्म च तानि प्रपद्ये तानि मा-
मवन्तु भूर्भुवः स्वर् ॐ महान्त मात्मानं प्रपद्ये ॥ ५ ॥
विरूपाक्षोऽसि दन्ताञ्जि स्तस्य ते शय्या पर्णे गृहा
अन्तरिक्षे विमितꣳ हिरण्ययं तद्देवानाꣳ हृदयान्य-
रक्षन्तु। ततश्च 'भूः' पृथिवी, 'भुवः' अन्तरीक्षं, 'स्वः' द्यौ एतत् त्रिलोक-व्यापकम् 'ओं' इत्येतत् प्रतीकेन बोध्यं 'महान्तं' अतिमहत्-परिमाणम् अनन्तम् 'आत्मानम्' आत्मस्वरूपम् 'प्रपद्ये' प्रपन्नोस्मि ॥ ५ ॥

हे अग्ने ! त्वं 'विरूपाक्षः' अनियमित चक्षु विशिष्टः सहस्राक्षः अनन्ताक्ष इति यावत् 'असि' भवसि, 'दन्ताञ्जिः' व्यक्त दन्तश्च असि सर्व-भुक्त्वात्। 'तस्य' एवम्भूतस्य 'ते' तव 'पर्णे'

রক্ষা করুন, আমি ভূ (পৃথিবি) ভুব [অন্তরীক্ষ] স্ব [দ্যু] এই ত্রিলোকব্যাপক, ওঁ—এই প্রণব বাচ্য, অতি মহান্ আত্মার, শরণাপন্ন হইতেছি ॥ ৫ ॥

হে অগ্নে! তুমি বিরূপাক্ষ (অনন্তনয়ন) এবং ব্যক্ত দন্ত হইতেছ, তোমার শয্যা শুষ্ক তৃণ পত্রাদিতে হইয়া থাকে, বিদ্যুৎ রূপে প্রকাশিত হওয়ায় অন্তরীক্ষে হিরণ্ময় গৃহ, বিশেষ-রূপে যেন নির্ম্মিত হইয়া আছে, সেই হেতু তোমার গৃহস্থিত লৌহময় ঘটের মধ্যে ইন্দ্রাদি দেবগণের মন যেন স্থাপিত হইয়া আছে, তুমি অমুদ্রিত নয়ন রাক্ষসের অপেক্ষায় প্রমাদ-শূন্য ও সমধিক বলশালী হইতেছ; তুমি বলের অবসাদ-

---

५ — रुद्ररूपोऽग्निर्देवता । निगदः । जपे विनियोगः ।

काम्येषु च प्रपदस्तपश्च तेजश्चेति जपित्वा गौं ४,५ ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्मये कुम्भे अन्तः सं निहितानि बलभृच्च बलसाच्च रचतो प्रमनी अनिमिषतः सत्यं यत्ते द्वादश पुत्रा स्ते त्वा सम्वत्सरे सम्वत्सरे कामप्रेण यज्ञेन याजयित्वा पुनर्ब्रह्मचर्यमुपयन्ति त्वं देवेषु ब्राह्मणोऽस्यहं मनुष्येषु, ब्राह्मणो वै ब्राह्मणा रुपधावत्युप त्वा धावामि

शुक्रद्रण-पश्चाद्‌ 'शय्या' सुखशयन-स्थानम् अस्ति । 'अन्तरिचे' च 'हिरण्मयं' हिरण्मयं 'विमितं विशेषेण निर्मितं 'गृहा' गृहम् अस्ति विद्युद्रूपेण विद्योतमानत्वात् । 'तत्' तव च गृहे, 'अयस्मये' लोहमये 'कुम्भे' घटे 'अन्तः' मध्ये, 'सन्निहितानि' स्थापितानि इव देवानां इन्द्रादीनां 'हृदयानि' मनांसि सन्ति सर्व्वेषां हविर्वाहकत्वात् । 'अनिमिषतः' अच्चिणी अनिमीलितः 'रचतः' अपेचया 'अप्रमणी' प्रमाद-शून्यः स अधिकः 'बलभृत्' बल-शाली 'च' अपिच 'बलसात्' बलस्य सीदयिता

কারী হইতেছ, তোমার দ্বাদশটী আত্ম-ভাবাপন্ন পুত্রস কল যাহা প্রসিদ্ধ আছে, তাহা সত্য ; সেই সকল পুত্রেরা প্রতি বৎসরে যথাভিলষিত ফলপ্রদ যজ্ঞের দ্বারা তোমাকে যজন করাইয়া পুনঃপুনঃ ব্রহ্ম-সামীপ্য প্রাপ্ত করায় ; তুমি সমস্ত দেবতাদিগের (সমস্ত প্রদীপ্ত বস্তুদিগের) মধ্যে ব্রাহ্মণ [মুখ্য] হইতেছ, আমি মনুষ্যদিগের মধ্যে ব্রাহ্মণ হইতেছি; ব্রাহ্মণই ব্রাহ্মণের অর্থাৎ স্বজাতীয়ই সজাতীয়ের বিশেষ উপকার করিতে পারে অতএব তোমার জপানুষ্ঠায়ি আমার প্রতি প্রতিকূল জপ করিও না; তোমার উদ্দেশে হবন কারি আমার প্রতি প্রতিকূল হবন করিও না ; যাগাদ্যনুষ্ঠান কারি আমরা

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जपन्तं मा माप्रतिजापी र्जुह्वन्तं मा माप्रतिहौषीः कुर्वन्तं मा माप्रतिकार्षीं स्त्वां प्रपद्ये, त्वया प्रसूत इदं कर्म्म करिष्यामि तन्मे राध्यतां तन्मे समृध्यतां तन्म उपपद्यताᳬ समुद्रो विश्वव्यचा ब्रह्मा नुजानातु तुर्य्यो मा विश्ववेदा ब्रह्मणः पुत्रोनुजानातु

त्वमसीति शेषः। 'ते' तव द्वादश संख्यकाः 'पुत्राः' आत्मभावाः इति 'यत् प्रसिद्ध' तत् सत्यम्। 'ते' पुत्राः 'संवत्सरे संवत्सरे' प्रतिहायने 'कामप्रेण' यथाभिलषितफलेन 'यज्ञेन' 'त्वाम्' 'याजयित्वा' 'पुनः' पुनश्च 'ब्रह्मचर्य्यम्' ब्रह्म-सामीप्यम् 'उपयन्ति' प्राप्नुवन्ति। 'त्वं' 'देवेषु' समस्त-प्रदीप्त-वस्तुषु 'ब्राह्मणः' मुख्यः 'असि', अहं 'मनुष्येषु' ब्राह्मणः ब्राह्मणकुलोत्पन्न इति यावत्; 'ब्राह्मणो वै ब्राह्मणम्' सजातीय एव सजातीयम् उपधावति उपकरोति, अतः 'जपन्तं' 'मा' मां 'मा प्रतिजापीः' प्रतिकूलजपं मा कुरु—'कुर्वन्तं' यागाद्यनुष्ठान कारिणं 'मा'

প্রতি প্রতিকূল যাগ করিও না, আমি তোমাকে শরণ লইতেছি; তোমাকর্ত্তৃক অনুজ্ঞাত হইয়াই আমি এই কার্য্য করিতেছি; তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য সিদ্ধ হইবে, এবং তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য সমৃদ্ধি যুক্ত হইবে; তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য উপপন্ন হইবে; আপনি সমুদ্রের ন্যায় অসীম, সর্ব্বত্র গামী, ব্রহ্মা, [অতি বৃহৎ পরিমাণক] হইতেছেন; আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; আপনি তুর্য্য (দব, বাড়ব, জাঠর, বৈদ্যুৎ ভেদে চতুর্থ) সর্ব্ববিৎ, ব্রাহ্মণের পুত্র [ঈশ্বরের পুত্র]

For Private And Personal Use Only

श्वात्रोमा प्रचेता मैत्रा वरुणो नुजानातु तस्मै विश्वरू पाक्षाय दन्ताञ्जये समुद्राय विश्वव्यचसे तुथाय विश्व-

मां 'मा प्रतिकार्षीः' प्रतिकूलं कर्म मा कुरु। 'त्वां' 'प्रपद्ये' प्रपन्नोस्मि। 'त्वया' 'प्रसूतः' अनुज्ञातः अहम् 'इदं' 'कर्म' करिष्यामि 'तत्' तस्मात्-त्वत् प्रसादात् 'मे' ममेदं कर्म 'राध्यतां' सिद्धं भवतु किञ्च 'तत्' तस्मात्—त्वत् प्रसादात् 'मे' ममेदं कर्म 'समृध्यतां' समृद्धि युक्तं भवतु—'तत्' तस्मात् त्वत्-प्रसादात् 'मे' ममेदं 'कर्म' 'उपपद्यताम्' उपपन्नं भवतु। 'समुद्रः' समुद्रइव असीमः, 'विश्वव्यचाः' विश्वं समस्त-पदार्थं विविधम् अञ्चति गच्छति यः—सः विश्वव्यचाः सर्व्वगः, 'ब्रह्मा' अति वृहत् परिमाणकः भवान् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'तुर्थ्यः' दव, वाड़व, जाठर, वैद्युतेति भेदात् चतुर्थत्व मापन्नः, 'विश्ववेदाः' सर्व्ववित् सर्व्वज्ञत्वात्, 'ब्रह्मणः पुत्रः' ईश्वरस्य तनय प्रसिद्धः आदिसृष्टि इति रूपत्वात् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'श्वात्रः' श्वापदभयात् त्राता, 'प्रचेता' प्रवृद्धज्ञानः, 'मैत्रावरुणः' मित्रस्यसू—र्य्यस्य वरुणस्य—चन्द्रस्य च अंशः, तेजोरूपत्वात् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'विरूपाक्षाय' विरूपाक्ष नामतः प्रसिद्धाय १, 'दन्ताञ्जये' दन्ताञ्जिनामतः प्रसिद्धाय २, 'समुद्राय' समुद्रनामतः प्रसिद्धाय ३,

রূপে প্রসিদ্ধ, আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; আপনি শ্বাপদ ভীতি হইতে ত্রাণকর্ত্তা, প্রবৃদ্ধজ্ঞান শীল, সূর্য্য চন্দ্রের অংশ স্বরূপ, হইতেছেন, আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; বিরূপাক্ষ, ১ দন্তাঞ্জি, ২ সমুদ্র, ৩ বিশ্বব্যচা, ৪ তুর্য্য ৫ বিশ্ব-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेदसे श्वात्राय प्रचेतसे सहस्राक्षाय ब्रह्मणः पुत्राय नमः॥ ६ ॥ सहस्र बाहु गौंपत्यः सपशू नभि रक्षतु॥ मयि पुष्टिं पुष्टिपति र्दधातु मयि प्रजां

'विश्वव्यचसे' विश्वव्यचानामतः प्रसिद्धाय, 'तुर्थ्याय' तुर्थ्यनामतः प्रसिद्धाय ५, 'विश्ववेदसे' विश्ववेदोनामतः प्रसिद्धाय ६, 'श्वात्राय' श्वात्रनामतः प्रसिद्धाय ७, 'प्रचेतसे' प्रचेतो नामतः प्रसिद्धाय ८, 'सहस्राक्षाय' सहस्राक्ष नामतः प्रसिद्धाय ९, 'ब्रह्मणः पुत्राय' ब्रह्मपुत्र नामतः प्रसिद्धाय १०, 'तस्मै' अग्नये 'नम.'। अत्रे-दमप्यवधेयं—विरूपाक्षादीनि दश नामानि, 'ब्रह्मा' इति पूर्व्ववर्णितञ्च नाम, अग्निनाम्ना संकलनया द्वादश संख्यां पूरयति, इत्यञ्च अग्ने द्वादश पुत्रा इति प्रसिद्धिः; अतएव भागवते द्वादश पुत्राः द्वादश नामानीत्युक्तम् ॥ ६ ॥

'गोपत्यः' गोपतिः पशुपतिः रुद्रः 'सः' 'सहस्रबाहुः' अनन्तबाहुः सन् 'पशून्' गवादीन् 'अभिरक्षतु' रक्षां करोतु।

বেদা ৬ শ্বাত্র, ৭ প্রচেতা ৮ সহস্রাক্ষ ৯ ব্রহ্ম-পুত্র ১০ এই সকল নামে প্রসিদ্ধ অগ্নিকে নমস্কার করি [এই দশটী এবং পূর্ব্ব বর্ণিত ব্রহ্মা ও সামান্য অগ্নি এই দুইটী নাম,—এই সমুদয়ে দ্বাদশটী সঙ্খ্যা পরিপূর্ণ হয়, সুতরাং অগ্নির দ্বাদশ পুত্র বলিয়া প্রসিদ্ধি সিদ্ধ হইল] ॥ ৬ ॥

সেই প্রসিদ্ধ, পশুপতি রুদ্র, সহস্রবাহু বা অনন্তবাহু

६ — रुद्ररूपीग्निर्देवता ॥ निगदः । जपे * विनियोगः ।

*एष एव जपो विरूपाक्ष जप इत्युच्यते ।

'प्राणायामायस्याथेमना वैरूपाक्ष मारभ्यो व्कुसेत् गो० ४.५ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रजापतिः स्वाहा ॥ ७ ॥ कौतोमतं ॥ संवननंसुभाग करणं मम ॥ नाकुली नाम ते माता प्याहं पुरुषानयः॥ यन्नौकामस्य विच्छिन्नं तन्नौ संधे ह्योषधे ! ॥ ८ ॥

'पुष्टिपतिः' पुष्टिदोदेवः 'मयि' मत्पशौ 'पुष्टिं' दधातु। 'प्रजापति देवः 'मयि' मत्पशौ 'प्रजां' वत्सादिकं दधात्विति काकाक्षि-गोलकन्यायेनान्वयः ॥ ७ ॥

'कौतोमतं' कुतः मन्यते प्रकाश्यते इति न जाने इत्यर्थे कुतो-मतमेव कौतोमतं—वचनं, 'संवनन' सम्यक् भजनात्मकं, त्वं 'मम' 'सुभग करणं' सौभाग्य कारि, भवसि 'ते' तव 'माता' 'नाकुली' नकुलवत् विलवासस्वभावा, जिह्वेति भावः । 'अपि' 'अहं' 'पुरुषानयः' पुरुषेण हृदिस्थेन नीयते उच्चारणादि-सर्व्व-कर्मसु। इदानीम् औषधिं प्रार्थये—'नौ' आवयोः दम्पत्योः 'यत्' यावत् 'कामस्य' प्रणयस्य 'विच्छिन्नं' विभिन्नं वर्त्तते, हे 'ओषधे !' 'नौ' आवयोः 'तत्' तावत् 'सन्धेहि' सन्धिभावा-पन्नं कुरु ॥ ८ ॥

হইয়া গবাদি পশুসকলকে রক্ষা করুন, আপনি পুষ্টিদাতা হইতেছেন, আমাতে পুষ্টি প্রদান করুন ; আপনি প্রজাপতি হইতেছেন, আমাকে এবং আমার বৎসাদিকে পুষ্ট করুন ॥ ৭ ॥

তুমি সম্যক্‌রূপে উপাসনীয়, কুতোমত (অজ্ঞাত প্রকা-

७—प्रजापति देवता। उष्णिक् छन्दः। पशुस्वस्त्ययने विनियोगः।
पशुस्वस्त्ययन कामो ब्रीहि यव होमं प्रयुञ्जीत सहस्र बाहु गौपत्य इति गो० ४,५।
८—वागोषधी देवते। त्रिपादनुष्टुप् छन्दः। युग्ममहा वृक्ष फलदाने विनियोगः
"कौतोमतेन महा वृक्ष फलानि परि जप्य प्रयच्छेत्" गो० ४,५।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृक्ष इव पक्व स्तिष्ठति सर्व्वान् कामान् भुवस्पते ! ॥
यस्त्वैवं वेद तस्मै मे भोगान् धुक्ष्वा क्षतान् बृहन् ॥ ६ ॥

हे "भुवस्पते !' भुवनस्य शरीररूपस्य अधिपते ! अन्तरात्मन् ! त्वं 'पक्वः' परिपक्वः क्षय-वृद्धि-रहितः 'वृक्षः इव' ऊर्द्ध्वमूल मधःशाख रूपेण तिष्ठसि शरीराभ्यन्तरे वससि, अतः 'सर्व्वान्' 'कामान्' मनोरथान् त्वं वेत्सीति शेषः । 'यः तु' पुरुषः अहम् 'एवम् ततत्तो' 'वेद' जानामि 'तस्मै' तादृशाय मह्यं 'वृहन्' विभुस्त्वं 'अक्षतान्' क्षयरहितान् 'भोगान्' 'धुक्ष्व' पूरय ॥ ६ ॥

শের অবধি যাহার) বাক্য স্বরূপ হইতেছ ; তুমি আমার সৌভাগ্যকারী হইতেছ ; তোমার মাতা নকুলের ন্যায় গর্ত্তেতে নিবাস স্বভাবাপন্ন, (অর্থাৎ জিহ্বা—ইনি বাক্যোৎপত্তির প্রতি মাতা স্বরূপা—ইহা স্পষ্টই আছে) আমি হৃদয়স্থিত পুরুষ কর্ত্তৃক উচ্চারণ রূপি কার্য্যে প্রেরিত হইয়াছি ; হে ঔষধে ! আমাদের দম্পতির যে পরিমাণে প্রণয়ের বিচ্ছেদ হইয়াছে, সেই পরিমাণে আমাদের পুনঃ সন্ধিভাব করিয়া দাও ॥ ৮ ॥

হে শরীরাধিপতে অন্তরাত্মন্ ! তুমি ক্ষয় বৃদ্ধি রহিত, বৃক্ষের ন্যায় উর্দ্ধদেশে মূল, অধোদেশে শাখা বিশিষ্ট হইয়া শরীরাভ্যন্তরে অবস্থিতি করিতেছ; অতএব মনোরথ সকল তুমি জান, আমি তোমা হইতেই জানিয়া থাকি ; তুমি ব্যাপক হইতেছ, আমাকে ক্ষয় বৃদ্ধিরহিত ভোগ্য বস্তুসকল প্রদান কর ॥ ৯ ॥

६—अन्तरात्मा देवता । अनुष्टुप् छन्दः । आत्मानं परिपश्येत् ।
"वृक्ष इवेति पश्चर्चं स्त्स्मिन् प्रथमं पार्थिवं कर्म्म *यथात्मानं परिपश्येत्" गो० ४,५ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ঋতং সত্যে প্রতিষ্ঠিতং ভূতং ভবিষ্যতা সহ॥ আকাশ উপন্নিরজ্জতু মহ্যমন্ন মথো শ্রিয়ং॥ ১০॥ অভি ভাগোসি সর্ব্বস্মিং স্তদুসর্ব্বং ত্বয়িশ্রিতং॥ তেন সর্ব্বেণ

'ভূত' উৎপন্নং বস্তু 'ভবিষ্যতা' উৎপৎস্যমান-বস্তুনা 'সহ' যৎকিঞ্চিৎ ঋতং, সত্যং কার্য্যজাতং তৎ 'সত্যে' সত্যস্বরূপে কারণাত্মনি ত্বয়ি 'প্রতিষ্ঠিতং' বিদ্যতে, 'আকাশঃ' আকাশবৎ সর্ব্বব্যাপকঃ স আত্মা 'মহ্যম্' 'অন্নং' 'নিরজ্জতু' দদাতু 'অথো' অপিচ 'শ্রিয়ং' ঐশ্বর্য্যং শোভাং 'নিরজ্জতু' দদাতু॥ ১০॥

হে আত্মন্! ত্বং 'সর্ব্বস্মিন্' প্রাণিমাত্রে 'অভি' সর্ব্বতঃ 'ভাগঃ' অংশাত্মকঃ 'অসি' পঞ্চভূতাত্মকে দেহে জীবরূপস্য তব অংশোবিদ্যত এব নান্যথা চৈতন্য মুপপদ্যতে কিঞ্চ 'তদু' তচ্চ 'সর্ব্বং' প্রাণ্য প্রাণি সাধারণং 'ত্বয়ি' পরমাত্ম স্বরূপে 'শ্রিতম্'

ভূতকালে উৎপন্ন বস্তু ভবিষ্যৎকালে উৎপস্যমান বস্তুর সাহিত্যে যে কিছু সত্য কার্য্য-সমষ্টি হইয়াছে, ও হইতেছে, সেই সত্যাত্মক কারণ রূপি তোমাতে আকাশের ন্যায় সর্ব্বব্যাপক সেই প্রসিদ্ধ আত্মা প্রতিষ্ঠিত আছেন্; সেই আত্মা আমাকে অন্নপ্রদান করুন; এবং ঐশ্বর্য্য ও শোভা প্রদান করুন্॥ ১০॥

হে আত্মন্! তুমি প্রাণি মাত্রেতেই সর্ব্বতোভাবে অংশাত্মক হইতেছ; (পঞ্চভূতাত্মক শরীরে জীবরূপি তোমার অংশ অবশ্যই আছে, অন্যথা চৈতন্যেরই উপপত্তি হইবে না) এবং সেই সকল প্রাণি অপ্রাণি সাধারণ ভূতবর্গ তোমাতেই

১০ – আত্মা, আদিত্যো বা দেবতা। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। অন্ন তণ্ডুল হোমে বিনিয়োগঃ। "দ্বিতীয়য়াদিত্যং পরিবিষ্যমাণমন্নতণ্ডুলান্ জুহুয়াৎ" গো ৪,৫।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वोमा विवासन ! विवासय॥११॥ कोश इव पूर्णो वसुना त्वं प्रीतो ददसे धनं॥ अदृष्टो दृष्टमाभर सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे॥ १२॥ आकाशस्यैष आकाशो यदे-

आश्रितमस्ति। हे 'विवासन !' प्रकाशक ! 'तेन' 'सर्व्वेण' महिम्ना 'मा' मां 'विवासय' प्रकाशय ॥ ११ ॥

'त्वं' 'कोशइव' कोशो धनागारं यथा धन पूर्णं भवति तथा 'वसुना' धनेन 'पूर्णः' असि, किञ्च 'प्रीतः' प्रसन्नः सन् धनं 'ददसे'। 'अदृष्टः' वहिरिन्द्रियादिभिरलक्ष्यस्त्वं 'दृष्टं' यत्फलं तत् 'आभर' आहर आनय' 'मे' मह्यं 'सर्व्वान्' 'कामान्' अभिलषितान् 'प्रयच्छ' प्रदेहि ॥ १२ ॥

'एषः' आत्मा 'आकाशस्य' अवकाशस्य अपि 'आकाशः' अवकाश अन्तर्हितः, किं स्वरूप स्वित्याह—'यत्' 'एतत्' आका-

আশ্রিত আছে, হে প্রকাশক! সেই সকল মহিমার দ্বারা আমাকে প্রকাশিত কর ॥ ১১ ॥

ধানাগার যেরূপ ধনপূর্ণ হয়, তুমি সেইরূপ ধন পূর্ণ হইতেছ; এবং প্রসন্ন হইয়া ধন প্রদান করিয়া থাক; তুমি বহিরিন্দ্রিয়াদি দ্বারা অলক্ষ্য হইতেছ, দৃষ্ট যে ফল তাহা আহরণ কর; আমাকে অভীপ্সিত-সকল প্রদান কর ॥ ১২ ॥ এই আত্মা অবকাশ স্বভাবাত্মক, আকাশেরও আকাশ—অর্থাৎ

११। आत्मा चन्द्रमा वा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। तिल तण्डुल होमे विनियोगः। "तृतीयया चन्द्रमसि तिलतण्डुलान्" गो ४, ५।

१२—आत्मा आदित्योवा देवता अनुष्टुप् छन्दः। उपस्थाने विनियोगः। "चतुर्थ्यादित्य मुपस्थायार्थान् प्रपद्येत" गो० ४, ५।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तद्भाति मण्डलं ॥ एवं त्वा वेद यो वेदेशानेशान् प्रयच्छ मे ॥१३॥ भूर्भुवः स्व रो३ं सूर्य इव दृशे भूयास मग्निरिव तेजसा वायुरिव प्राणेन सोम इव गन्धेन

यात् वह्निस्व 'मण्डलं' परिधिः 'भाति' दीप्यते, तत् ब्रह्म आत्मेति च । हे 'वेदेशान' वेदाधिप! आत्मन्! 'त्वा' त्वाम् एवं एवम्प्रकारेण 'यो' यः—अहं 'वेद' जानामि, तस्मै 'मे' मह्यं 'ईशान्' ऐश्वर्य्यान् प्रयच्छ ॥ १३ ॥

हे 'भूर्भुवः स्वरोम्!' 'भूः' पृथिवी, 'भुवः' अन्तरीक्ष, 'स्वः' द्यौः—एतल्लोकत्रय-व्यापक! 'ओं' आत्मन्! [अथवा पृथिवीस्थानोऽग्निः, अन्तरीक्षस्थो वायुः, स्वस्थः सूर्य्यः, ओ मित्यात्मनः प्रतीकं एतच्चतुष्टय मेवात्र सम्बोध्यम्] भवतः प्रसादात् 'दृशे' समदर्शनाय 'सूर्य्यइव' 'भूयासम्', 'तेजसा' 'अग्निः इव' यथा अग्निस्तेजस्वी तथा भूयासम, 'प्राणेन' प्रभावेन 'वायुरिव'

অবকাশ-দায়ক; তাহা কিরূপ?—যাহার আকাশ হইতেও বাহিরে পরিধি ভান হইতেছে; উহা ব্রহ্ম, বা আত্মা হইতেছে; হে বেদাধিপ! আত্মন্! তোমাকে এই রূপেই আমি জানিতেছি, আমাকে ঐশ্বর্য্য প্রদান কর ॥ ১৩ ॥

হে ভূর্ভুবঃস্বঃ [ত্রিলোক] ব্যাপক, প্রণব [ওঁ]বোধ্য আত্মন্! আপনার প্রসাদে সকল বস্তুর সমদর্শনে যেন সূর্য্যের ন্যায়, তেজেতে যেন অগ্নির ন্যায় প্রভাবেতে যেন বায়ুর ন্যায়, গন্ধ গ্রহণে যেন চন্দ্রের ন্যায় বুদ্ধিতে যেন বৃহস্পতির ন্যায়

१३—आत्मा आदित्योवा देवता । अनुष्टुप् छन्दः । उपस्थाने विनियोगः ।
"पश्चम्यादित्य मुपस्थाय गृहान् प्रपद्येत" गो० ४, ५ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बृहस्पतिरिव बुध्याश्विनाविव रूपेणेन्द्राग्नी इव बलेन ब्रह्म भाग एवाहं भूयासं पाप्मभागा मे द्विषन्तः ॥ १४ ॥

वायु र्यथातिप्रभाववान् तथा भूयासम्, 'गन्धेन' गन्ध ग्रहण-विषये 'सोमश्चन्द्रमा स च गन्ध ग्राहकतया प्रशस्यः तथा वत्-भूयासं 'बृहस्पतिः' जगत्पतिः सइव 'बुद्या' युक्त भूयासम्, 'अश्विनौ' अश्वाविव वेगगमनशीलौ सूर्य्य चन्द्रौ तद्वत् 'रूपेण' युक्तो भूयासम्, 'इन्द्राग्नी' प्रज्वलनेन सहावस्थितोग्निर्यथा अतिबलवान् 'इव' तथा 'बलेन' युक्तो भूयासम् 'अहम्' 'ब्रह्मभागः' 'एव' ब्रह्मभागी ब्रह्मध्यान पर एव 'भूयासम्' 'मे' मम 'द्विषन्तः' शत्रवः 'पाप्म भागाः' पाप भागिनः सन्तु ॥ १४ ॥

রূপে বেগে-গমনশীল অশ্বিন দ্বয়ের (সূর্য্য চন্দ্র) ন্যায়, অত্যুৎ-কট বলে যেন জ্বালা সহ অবস্থিত অগ্নির ন্যায় হইতে পারি। আমি ব্রহ্মাংশে (পবিত্র অংশে) যেন জন্ম গ্রহণ করি; আমার শত্রুরা পাপভাগী হইয়া যেন জন্ম গ্রহণ করে ॥ ১৪ ॥

॥ इति सामवेदिये मन्त्रब्राह्मणे द्वितीय प्रपाठकस्य चतुर्थ खण्डो

द्वितीयस्य प्रथमार्द्धस्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ पञ्चम-खण्डः ॥

मूर्द्धोऽधि मे वैश्रवणां छिरसोनु प्रवेशिनः ॥ ललाटाद्घस्वरान्घोरान्विषना न्विबृहा मिव-स्वाहा ॥ १ ॥ ग्रीवाभ्यो मे स्कन्धाभ्यां मे न स्तोमेनु प्रवेशिनः ।। मुखान्मे वद्वदान् घोरान् विषनान् विष्टहामिव स्वाहा ॥ २ ॥ वाहुभ्यां मे यतो

'मे' मम 'अधि' उपरि 'अनुप्रवेशिनः' 'घस्वस्वरान्' भक्षण शीलान् 'घोरान्' भयानकान् 'विषनान्' विशेषेण हिंसा-स्वभावकान् 'वैश्रवणान्' रक्षान् 'वः' युस्मान् 'मूर्ध्नः' मस्तकात्, 'शिरसः' ब्रह्मरन्ध्रात्, 'ललाटात्' कपाल प्रदेशाच्च 'विवृहामि' विशेषेण दूरीकरोमि ॥ १ ॥

'मे' मम शरीरे 'अनुप्रवेशिनः' 'वद्वदान्' दुर्व्वाचिनः 'घोरान्' 'विषनान्' 'वः' युस्मान् वैश्रवणान् 'मे' मम 'ग्रीवाभ्यः' 'स्कन्धाभ्यां' 'नस्तः' नासिकाभ्यां 'मे' मम 'मुखात्' वदनाच्च 'विवृहामि' ॥ २ ॥

আমার উপরে আবেশ করিতে উদ্যত, ভক্ষণশীল, ভয়ানক, উত্যুৎকট হিংসক যক্ষ তোমাদিগকে মস্তক হইতে, ব্রহ্মরন্ধ্র হইতে, ললাট হইতে, কপাল প্রদেশ হইতে, ভাল রূপে দূর করিতেছি ॥ ১ ॥

আমার শরীরের অন্তরে আবেশ করিতে উদ্যত দুর্ব্বাক্য প্রয়োগকারী ভয়ানক স্বরূপ যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ তোমা-

१ — ७—एषां सप्तानाम् अग्निर्देवता । अनुष्टुप् छन्दः । अलक्ष्म्या अपनोदने विनियोगः 'अलक्ष्मीनिर्णोदीयजनीय प्रयोगी मूर्ध्नोऽधीमि इति' गो० ४,६ ।

For Private And Personal Use Only

यतः पार्श्वयो रुत्तुता नधि ॥ उरस्तो वद्वदान् घोरान् विघनान् विव्रहामि स्वाहा ॥ ३ ॥ वङ्क्षणाभ्यां मे लोहिता दान्यो निहान्यजिहानधि ॥ ऊरुभ्यो

'मे' मम 'वाहुभ्यां' 'उत्' ऊर्द्ध्वं स्थितान्, 'तु' अपिच 'पार्श्वयोः' उभयोः 'यतोयतः' 'अधि' अधिकृत्य वर्त्तन्ते, 'उरस्तः' वक्षः प्रदेशाच्च 'तान्' 'वद्वदान्' 'घोरान्' 'विघनान्' 'वः' युस्मान् वैश्रवणान् 'विव्रहामि' ॥ २ ॥

'मे' मम अङ्गेषु 'अधि' अधिकारिणः वैश्रवणान् कीदृशान् ?— 'लोहितादान्' लोहितानि रक्तानि ये अदन्ति तादृशान् 'योनिहान्' योनिं उत्पत्तिस्थानं ये घ्नन्ति तादृशान् अश्लिष्यमाणस्य अश्लिष्यमाणाया वा-प्राण वियोगभयशून्येन ये श्लिष्यन्ते आलि-

দিগকে আমার গ্রীবা হইতে স্কন্ধদ্বয় হইতে নাশিকাদ্বয় হইতে এবং আমার বদনমণ্ডল হইতে ভালরূপে দূরীভূত করিতেছি ॥ ২ ॥

বাহুদ্বয়ের ঊর্দ্ধভাগে অবস্থিত, পার্শ্বদ্বয়ে যতটুকু অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, এই রূপ বক্ষ স্থলে বর্ত্তমান, ভয়ানক, বিনাশন, যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ, তোমাদিগকে আমরা বাহুদ্বয়ের ঊর্দ্ধ প্রদেশ হইতে পার্শ্বদ্বয়ে ততটুকু স্থান হইতে এবং বক্ষ স্থল হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৩ ॥—

আমার অঙ্গে অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, শোণিত ভক্ষক, যোনি-(উৎপত্তি স্থান) ঘাতক, আমাকর্ত্তৃক কোন পুরুষ বা স্ত্রী গাঢ় আলিঙ্গিত হইলে তাহাদের প্রাণ বি-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

নিক্ষিপো ঘোরান্ বিঘনান্ বিবৃহামিব স্বাহা ॥ ৪ ॥ জংঘাভ্যাং মে যতোযতঃ পাষ্ণ্যো কৃত্তানধি ॥ পাদ্যো বিকিরান্ ঘোরান্ বিঘনান্ বিবৃহামিব স্বাহা ॥ ৫ ॥ পরিবাধং যজামহে গুজংঘং প্রবত্তোদরং॥ যো নোয়ং

ক্ষন্তে তাদৃশান্ 'ঘোরান্' 'বিঘনান্' 'বঃ' যুষ্মান্ বৈশ্রবণান্ 'অক্ষাভ্যাঁ' অক্ষিযুগলাত্ 'জরুভ্যঃ' জরুদ্বয়স্য সর্ব্বতশ্চ 'বিব্রহামি' ॥ ৪ ॥

'মে' মম অঙ্গেষু অধি'অধিকারিণঃ বৈশ্রবণান্; কীদৃশান্ ?— 'জঙ্ঘাভ্যাং' 'তত্' উপরিষ্টাত্ 'স্থিতান্' 'পাষ্ণ্যঃ' গুল্ফাধোভাগয়োঃ যতো যতঃ সর্ব্বতঃ স্থিতান্ পাদয়োঃ চ 'যতঃ' যত্র যত্র স্থিতান্, 'তান্' তাদৃশান্ 'বিকিরান্' বিক্ষেপকান্ 'ঘোরান্' বিঘনান্ 'বঃ' যুষ্মান্ 'বিব্রহামি' ॥ ৫ ॥

'যঃ' 'অয়ং' যক্ষঃ 'নঃ' অস্মভ্যং 'দানায়' 'ভগায়' ঐশ্বর্য্যায় 'চ' পরিবাধতে অভীষ্ট-ফল-দাতৃন্ দেবানিতি যাবত্, তম্

য়োগ হইবে এবম্বিধ ভীতি শূন্য, অতএবই ভয়ানক-সর্ব্বথা বিনাশন, যক্ষ বলিয়া প্রসিদ্ধ তোমাদিগকে অক্ষিযুগল হইতে উরুদ্বয় হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৪ ॥—

আমার অঙ্গে অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, অর্থাৎ জঙ্ঘাদ্বয়ের উপরি ভাগে অবস্থিত, পাদদ্বয়ের যে টুকু স্থান ব্যাপিয়া অবস্থিত, বিক্ষিপ্ত কারক, অতএবই ভয়ানক, ও সর্ব্বথা বিনাশন, যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ তোমাদিগকে সেই সেই স্থান হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৫ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिबाध ते दानाय भगायच स्वाहा ॥६॥ अपेहि त्व परिबाध माविबाध विबाधथा. ॥ सुगं पन्थानं मे कुरु येन मा धनमेष्यति स्वाहा ॥ ७ ॥ प्रजापते नत्व देतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ॥ यत् कामा

'अणुजङ्घ' एतन्नामानं 'शबलोदरः' एतन्नामानञ्च 'परिबाधम्' बाधकं 'यजामहे' पूजयामः ॥ ६ ॥

हे 'परिबाध !' हे 'विबाध !' 'त्वम्' 'अपेहि' आगच्छ 'मा' 'विबाधथाः' बाधां मा कुरु, 'मे' मदर्थं 'सुङ्ग' सुगमं 'पन्थानं' कुरु, 'येन' पथा 'मा' मां 'धनम्' 'एष्यति' प्राप्स्यति ॥ ७ ॥

हे 'प्रजापते !' जगत् प्रभो ! यानि 'एतानि' 'विश्वाजातानि' स्थावरजङ्गमाणि उत्पन्नानि 'ता' तानि 'त्वत्अन्यः' त्वत्तोऽन्यः कश्चित् 'न परिबभूव' न प्रतिपालयति । अत इदं

যে যক্ষ আমাদিগকে দান ঐশ্বর্য্যাদি দিতে অভীষ্ট ফলপ্রদ দেবগণকে বাধা দেয়, অণুজঙ্ঘ নামক ও শবলোদর নামক সর্ব্বতোভাবে বাধা কারক, সেই যক্ষকে অর্চ্চনা করিতেছি ॥ ৬ ॥

হে সর্ব্বতোভাবে বাধাকারক ! হে বিশেষরূপে বাধাকারক ! তুমি আগমন কর, বাধা করিও না, আমার নিমিত্ত সুগম পথ করিয়া দাও, যে পথের দ্বারা আমার ধনসম্পত্তি হইবে ॥ ৭ ॥

হে প্রজাপতে, জগৎ প্রভো ! বিশ্ব-সংসারে উৎপন্ন

For Private And Personal Use Only

স্তে জুহুমস্তন্নো অস্তু বয়ং স্যাম পতয়ো রয়ীণাং স্বাহা ॥ ৮ ॥ যশোহং ভবামি ব্রাহ্মণানাং যশো রাজ্ঞাং যশো বিশাং ॥ যশঃ সত্যস্য ভবামি যশসাং যশঃ ॥ ৯ ॥

প্রার্থয়ে—বয়ং 'যৎকামাঃ' যৎকামং মনসি নিশ্চিত্য 'জুহুমঃ' হোমেনেষ্টম্ ভাবয়ামঃ, 'নঃ' অস্মাকং 'তৎ' ফলং 'অস্তু' 'বয়ম্' 'রয়ীণাং' বহুতর ধনানাং 'পতয়ঃ' অধীশাঃ 'স্যাম' ভবেম ॥ ৮ ॥

হে আদিত্য! ত্বৎ-প্রসাদাৎ 'অহং' 'ব্রাহ্মণানাং' 'যশঃ' 'ভবামি' অনুভবামি' অনুভবিতুং সমর্থো ভবামীতি ভাবঃ, 'রাজ্ঞাং' 'যশঃ' 'বিশাং' 'যশঃ' অনুভবামি 'সত্যস্য' ব্রহ্মণঃ 'যশঃ' 'যশসাং' যশঃ কর্ম্মণাং, 'যশঃ' অনুভবামি ॥ ৯ ॥

যে এই সকল স্থাবর জঙ্গমাদি পদার্থ, তাহাকে তুমি ভিন্ন অন্য কেহ পালন করিতেছে না; অতএবই তোমার নিকট আমারা প্রার্থনা করিতেছি,—যে কামনা করিয়া আমরা হবন করিয়াছি, আমাদের সেই কামনা, ফল বতী হউক; আমরা যেন বহুতর ধনের অধিপতি হই ॥ ৮ ॥

হে আদিত্য! তোমার প্রসাদে আমি যেন ব্রাহ্মণের যশ অনুভব করিতে পারি, ক্ষত্রিয়ের যশ অনুভব করিতে পারি; বৈশ্যের যশ অনুভব করিতে পারি; সত্যের (ব্রহ্মের) যশ অনুভব করিতে পারি; যশোজনক কর্ম্ম মাত্রেরই যশঃ যেন অনুভব করিতে পারি ॥৯ ॥

৮—প্রজাপতি র্দেবতা। পংক্তিশ্ছন্দঃ। আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ।
'প্রজাপত ইত্যুত্তমা' গো০ ৪, ৬।
৯—১২—এষাং মন্ত্রাণাং, আদিত্যো দেবতা। নিগদাঃ। উপস্থানে বিনিয়োগঃ।
"যশো হং ভবামীতি যশস্কাম আদিত্য মুপতিষ্ঠেত" গো০ ৪, ৬।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

পুনর্মায়ন্তু দেবতা যামদপচক্রমুঃ ॥ মহস্বন্তো মহান্তো ভবাম্যস্মিন্ পাত্রে হরিতে সোমপৃষ্ঠে ॥ ১০ ॥ রূপ রূপং মে দিশঃ প্রাতরহ্নস্য তেজসঃ ॥ অন্নমুগ্রস্য প্রাশিষমস্তু বয়িময়ি ত্বয়ীদমস্তু ত্বয়ি ময়ীদং ॥ ১১॥ যদিদং পশ্যামি চক্ষুষা ত্বয়া দত্তং প্রভাসয়া ॥ তেন মা

'দেবতাঃ' অভীষ্টদেবাঃ 'অস্মিন্' প্রত্যক্ষে 'সোমপৃষ্ঠে' 'হরিতে' পাত্রে 'যামত্' গৃহীতুম্ 'অপচক্রমুঃ' গতবন্তঃ, তে চ 'মা' মাং 'পুনঃ আয়ন্তু' পুনরাগচ্ছন্তু, অহঞ্চ 'মহস্বন্তঃ' মহস্বান্ তেজস্বী 'মহান্তঃ' মহান্ 'ভবামি' ভবেয়মিতি প্রার্থয়ে ॥ ১০ ॥

হে 'রূপ !' দৃশ্যমান-সমস্ত-রূপাত্মক ! আদিত্য ! 'প্রাতরহ্নস্য' প্রভাতস্য তেজসঃ রূপং মহ্যং 'দিশ' বিসর্জয়, দেহীত্যর্থঃ। 'উগ্রস্য' প্রদীপ্তস্য তব অন্নম্ আশিষম্ অস্তু মদর্থমিতি যাবত্। 'ময়ি' মদন্তিকে যত্ অস্তি, তত্ 'ইদং' হব্যং 'ত্বয়ি' 'অস্তু' 'ত্বয়ি' চ যদস্তি 'ইদং' সামর্থ্যং তত্ 'ময়ি' অস্তু। ১১ ॥

'ত্বয়া' 'দত্তং' দত্তয়া প্রকটিতয়া 'প্রভাসয়া' 'যত্' কিঞ্চন

যে অভীষ্টদেবেরা এই সোম পৃষ্ট পাত্রে আসিয়াছেন্ তাঁহারা আমার প্রতি আগমন করুন্; আমি যেন মহান্ ও তেজস্বী হই —এই প্রার্থেতেছি ॥ ১০ ॥

হে দৃশ্যমান সমস্তের রূপ (চক্ষু) স্বরূপ আদিত্য ! প্রাতঃকালের রূপ আমাকে প্রদান কর, তোমার প্রদীপ্ত স্বরূপ আমার নিমিত্ত আশীর্ব্বাদ হউক, আমার নিকটে যাহা কিছু আছে ; সেই সকল তোমাতে সমর্পিত হউক, এবং তোমাতে যাহা কিছু সামর্থ্যাদি আছে তাহা আমাতে হউক ॥ ১১ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुङ्क्ष्व तेन भुक्षिषीय तेन मा विश॥१२॥ अह्नो अत्य-पीपरद्रात्रिर्नो अतिपारयत्॥ रात्रिर्नो अत्यपीपरद-ह्नो अतिपारयत्॥१३॥ आदित्य नाव मारोक्षं

इदं' हव्यं 'चक्षुषा पश्यामि, 'तेन' हविर्द्रव्येण प्राप्तेन 'मा' मां 'भुङ्क्ष्व' गृहाण, किञ्च 'तेन' सामर्थ्येन सह त्वं 'मा' माम् 'आविश प्रविश; आवयोः ऐकात्म्यं भवत्विति प्रार्थनाभि प्रायः॥ १२॥

अह्नः' दिवारूपः त्वत्-कृतः कालः 'नः' अस्मान् 'अति' अतिशयेन 'अपीपरत्' पुनः पुनः प्रतिदिनं परतु पालनं करोतु, 'रात्रिः' अपरश्च त्वत्-कृतः कालः 'नः' अस्मान् अति अतिशयेन 'पारयत्' पारयतु दुस्तरं जीवनं याप यतु। अथवा 'रात्रिः' एवं 'नः' अस्मान् 'अत्यपीपरत्' प्रति-दिनं अतिशयेन पालनं करोतु, 'अह्नः' च 'नः' अस्मान् 'पार-यत्' पारयतु दुस्तरं जीवनं यापयतु, उभयथा त्वमेवास्य पाता संहर्त्तेतिचाभिप्रायः॥ १३॥

তোমার আলোকে যাহা কিছু এই মদ্দত্ত হব্য চক্ষুর-ারা দেখিতেছি, সেই প্রাপ্ত হবি-দ্রব্য ারা আমাকে ভোগ কর; এবং আমি ও তোমার সামর্থ্য প্রাপ্ত হইয়া উপভোগ করি; তুমি সেই সামর্থ্যের সহিৎ আমাতে আবেশ কর, অর্থাৎ তোমাতে আমাতে একাত্মভাব হউক-এই প্রা-র্থনা॥ ১২॥

ত্বৎকৃত দিবারূপ কাল প্রতিদিন আমাকে ভালরূপে রক্ষা করুক; এবং ত্বৎকৃত রাত্রিরূপ কাল, ভালরূপে

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूर्णां मपरि पादिनीं॥ अच्छिद्रां पारयिष्णवी७ँ शता-रित्रा७ँ स्वस्तये ॥ ओन्नम आदित्याय नम आदित्याय नम आदित्याय ॥ १४॥ उद्यंतंत्वादित्यानूदियासं ॥१५॥

हे 'आदित्य !' 'नावम्' नौ-यानम् 'आरोहम्' आरोहितवान् कीदृशं नावमित्याह—'पूर्णां' पूर्णावयवां 'अपरिपादिनीम्' आपच्छून्यां, 'अच्छिद्रां' छिद्ररहितां, 'पारयिष्णवीं' भवार्णव पारकरण समर्थां 'शतारित्रां' बहुजनस्य विपत्त्राण कारिणीं, एतादृशीं कृपातरिम् आरोहितवानित्यर्थः ॥ १४ ॥

हे 'आदित्य !' 'उद्यन्त' 'त्वा' त्वां 'अनु' पश्चात् एव प्रत्यूषएव 'उदियासम्' दण्डायमानो भूयासम् ॥१५॥

আমাকে জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করাক ; অথবা—রাত্রি আমাকে প্রতিদিন ভালরূপে রক্ষা করুক, দিবা ভালরূপে আমাকে জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করাক [উভয়রূপেই তুমি জীবনের রক্ষাকর্ত্তা এবং সংহার কর্ত্তা-এই সমুদয়মন্ত্রের অভিপ্রায়] ॥ ১৩ ॥

হে আদিত্য! সকল অবয়ব পরীপূর্ণ, আপৎশূন্য, অচ্ছিদ্র, ভবার্ণব পারকরণে সমর্থ, বহুলোকের বিপদে ত্রাণকর্ত্তা এবম্বিধ তোমার কৃপারূপি তরীতে আরোহণ করিয়াছি ॥ ১৪ ॥

হে আদিত্য ! তোমার উদয়কাল শেষ হইতে না হইতেই অর্থাৎ তাহার পূর্ব্বেই অতি প্রত্যূষে উঠিয়াছিলাম ॥ ১৫ ॥

१४——आदित्यो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । स्वस्त्ययने विनियोगः ।
" स्वस्त्ययन मादित्य नावमिति" गो० ४, ६ ।
१५—आदित्यो देवता । यजुः । पूर्व्वाह्न-प्रार्थने विनियोगः ।
" उद्यन्तं त्वादित्यानुदिया समिति पूर्व्वाह्ने" गो० ४, ६ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतितिष्ठन्तं त्वादित्यायानु प्रति तिष्ठासं ॥१६॥ भलाय स्वाहा ॥१७॥ भल्लाय स्वाहा ॥१८ ॥

हे 'आदित्य !' 'प्रतितिष्ठन्त'मस्तं गच्छन्तं 'त्वा' त्वाम् 'अनु' पश्चात् 'प्रतितिष्ठासम्' प्रतिष्ठितेन उपविष्टो भूयासम् ॥ त्वदीयोदयास्तं कालं दण्डायमानसमर्थो भूयासमिति भावः ॥१६

'भलाय' दाने पालन कर्त्रे इति यावत् । 'भल्लाय' संहार-कर्त्रे । आदित्याय तुभ्यं, 'स्वाहा' हविरिदं प्रयच्छामि ॥१७,१८

হে আদিত্য ! আমি তোমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রতিষ্ঠিত হইয়া উপবিষ্ট হইয়াছি, [অর্থাৎ তোমার উদয়াবধি অস্তকাল পর্য্যন্ত দণ্ডায়মানে সমর্থ হইয়াছি] ॥ ১৬ ॥

পালন ও সংহার কর্ত্তা আদিত্য তোমাকে আমি এই হবি দিতেছি ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

॥ इति सामवेदिये मन्त्र-ब्राह्मणे द्वितीय प्रपाठकस्य पञ्चमः खण्डः समाप्तः ।

१६—आदित्यो देवता । यजुः । अपराह्न प्रार्थने विनियोगः ।
" प्रतितिष्ठन्तं त्वादित्यानुप्रतितिष्ठासमित्यपराह्ने " गो० ४, ६ ।
१७—१८—आदित्यो देवता । यजुः । होमे विनियोगः ।
" अभिमुखो जुहुयात् भलाय स्वाहा भल्लाय स्वाहेति " गो० ४, ६

For Private And Personal Use Only

॥ अथ षष्ठ-खण्डः ॥

*वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ॥ यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।१। ह्वये राके सिनीवालि

हे 'वास्तोष्पते' इन्द्र! त्वं 'अस्मान्' 'प्रतिजानीहि' फलार्थिन इत्यवगच्छ; 'किञ्च नः' अस्माकं सम्बन्धे रोगशून्यश्च 'भव' तथाच यथा त्वं तथास्मानपि कुरु—इति प्रार्थना। 'यत्' यस्मात् 'ते' तुभ्यं 'महे' पूजये 'तत्' तस्मात्, 'नः' अस्मान् 'प्रतिजुषस्व' प्रतिसेवय; अभीष्ट-दानादिनेति भावः। त्वं हि 'द्विपदे' मयि, 'नः' अस्माकं 'शं' कल्याणकरः 'भव', 'चतुष्पदे' दम्पतीभावापन्ने 'च' मयि 'शं' कल्याणकरः भव ॥ १ ॥

'ह्वये' इत्यादिपदं प्रतीकं सम्पूर्णमन्त्रम् सिनिवाली नामतो

হে গৃহ-পতে ইন্দ্র! তুমি আমাদিগকে ফলাকাঙ্ক্ষি বলিয়া জানিবে, এবং আমাদিগের সম্বন্ধে সুন্দররূপে প্রবেশ-ক্ষম, রোগশূন্য হও, অর্থাৎ যেরূপে তুমি হইতেছ, সেই রূপ আমাদিগকে কর,—এই প্রার্থিতেছি; যেহেতু আমরা তোমাকে পূজা করিতেছি অতএব আমাদিগকে অভীপ্সিত ফল প্রদান কর, যেহেতু আমাদিগের দ্বিপদাবস্থায় এবং চতুষ্পদাবস্থায় অর্থাৎ—দম্পতীভাব প্রাপ্ত হইলে, তুমিই কল্যাণ-প্রদাতা হইতেছ ॥ ১ ॥

---

* अथ गृहप्रवेशः।

१—इन्द्रो देवता। अनुष्टुप्छन्दः। नव गृह प्रवेशे पायसचरुहोमे विनियोगः।

" अथ गृहीनं जुहुयात् वास्तोष्पत इति' गो ४,७।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिनीवालि ष्टुष्टुके ॥ सुभद्रे पथ्ये रेवति पथानो यश आवह स्वाहा ॥ २ ॥ ये यन्ति प्राञ्चः पन्थानो य उत्तरोत्तरत आयथुः ॥ ये चेमे सर्वे पन्थानस्तेभिर्नो यश आवह स्वाहा ॥ ३ ॥ यथा यन्ति प्रपदा यथा मासा-

देवताद्वयं विद्यते । यूयं 'पथा' सन्मार्गेण 'नः' अस्मान् 'यशः' 'आवह' प्रापय ॥ २ ॥

'यथा' 'प्रपदः' प्रपदाः पादाग्रभागाः उत्तरोत्तरं 'यन्ति' गच्छन्ति, 'मासाः' 'यथा' 'अहर्ज्जरं' अहोभिः जरात्वम् अवसानभावं 'यन्ति' गच्छन्ति; 'श्रीधातारः' श्रियो विधातारः देवाः 'एवं' एवमेवोत्तरोत्तरं 'सर्व्वतः' सम्पूर्णतः 'मा' मां 'समवयन्तु' समवेता भवन्तु, श्रियं ददतु इति भावः ॥ ३ ॥

'ये' 'पन्थानः' मार्गाः 'प्राञ्चः' 'यन्ति', 'ये' 'उत्तरोत्तरतः'

হে হবি প্রভৃতি দেবতারা! তোমরা সকলে সৎমার্গের দ্বারা আমাদিগকে যশো লাভ করিয়া দাও ; ॥ ২ ॥

যেরূপে পাদের অগ্রভাগ সকল, উত্তরোত্তর যাইতেছে, যেরূপে মাস সকল দিবার ক্ষয়ে ক্ষীণতা প্রাপ্ত হইতেছে ; সেইরূপে শ্রী বিধাতা দেবতারা উত্তরোত্তর আমাতে সম্পূর্ণ রূপে সমবেত হউন, অর্থাৎ—শ্রী প্রদান করুন ॥ ৩ ॥

যে প্রাচীন পথ-সকল চলিতেছে, যে প্রাচীন পথ-সকল

२—५—एषां चतुर्णां हव्यादयो देवताः । अनुष्टुप् छन्दः । आरण्यायशाग्रणी कर्म्मणि स्वस्त्ययन होमे विनियोगः ।

'हये राके इत्येवैकयाञ्जलिना जुहुयात् प्राक् स्वकस्य वसुवन एधीत्यन्तं' गो० ४,८ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अहर्जरं । एवं मा श्रीधातारः समवयंतु सर्वतः स्वाहा । ४ । यथा समुद्रं स्रवन्तीः समवयन्ति दिशो दिशः ॥ एवं मा सखायो ब्रह्मचारिणः समवयन्तु दिशो दिश स्वाहा ॥ ५ ॥ वसुवन एधि वसु-

'आययुः' आजग्मुः, किमधिकेन ? 'ये च इमे' 'सर्व्वे पन्थानः' 'तेभिः' तैः पथिभिः करणैः हे आदित्य ! 'नः' अस्माकं 'यशः' 'आवह' प्रापय अस्मानिति यावत् ॥ ४ ॥

'यथा' 'स्रवन्तीः' स्रवन्त्यः नगशिखरादितः क्षरन्त्यः नद्यः 'दिशः दिशः' सर्व्वस्मात्दिशः 'समुद्र' 'समवयन्ति' सम्यक् अवगच्छन्ति, 'एवं' एवमेव 'मा' मां 'ब्रह्मचारिणः, ब्रह्मध्यान पराद्विजाः 'सखायः' बान्धवाः 'दिशः दिशः' सर्व्वस्मात् दिशः समवयन्तु ॥ ५ ॥

हे 'वसुवने' वसुधनं वनति भजते इति वसुवनिः धना-

উত্তরোত্তর (প্রবহমান হইয়া) আসিতেছে, অধিক কি ? যে এই সকল-পথ, তৎসমুদয় পথ দ্বারা হে আদিত্য ! আমাদিগকে যশঃ প্রাপ্তি করাও ॥ ৪ ॥

যেমন পর্ব্বত-শিখর হইতে পরিস্রুত নদীরা, সকল দিক হইতে আগমন করত, সমুদ্রেতে সমবেত হইতেছে, তদ্রূপ বান্ধব, বেদ-চিন্তাশীল দ্বিজেরা, সকল দিক হইতে আগমন করত, আমাতে সমবেত হউন্ ॥৫ ॥

হে ধনাধিপ ! আমার গৃহে আগমন কর, হে ধনাধিপ!

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

বন এধি বসুবন এধি ॥ ৬ ॥ বশংগমৌ দেবযানৌ যুবং স্থো যথা যুবয়োঃ সর্বাণি ভূতানি বশমায়ন্ত্যেবং মমাসৌ বশমেতু স্বাহা ॥ ৭ ॥ শংখস্য মন আয়ুশ্চ দেবযানৌ যুবং স্থো যথা যুবয়োঃ সর্বাণি ভূতানি বশমায়ন্ত্যেবং মমাऽসৌ বশমেতু স্বাহা ॥৮॥ আকূতীং

ধিপঃ, তস্য সম্বোধনং 'বসুবনি!' হে ধনাধিপ! 'এধি' এহি, ইহ স্থেহি ইতি যাবত্। বারত্রয়োক্তিরতিশয়ার্থা ॥ ৬ ॥

হে 'বশঙ্গমৌ' ঈশ্বরনিয়মস্য বশীভূতৌ চন্দ্রাদিত্যৌ! 'যুবাং' 'দেবযানৌ' দেবানাং দ্যোতমানানাং মার্গৌ 'স্থঃ' ভবথঃ। 'সর্ব্বাণি ভূতানি' 'যথা' 'যুবয়োঃ' 'বশং' 'আয়ন্তি' আগচ্ছন্তি, 'এবং' 'অসৌ' ঈশ্বরঃ 'মম' 'বশম্' 'এতু' আগচ্ছতু ॥ ৭ ॥

শঙ্খঃ মনঃ' শঙ্খোযথা স্বচ্ছঃ শুভ্রঃ তদ্বত্ মনঃ 'চ' অপিচ 'আয়ুশ্চ' ইমৌ 'যুবাং' 'দেবযানৌ' 'স্থ' ভবথঃ। অন্যত্ পূর্ব্ববত্ ॥ ৮ ॥

আমার গৃহে আগমন কর, আমি পুনশ্চ বলিতেছি—আমার গৃহে অগমন কর ॥ ৬ ॥

. হে ঈশ্বরের বশতাপন্ন চন্দ্রাদিত্য দেবদ্বয়! তোমরা দেবদ্বয় অন্যান্য দেবতাদিগের পথ স্বরূপ হইতেছ। সকল চরাচর বর্গ যেমন তোমাদের বশে থাকে সেইরূপ এই ঈশ্বরও আমার বশে আসুন্ ॥ ৭ ॥

শঙ্খ যেমন স্বচ্ছ, শুভ্র, তদ্রূপ মন ও আয়ু এই দুইটী

৬ – ইন্দ্রোদেবতা। যজুঃ। জপেবিনিয়োগঃ।
"প্রাঙ্ উপক্রম্য বসুবন এধীত্যূর্দ্ধং মুদীক্ষমাণো' গো০ ৪,৮।
৭,৮ চন্দ্রাদিত্যৌ দেবতে। যজুঃ। পৃথক্ পৃথক্ ব্রীহি যব হোমে বিনিয়োগঃ।
"বশঙ্গমৌ শঙ্খ ইতি পৃথগাহুতী ব্রীহিযবহোমৌ প্রযুঞ্জীত' গো০ ৪.৮।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

দেবীং মনসা প্রপদ্যে যজ্ঞস্য মাতরং সুহবা মে অস্তু ॥ যস্যাস্ত একমক্ষরং পরং সহস্রা অযুতঞ্চ শাখা স্তস্যৈ বাচে নিহবে জুহোম্যসৌ মা বরো গচ্ছতু শ্রীর্যশশ্চ স্বাহা ॥ ৯ ॥ ইদমহমিমং বিশ্বকর্মাণং শ্রীবৎস-

'যজ্ঞস্য' 'মাতরং' প্রমাণকর্ত্রীম্ 'আকূতীং দেবীং' বাগ্রূপাং দেবতাং 'মনসা' অন্তঃকরণেন সাকং 'প্রপদ্যে' প্রপন্নোঽস্মি, কিমর্থমিত্যাহ—'মে' মম 'সুহবা' সুহবং সুন্দরাহ্বানং 'অস্তু' 'যস্যাঃ' 'তে' তব 'একম্' 'অক্ষরং' বর্ণং 'পরং' উৎকৃষ্টং 'চ' অপিচ 'সহস্রা' সহস্রং 'অযুতং' দশসহস্রং বহুতরমিতি যাবৎ 'শাখাঃ' বিদ্যন্তে 'তস্যৈ' ঈদৃশ্যৈ 'নিহবে' আহ্বানযোগ্যায়ৈ 'বাচে' বাগ্রূপিণ্যৈ তুভ্যং 'জুহোমি' হবিঃ প্রযচ্ছামি। তথাচ 'বরঃ' প্রসাদঃ এষঃ যথা 'শ্রীঃ' লক্ষ্মীঃ 'যশশ্চ' 'মা' মাম্ আ গচ্ছতু ॥ ৯ ॥

দেব মার্গ হইতেছে, সকল চরাচর যেমন তোমাদের বশে থাকে তদ্রূপ এই ঈশ্বর আমার বশে থাকুন্ ॥ ৮ ॥

যজ্ঞের প্রমাণ-কর্ত্রী বাণী রূপা দেবীর মনের সহিত শরণাপন্ন হইতেছি; আমার সুন্দর রূপে আহ্বান হউক তোমার সম্বন্ধে এক বর্ণই উৎকৃষ্ট হইতেছে; এবং সহস্র অযুত অর্থাৎ—বহুতর, শাখাও আছে; এতাদৃশরূপে আহ্বান-যোগ্য, বাণীরূপি তোমাকে আমি হবিঃ প্রদান করিতেছি, অতএব তুমি প্রসন্ন হইয়া এই বর প্রদান কর যে, আমাতে শ্রী(লক্ষ্মী, যশ) আসিয়া সমবেত হউক ॥ ৯ ॥

৯ – বাগ্ দেবতা। যজুঃ। প্রসাদ কামে বিনিয়োগঃ।
(গৃহ্যসূত্রে অস্য বিনিয়োগো ন দৃশ্যতে)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मभिजुहोमि स्वाहा ॥ १० ॥ पूर्णाहोमं यशसे जुहोमि योऽस्मै जुहोति वरमस्मै ददाति वरं हणे यशसा भामि लोके स्वाहा ॥ ११ ॥ इन्द्रामवदात्तमोवः परस्तादहंवो ज्योति मीमश्येत सर्वे स्वाहा ॥ १२ ॥

'श्रीवत्स' श्रीवत्स-मणिमिव 'इदं' पण्यद्रव्यं 'इमम्' विश्वकर्माणं' सर्व्वस्य स्रष्टारं देवं उद्दिश्य 'अभि' अभितः जुहोमि' अग्नौ क्षिपामि ॥ १० ॥

'पूर्णहोमः' अयं 'यशसे' यशोलाभाय 'जुहोमि' 'यः' यजमानः 'अस्मै' अग्नये 'जुहोति', 'अस्मै' यजमानाय सः अग्निः 'वरं' प्रसादं 'ददाति', अतोऽहं 'वरं' 'हणे' प्रार्थये—तदेवोच्यते='लोके' इह 'यशसा' यशसो सन 'भामि' प्रकाशितोऽस्मि—इतीयव प्रार्थना ॥ ११ ॥

'इन्द्राः' हे इन्द्रादयो देवाः ! 'वः' युष्माकं 'परस्तात्' पश्चतः स्थितं 'तमः' अज्ञानम् 'अवदात्' खण्डनं कुरु, तथाच 'अहं' 'वः' युष्माकं 'ज्योतिः' गमेयमिति शेषः । 'सर्व्वे' देवाः 'मा' माम् 'अश्येत' वरं दातुम् आगच्छत ॥ १२ ॥

শ্রীবৎসমণির ন্যায় এই পণ্য দ্রব্য বিশ্বকর্ম্মার উদ্দেশে অগ্নিতে নিক্ষেপ করিতেছি ॥ ১০ ॥

এই পূর্ণাহুতি যশোলাভের নিমিত্ত হবন করিতেছি, যে, অগ্নিতে পূর্ণাহুতি হবন করে, তাহাকে সেই অগ্নিদেব বর প্রদান করেন, অতএবই আমি বর প্রার্থনা করিতেছি—ইহ লোকে যেন যশস্বী হইয়া প্রখ্যাত হই ॥ ১১ ॥

१०—विश्व कर्म्मा देवता । निगदः । पण्यलाभ कामस्य होमे विनियोगः ।
"पण्यं होमं शुइयादिदमहमिमं विश्वकर्माणमिति" गो० ४,८ ।

ऽन्नं वा एक छन्दस्य मन्नं ह्येकं भूतेभ्य श्छदयति स्वाहा ॥ १३ ॥ श्रीर्वा एषा यत्सत्वानो विरोचनो मयि सत्व मवदधातु स्वाहा ॥ १४ ॥ अन्नस्य घृतमेव

'अन्न' व्रीह्यादिकं 'वा' एव 'एकछन्दस्यम्' अद्वितीयं छादकं 'हि' यतः 'एकम्' असहायम् 'अन्नम्' 'भूतेभ्यः' भूतान् सर्व्वानेव 'छदयति' प्राणधारकत्वेन आवृणोति ॥ १२ ॥

'यत्' ये इमे 'सत्वानः' भजन-कारिणः वयं तत् 'एषा' 'वै' निश्चयं 'श्रीः' शोभा ईश्वरस्य आदित्यस्य वेति शेषः । 'विरोचनः' दीप्तिमान् देवः आदित्यः 'मयि' 'सत्वम्' बलम् 'अवदधातु' स्थापयतु ॥ १४ ॥

'अन्नस्य' व्रीह्यादेः 'घृतम् एव' 'रसः' सारः, तत्र घृतं

হে ইন্দ্রাদি দেবতারা! তোমাদিগের পশ্চাৎ অবস্থিত অজ্ঞান তিমিরকে নষ্ট কর, তাহা হইলে আমি তোমাদের জ্যোতিঃ প্রাপ্ত হই। সকলদেবতারা আমাকে বর প্রদান করিতে আগমন করুন ॥ ১২ ॥

অন্নই প্রাণীদিগের প্রাণ-ধারণে অসাধারণ কারণ, অতএব অন্নই প্রাণ-ধারণ রূপ ধর্ম্মদ্বারা সমস্ত ভূতদিগকে রক্ষা করিতেছে ॥ ১৩ ॥

উপাসনা তৎপর যে আমরা,—ইহা সকল, অবশ্যই আদিত্যের শোভা হইতেছে. আদিত্য-দেব আমাতে বল প্রদান করুন ॥ ১৪ ॥

---

१२ – इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः । सहाय कामस्य पूर्व्वहोमे विनियोगः । "सहाय काम उत्तरां" गो ४,८ ।

१३,१४ – अनयोः आदित्यो देवता । निगदः । आज्य होमे विनियोगः । "आज्यमादित्य मभिमुखो जुहुयादन्नं वा एकछन्दस्य श्रीर्वा एवेति" गो ४,९ ।

रसस्तेजः सम्पत्कामो जुहोमि स्वाहा ॥ १५ ॥ क्षुधे स्वाहा ॥ १६ ॥ क्षुत्पिपासाभ्याꣳ स्वाहा ॥ १७ ॥ माभैषी र्नमरिष्यसि जरदष्टि र्भविष्यसि ॥ रसं विषस्य नाविदमुग्रं फेनमिवास्यं ॥ १८ ॥ तुरगोपाय मा नाथ

'तेजः' स्वरूपं, 'सम्पत्कामः' अहं तत्तेजः 'जुहोमि' अग्नौ क्षिपामि ॥ १५ ॥

अनयोरर्थः सुगमः ॥ १६,१७ ॥

हे सर्पदष्ट ! 'मा भैषीः' मृत्युभयं मा कुरु, 'न मरिष्यसि' 'जरदृष्टिः' जराव्याप्तजीवी 'भविष्यसि'। इदं 'आस्य' आस्यगतं 'विषस्य' रसम् निर्यासं 'उग्र' फेनम् इव' अव्यवानं फेनमिव न 'अविदम्' अपितु यत्सामान्यं मिति भावः ॥ १८ ॥

অন্নের সার ভাগ ঘৃত, তেজস্বরূপ হইতেছে, আমি সম্পত্তি কামনায় ঐ তেজ অগ্নিতে হবন করিতেছি ॥ ১৫ ॥ আমি ক্ষুধা নিবৃত্ত্যর্থ, এবং ক্ষুৎপিপাসা উভয়েরই শান্ত্যর্থ অগ্নিতে হবন করিতেছি ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

হে সর্প-দষ্ট ! মৃত্যুর ভয় করিও না, তুমি মরিবে না, তুমি সমুদয় জরাবস্থা ব্যাপিয়া জীবীত থাকিবে, আস্যান্তর্গত এই বিষরস মরণ জনক ফেনের ন্যায় নহে কিন্তু যৎসামান্য হইতেছে ॥ ১৮ ॥

१५—अग्नि र्देवता । बृहती छन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।
"अन्नस्य घृतमेवेति यामि" गो॰ ४,९ ।
१६,१७—क्षुत्पिपासे देवते । यजुः । सायं प्रात र्होमे विनियोगः ।
सायं प्रात र्जुहुयात् "क्षुधे स्वाहा क्षुत्पिपासाभ्यां स्वाहेति" गो॰ ४,९ ।
१८—सर्पो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । विषापनोदने विनियोगः ।
"माभैषी र्नमरिष्यसीति विषवता दष्टमद्भि रभ्युक्षन्नजपेत्" गो॰ ४,९ ।

गोपाय मा ॥ अघायिभ्यो अरातिभ्यः स्वस्त्ययन-मसि ॥ १९ ॥

हे 'तुर !' 'मा' मां 'गोपाय' रक्षय, हे 'नाथ !' 'मा' मां 'गोपाय' रक्षय, केभ्यः ?—'अघायिभ्यः' क्रूरकर्मभ्यः । 'अरातिभ्यः' शत्रुभ्यः । तुरः त्वं 'स्वस्त्ययनं' कल्याणकारणम् 'असि' भवसि यतस्तत एवेत्थं प्रार्थितम् ॥ १९ ॥

হে তুর ! আমাকে রক্ষা কর, হে নাথ ! আমাকে রক্ষা কর, ক্রূরকর্ম্মা শত্রুদিগ হইতে রক্ষাকর, হে তুর ! তুমি যে-রূপে স্বস্ত্যয়ন স্বরূপ হইতে থাক এই রূপ প্রার্থনা করিতেছি ॥ ১৯ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे षष्ठ खण्डः समाप्तः ॥

—:०:—

॥ अथ सप्तम-खण्डः ॥

***हतस्ते अत्रिणा क्रिमिर्हतस्ते जमदग्निना गोतमेन तिनीकृतो ऽवै व त्वा क्रिमे ! ब्रह्मवद्यमवद्यं ॥१॥**

'अत्रिणा' ऋषिणा 'ते' तव पूर्व्वपुरुषः 'क्रिमिः' 'हतः' हिंसितः, 'जमदग्निना' ऋषिणा 'तिनीकृतः' तनूकृतः स्वल्पी-

তোমার পৃষ্ঠদেশে অবস্থিত পুরুষ অত্রি ঋষি কর্ত্তৃক

१९—दण्डीदेवता । यजुः । दण्डस्थापने विनियोगः ।

“तुरगोपायेति स्नातकः संवेशन वेलायां वैणवं दण्डमुपनीयोद्दधीत स्वस्त्ययनार्थं” ४,९ ।

१—अत्र्यादयो देवताः । बृहतीछन्दः । क्रिमिपातने विनियोगः ।

*इह खण्डे स्थिताः सर्व्वे एव क्रिमि मन्त्राः ।

“हतस्ते अत्रिणा क्रिमिरिति क्रिमिमन्तं देशमद्भिरभ्युक्षन् जपेत्” गो ४,९ ।

भरद्वाजस्य मन्त्रेण सन्तनोमि क्रिमे त्वा ॥ क्रिमिं ह वक्रतोदिनं क्रिमिमांचानुचारिणं ॥ क्रिमिं द्विशीर्षमर्जुनं द्विशीर्षं ह चतुर्हनुं ।२। हतः क्रिमीणां क्षुद्रको हता माता हतः पिता ॥ अथैषां भिंनकः कतः। हे 'क्रिमे!' अद्य अहं 'अत्रैव' 'ब्रह्मवद्य' ब्रह्मणा 'त्वा' त्वां 'अवद्यं' निन्दनीयं करोमीति शेषः ॥ १ ॥

हे 'क्रिमे!' 'त्वा' त्वां 'भरद्वाजस्य मन्त्रेण' 'सन्तनोमि' सम्यक् तनूकरोमि, कीदृशं क्रमि मित्याह—'क्रिमिं' ('ह' अर्थः) 'वक्रतोदिनं' वक्रभावेन व्यथा-कारिणम्, 'क्रिमिम्' 'आन्त्रा-नुचारिणं' अन्त्रमध्ये अनुचरण शीलं, 'क्रिमिं' 'द्विशीर्षं' अत-एव 'चतुर्हनुम्', 'अर्जुनं' शुक्लवर्णम् ॥ २ ॥

'क्रिमीणां' 'क्षुद्रकः' वत्स-सङ्घः 'हतः', 'माता' जनयित्री क्रिमीणामेव 'हता', 'पिता' जनकश्च क्रिमीणामेव 'हतः'।

বিনষ্ট হইয়াছে, তোমার পৃষ্ঠদেশ-স্থিত পুরুষ জমদগ্নি ঋষি কর্ত্তৃক হিংসিত হইয়াছে এবং গৌতম ঋষি তাহাকে সূক্ষ্ম (খাট) করিয়াছেন্। হে ক্রিমে! অদ্য আমি এই স্থলেই ব্রহ্মণ্ব তোমাকে নিন্দনীয় করিতেছি ॥ ১ ॥

হে ক্রিমে! তুমি বক্রভাবে পীড়াজনক, অন্ত্র (দহ বন্ধক নাড়ীবিশেষ) মধ্যে গতি শীল, দ্বিমস্তক, অতএব চতুর্হনুক, ও শুক্লবর্ণা হইতেছ, তোমাকে ভরদ্বাজ ঋষির মন্ত্র বলে ভাল-রূপে সূক্ষ্ম করিতেছি ॥ ২ ॥

ক্রিমিদিগের বৎস-সমুদয় ও মাতা, পিতা সমুদয়ই আমা-

२—भरद्वाजी देवता। त्रिपादनुष्टुप्छन्दः। क्रमिपातने विनियोगः।

कुम्भो च एषां विषधानकः ॥३॥ क्रिमिमिन्द्रस्य बाहुभ्यां अवाञ्चं पातयामसि ॥ हताः क्रिमयः सा-शातिकाः सनीलमक्षिकाः ॥४॥

अपरञ्च 'एषां' क्रिमीणां 'विषधानकः' विषाधारः 'कुम्भः' कलसश्च 'भिन्नकः' भिन्नः मयेति शेषः ॥ ३ ॥

'साशतिकाः' अशातिकया सह वर्त्तमानाः 'सनील-मक्षिकाः' नील-मक्षिकया सह वर्त्तमानाः 'क्रिमयः' सर्व्वे 'हताः'। तत्र नष्टं 'क्रिमिं' क्रमिकुलं 'इन्द्रस्य' 'बाहुभ्यां' 'अवाञ्चम्' अधोमुखं 'पातयामसि' पातयामः ॥ ४ ॥

কর্ত্তৃক বিনষ্ট হইয়াছে এবং ইহাদিগের বিষাধার, কুম্ভ ও আমাকর্ত্তৃক বিনষ্ট হইয়াছে ॥ ৩ ॥

অত্যুচ্চ আশার সহিত বর্ত্তমান, নীলমক্ষিকার সহিত বর্ত্তমান, ক্রিমি-সকল আমাকর্ত্তৃক হত হইয়াছে, সেই হত ক্রিমিকুলকে ইন্দ্রের বাহুরদ্বারা অধোমুখে পাতিত করি-তেছি ॥ ৪ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे सप्तमखण्डः समाप्तः ॥

१—भरद्वाजीदेवता । अनुष्टुप्छन्दः । क्रमिपातने विनियोगः ।
क्रमिपातने विनियोगः ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ अष्टमः खण्डः ॥

*अर्हणा पुत्र वाससा धेनु रभवद्यमे ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरांसमां ॥ १ । इद मह मिमां पद्यां विराज मन्नाद्यायाधितिष्ठामि ॥ २ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञी र्बह्वीः शत-

या इयम् 'अर्हणा' पूजासम्पादिनी 'धेनुः' 'सा' 'यमे' धर्मे अतिथि सत्कारात्मके 'अभवत्', 'सा' च धेनुः 'उत्तराम् उत्तरां' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'नः' अस्माकं गृहे 'पयस्वती' दुग्धवती सती 'दुहा' दुग्धदात्री भवतु ॥ १ ॥

'अहम्' अतिथिः 'इदं' आसनं, 'इमां' 'पद्यां' पाद्यं 'विराजं' शोभितं गृहम् 'अन्नाद्याय' अन्नभक्षणं कर्त्तुम् 'अधितिष्ठामि। आश्रये ॥ २ ॥

যে এই পূজা সম্পাদন শীল ধেনু, ইহা অতিথি সৎকার রূপি ধর্ম্মের নিমিত্ত হইয়াছিল, সেই এই ধেনু উত্তরোত্তর বর্ষে আমাদিগের গৃহে দুগ্ধবতী হইয়া দুগ্ধ প্রদান করুক ॥ ১ ॥

আমি (অতিথি) অন্ন ভক্ষণ করিবার নিমিত্ত এই আসন, এই পাদ্য গ্রহণ করিয়া শোভিত গৃহে অধিকার করিতেছি ॥ ২ ॥

---

१ – अर्हणीय-देवता । अनुष्टुप्छन्दः । धेनु बन्धने विनियोगः

*अथार्चनीयप्रकरणम् । "षडार्घ्यार्हाभवन्ति – आचार्य – ऋत्विक् – स्नातका – राजा – विवाह्य: – प्रियोतिथिरिति,, गो॰ ४,१० ।

२—अर्हणीय-देवता । यजुः । उपविशती जपे विनियोगः

"इमां पद्यां ** इति प्रतिष्ठमानो जपेत्'' गो॰ ४,१० ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचक्षणाः ॥ तामस्यमस्मिन्नासने ऽच्छिद्राः शर्म्म यच्छत ॥ ३ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञीः विष्ठिताः पृथिवीमनु॥ तामस्य मस्मिन् पादयोरच्छिद्राः शर्म्म यच्छत ॥ ४ ॥ यतो देवीः प्रतिपश्याम्याप स्ततामारा-

'याः' 'ओषधीः' ओषध्यः फलपाकान्ता व्रीहयः, 'सोम-राज्ञीः' चन्द्रमा देवताकाः, 'बह्वीः' बह्वयः 'बहुतराः' 'शत-विचक्षणाः' बहु-जीवन-रक्षण-निपुणाः 'अस्मिन्' आसने 'अच्छिद्राः' निरन्तरं स्थिताः—'ताः' 'मह्यं' 'शर्म' कल्याणं 'यच्छत' प्रदानं कुरुत ॥ ३ ॥

'याः' 'ओषधीः' ओषध्यः 'सोमराज्ञीः चन्द्रमा देवताकाः 'पृथिवीम् अनु विष्ठिताः' भूमि मनुलक्ष्य अधिस्थिताः; परार्द्धार्थः पूर्ब्बवत् ॥ ४ ॥

हे 'आपः !' 'यतः' हेतोः युष्मान् 'देवीः' 'प्रति पश्यामि'

বহু জীবন রক্ষণে নিপুণ, এই আসনে নিরন্তর অবস্থিত যে, চন্দ্রদেবতা-জীবন, ওষধি (ধান্যাদি) সকল,—তাহারা আমাকে কল্যাণ প্রদান করুক ॥ ৩ ॥

ভূমিতে অধিষ্ঠিত, যে চন্দ্র-দেবতা জীবন, ওষধিরা, তাহারা আমাকে কল্যাণ প্রদান করুক ॥ ৪ ॥

হে আপঃ ! তোমাদিগকে আমি দেবতা রূপে দেখিতেছি,

अर्थः ओषधीर्देवता । अनुष्टुप् छन्दः । पादयोरवस्तात् विष्टरदाने विनियोगः "या ओषधीरित्युदक्' विष्टरमासीनोऽध्यास्यविशेत् ईर्चेन पृथक्पृथक्भ्यां पादयोः" गो४,१०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वि रागच्छतु ॥ ५ ॥ सव्यं पादमवनेनिजेऽस्मिन् राष्ट्रे श्रियं दधे ॥ ६ ॥ दक्षिणं पादमवनेनिजे ऽस्मिन् राष्ट्रे श्रिय मावेशयामि ॥ ७ ॥ पूर्वमन्य मपरमन्य मुभौ

'यतः' तस्मात् प्रार्थये—यदयं 'धिः' धृतिशीलः यजमानः 'माराात्' विघ्नात् 'आगच्छतु' विघ्नान् विसृज्य एतु ॥ ५ ॥

'सव्यं' वामं 'पादम्' 'अवनेनिजे' प्रक्षालयामि, एतेन 'अस्मिन् राष्ट्रे' एतद्-गृहस्थस्य शासनाधीन-राज्ये गृहे 'श्रिय' शोभां लक्ष्मीं वा 'दधे' स्थापयामि ॥ ६ ॥

अस्यार्थः पूर्ब्बवत् सुगमः ॥ ७ ॥

'पूर्व्वं' प्रथमम् 'अन्य' पादम्, 'अपरं' द्वितीयं 'अन्य' पादम् एवं कृत्वा क्रमात् 'उभौ पादौ' 'अवनेनिजे' प्रक्षालयामि, एतेन किम्फल मित्याह—'राष्ट्रस्य' एतद्गृहस्थ-संसारस्य

অতএব প্রার্থিতেছি যে, এই আমার মেধাবী জমান, বিঘ্নকে অপসৃত করত আগমন করুক ॥ ৫ ॥

বাম পাদ প্রক্ষালন করিতেছি, পাদ প্রক্ষালন প্রভাবেই এই গৃহে লক্ষ্মী স্থাপন করিতেছি ॥ ৬ ॥

দক্ষিণ পাদ প্রক্ষালন করিতেছি, প্রাদ প্রক্ষালন প্রভাবেই এই গৃহে লক্ষ্মী স্থাপন করিতেছি ॥ ৭ ॥

এই সংসার সমৃদ্ধিযুক্ত করিবার নিমিত্ত এবং অভয়ের

५—आपो देवताः । विराट् छन्दः । पादप्रक्षालनार्थोदके विनियोगः ।
"यतोदेवीरित्यपः प्रेचेत" गो ४,१० ।
६ – अर्हणीय श्रीर्देवता । निगदः । वामपादप्रक्षालने विनियोगः ।
"सव्यं पादमवनेनिजे इति सव्यं पादं प्रक्षालयेत् गो ४,१० ।
७ – अर्हणीय श्रीर्देवता । निगदः । दक्षिणपादप्रक्षालने विनियोगः
"दक्षिणं पादमवनेनिजे इति दक्षिणं पादं प्रक्षालयेत्" गो ४,१० ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाद्यौ ववनेनिजे ॥ राष्ट्रभृद्यौ अभयस्यावरुद्ध्यै ॥ ८ ॥ अन्नस्य राष्ट्रिरसि राष्ट्रिस्ते भूयासं ॥ ९ ॥ यशोसि यशो मयि धेहि ॥ १० ॥ यशसा यशोसि ॥ ११ ॥ यशसो

'ऋद्ध्यै' ऋद्धिं समृद्धिं कर्त्तुं, किञ्च 'अभयस्य' 'अवरुद्ध्यै' परिग्रहाय ॥ ८ ॥

हे अर्घ ! त्वम् 'अन्नस्य' अदनीयस्य समस्त-वस्तुनः 'राष्ट्रिः' दीप्तिः 'असि' भवसि, अतस्त्वां प्रार्थये—'ते' तव प्रसादात् 'राष्ट्रिः' राष्ट्रिमान् दीप्तिमान् 'भूयासम्' अहमिति शेषः ॥९॥

हे आचमनीय ! यतस्त्वं 'यशः' यशस्वी शोधक=इति कीर्त्तिमान् 'असि' भवसि, अतः त्वां प्रार्थये—'मयि' मच्छरीरे 'यशः' 'धेहि' आधानं कुरु ॥ १० ॥

मधुपर्क ! त्वं 'यशसः' यशस्विनः 'यशः' यशः-प्रकाशकः 'असि' भवसि ॥ ११ ॥

অবরোধ করিবার নিমিত্ত প্রথমে এক পাদ, পরে অন্য এক পাদ, এইক্রমে পাদদ্বয়ই প্রক্ষালন করিতেছি ॥ ৮ ॥

হে অর্ঘ ! তুমি অদনীয় বস্তুমাত্রের দীপ্তিস্বরূপ হইতেছ অতএব প্রার্থিতেছি—তোমার প্রসাদে আমি দীপ্তিমান্ হই ॥ ৯ ॥

হে আচমনীয় ! তুমি যশস্বীদিগের শোধক, অতএবই যশস্বী হইতেছ, তোমার নিকট প্রার্থিতেছি—আমার শরীরে যশঃ আধান কর ॥ ১০ ॥

८—अर्घणीय-श्रीर्देवता । निगदः । उभयपाद-प्रक्षालने विनियोगः ।
"पूर्व्वमन्यमपरमन्यमित्युभौ" गों ४,१० ।
९—अर्घो देवता । यजुः । अर्घप्रतिग्रहणे विनियोगः ।
"अन्नस्य राष्ट्रिरसीत्यर्घ्यं प्रतिगृह्णीयात्" गों ४,१० ।
१०—आचमनीयं देवता । यजुः । आचमनीय-ग्रहणे विनियोगः ।
"यशोसीत्याचमनीयमाचामेत्" गों ४,१० ।
११—मधुपर्को देवता । यजुः । मधुपर्क-ग्रहणे विनियोगः ।
"यशसो यशोसीति मधुपर्कं प्रतिगृह्णीयात्" गों ४,१० ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भक्षोसि महसो भक्षोसि श्रीभक्षोसि श्रियं मयि धेहि॥ १२ ॥ मुञ्च गां वरुणपाशाद्द्विषन्तमेभि- धेहि॥ तं जह्यमुष्य चोभयोरुत्सृज गामत्तु तृणानि पिबतूदकं॥ १३॥ माता रुद्राणां दुहिता वसूना९

'यशसः' यशस्विनः 'भक्षः' खाद्यः 'असि', 'महसः' तेजस्विनः 'भक्षः' 'असि', 'श्री' श्रीमतः 'भक्षः' 'असि'—'मयि' 'श्रियं' लक्ष्मीं 'धेहि' आधानं कुरु ॥ १२ ॥

हे 'वरुण !' वरुणरूपिन् ! नापित ! 'गां' पाशबद्धां 'पाशात्' 'मुञ्च' 'अमुष्य' यजमानस्य 'मे' मम च 'उभयोः' अनुज्ञातः 'गां' ताम् 'उत्सृज' उत्सर्गं कुरु, किञ्च 'द्विषन्तं' गोघ्नं 'तं' खड्ग हस्तं 'जहि' त्यज, हन्तु मिति यावत्। इदानीमियं 'तृणानि' 'उदकम्' 'अत्तु', च 'पिबतु' ॥ १३ ॥

इयं गौः 'रुद्राणां' एकादश-सङ्ख्याकानां तेषां, 'माता', 'वसूनां'

হে মধুপর্ক ! তুমি যশস্বিদিগেরও যশঃ-প্রকাশক হইতেছ ॥ ১১ ॥

যশস্বিদিগের ভক্ষ্য হইতেছ, তেজস্বিদিগের ভক্ষ্য হইতেছ, শ্রীযুক্ত ব্যক্তিদিগের ভক্ষ্য হইতেছ, আমাকে লক্ষ্মী প্রদান কর ॥ ১২ ॥

হে বরুণ-রূপি-নাপিত ! পাশবদ্ধ গোকে পাশ হইতে মুক্ত কর, এই যজমানের এবং আমার—এই উভয়ের অনুজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া, সেই গোকে ত্যাগ কর; (ছেড়েদাও) আর

१२ – मधुपर्को देवता। यजुः। मधुपर्क-प्राशने विनियोगः।

"यशसो भक्षोसि ,, श्रियंमयि धेहीति त्रिःपिबेत् शेषं चतुर्थम्" गो० ४,१०।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वसादित्याना ममृतस्य नाभिः ॥ प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागा मनागा मदितिं वधिष्ट ॥ १४ ॥

अष्टानां देवानां 'दुहिता', 'आदित्यानां' द्वादशानां 'स्वसा' 'अमृतस्य' दुग्धरूपस्य 'नाभिः' उत्पत्ति-स्थानम् । अतः 'अदितिं' अदीनाम् 'अनागां' निरपराधां 'गाम्' इमां हे यजमान परिचारकाः! यूयं 'मा वधिष्ट' वधं मा कुरुत, अहञ्च तव प्रभीराज्ञात्युगति-दोष-प्रशमनाय 'चिकितुषे' ज्ञानवते 'जनाय' यजमानाय त्वत्-प्रभवे 'प्रनुवोचम्' पूर्व्वमेवोक्तवान्, इदमिति यावत् ॥ १४ ॥

খড়্গহস্ত সেই গো-শত্রুকে হনন করিবার নিমিত্ত, ত্যাগ কর ॥ ১৩ ॥

ইনী (গো) রুদ্র সকলের মাতা হইতেছেন, বসু সকলের দুহিতা হইতেছেন, আদিত্য সকলের ভগিনী হইতেছেন, অমৃতের উৎপত্তি স্থান হইতেছেন, অতএব অখণ্ডনীয় নিরপরাধ এই গোকে, হে যজমান-পরিচারকেরা! তোমরা সকলে, বধ করিও না, আমি জ্ঞানবান্ যজমানকে—অর্থাৎ তোমার প্রভুকে, তোমার প্রভুর আজ্ঞা-অবহেলা রূপ অপরাধ মার্জ্জনা করাইবার নিমিত্ত পূর্ব্বেই বলিয়াছিলাম ॥ ১৪ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे अष्टम-खण्डो द्वितीय-प्रपाठकस्य समाप्तः ॥

१३— गौर्देवता। बृहती छन्दः । गोमोचणे विनि[illegible]
"मुञ्च गां वरुणपाशा द्विषन्तं ##ब्रूयात्" गो० [illegible] १०
१४—गौर्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । गवानुमन्त्रणे [illegible]
"माता रुद्राणामित्यनुमन्त्रयेत" गो० ४,१० ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२७	कादम्बरी—सटीक ...	४
२८	राजप्रशस्ति ...	=
२९	अनुमानचिन्तामणि तथा अनुमानदीधिति	४
३०	सर्वदर्शनसंग्रह ...	१
३१	भामिनीविलास—सटीक ...	१
३२	हितोपदेश—सटीक ...	१
३३	भाषापरिच्छेद मुक्तावलीसहित ...	१
३४	बहुविवाहवाद ...	।
३५	दशकुमारचरित—सटीक ...	१॥
३६	परिभाषेन्दुशेखर ...	॥।
३७	कविकल्पद्रुम (वोपदेवकृत धातुपाठ)	॥
३८	चक्रदत्त (वैद्यक) ...	१॥
३९	उणादिसूत्र—सटीक ...	२
४०	मेदिनी कोष ...	१
४१	पञ्चतन्त्रम् [श्रीविष्णु-शर्म्म-सङ्कलितम्]	२॥
४२	विद्वन्मोदतरङ्गिणी (चम्पूकाव्य) ...	॥
४३	माधवचम्पू ...	।=
४४	तर्कसंग्रह (इंराजी अनुवाद सहित)	॥
४५	प्रसन्नराघवनाटक (श्रीजयदेवकविरचित)	१
४६	विवेकचुड़ामणि [श्रीमत्शङ्कराचार्य्य विरचित]	।=
४७	काव्यसंग्रह [सम्पूर्ण] ...	५
४८	लिङ्गानुशासन (सटीक) ...	।
४९	ऋतुसंहार—सटीक ...	।=
५०	विक्रमोर्वशी—सटीक ...	१॥
५१	वसन्ततिलक भाण ...	॥—
५२	गायत्री [वङ्गाक्षरैः] ...	
५३	सांख्यदर्शन (भाष्यसहित) सांख्यप्रवचनभाष्य	२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५४ भोजप्रबन्ध ... ॥।
५५ नलोदय—सटीक ... ॥=
५६ ईश केन कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्य, (उपनिषद्) [शाङ्करभाष्य तथा आनन्दगिरिकृत टीका सहित] ... ५
५७ छान्दोग्य (उपनिषद्) [शाङ्करभाष्य तथा आनन्दगिरिकृतटीका सहित] ... ५
५८ तैत्तिरीय ऐतरेय (उपनिषद्) [शाङ्करभाष्य तथा आनन्दगिरिकृतटीका सहित] ... २
५९ बृहदारण्यक (उपनिषद्) [भाष्यसहित] १०
६० सुश्रुत ... ६
६१ शार्ङ्गधर [वैद्यक] ... १
६२ वेतालपञ्चविंशति ... ॥।०
६३ पातञ्जलदर्शन [महर्षिवेदव्यासकृतभाष्यसहित] ४
६४ आत्मतत्त्वविवेक [बौद्धाधिकार] ... २
६५ मुक्तिकोपनिषत् ... =
६६ उपमानचिन्तामणि ... ।
६७ नागानन्दनाटक ... १
६८ पूर्णप्रज्ञ दर्शनम् । मध्वस्वामिकृतभाष्य सहितम् २
६९ चन्द्रशेखर चम्पू काव्यम् ... १॥०
७० सामवेदस्य मन्त्रब्राह्मणम् भाष्यसहितम् २
७१ आरण्य संहिता भाष्य सहिता ... १
७२ विद्धशाल भञ्जिका नाटिकासटिका ... १
७३ कारण्डव्यूह [बौद्धशास्त्रम्] ... २

कलिकातासंस्कृतविद्यामन्दिरे—बि,ए,उपाधिधारिणः श्रीजीवानन्द-विद्यासागर-भट्टाचार्य्यस्य सकाशात् लभ्यानि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only